ढहैत देबाल

ISBN: 978-93-5419-392-7

दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण :2020
लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(**Printed in India)**

ढहैत देबाल

A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

ढहैत देबाल

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

समर्पण



हमर सासु पू. स्व. दुर्गा देवी(पंडौल डीह टोल) क
संस्मरणमे
ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

बएस : ६६ वर्ष

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवा निवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवा निवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा) २. 'प्रसंगवश' (निवंध)

३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह)

५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध)

७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)
११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)
१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)
१५.ढहैत देबाल(उपन्यास)

In English:-
1.The Lost House (Collection of short stories)
2.Life is an art(Motivational essays)

हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

आभार

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ सभ प्रशंसाक पात्र छथि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

2.10.2020

ढहैत देबाल

आधुनिक समयमे विद्या निकेतनक नाम के नहि जनैत अछि? जे केओ आधुनिक शिक्षा प्रणालीसँ कहुना जुड़ल अछि से एकर नाम जनिते अछि । तकर कैकटा कारण भए सकैत अछि । मुदा एकटा प्रमुख कारण अछि एहिठामक मुक्त वातावरण । दोसर एहिठामक सुबिधासभ सामान्यतः आनठाम नहि भेटैत अछि । फीसक नामपर दसटाका महिना आ छात्रावास शुल्क नामपर पाँचटाका महिना । ततबे नहि भोजनक मेस खर्चा बीस टाका महिना । कहक माने जे आवास,भोजन आ शिक्षाक हेतु मासिक खर्चा मात्र तीस टाका पड़ैत अछि । ओना एहिठाम पैघ सँ पैघ घरक विद्यार्थीसभ अबैत छथि । हुनकासभकेँ कोनो आर्थिक सहायताक दरकार छनि नहि मुदा ओहो एकर लाभ उठाबएसँ चुकैत नहि छथि। जखन सुबिधा छैक तँ छोड़ल किएक जेतैक । कपड़ा-लत्ता,लंफ-लंफापर चाहे ओ जतेक खर्च करथि मुदा विद्या निकेतनक फीस देबा काल बहुत गरीब भए जाइत छथि । एहन बात नहि छैक जे सरकार एहिमे सुधार करबाक प्रयास नहि केलक जाहिसँ जरुरतमंद धरि ई सुबिधा सीमित रहैक । मुदा एहन कोनो प्रयासकेँ एहिठामक छात्रनेतासभ जी-जानसँ विरोध करैत रहलाह आ ताहिमे सफल सेहो रहलाह । सरकारो की करए? देशमे प्रजातंत्र

छैक । जनताकेँ अप्रसन्न नहि कएल जा सकैत अछि । विद्या निकेतनक इएह गुणसभक कारण एहिठाम नामांकनक हेतु सभ जान लगओने रहैत अछि । एकबेर नाम लिखा गेल तँ बूझि लिअ जे गंगा नहा लेलहुँ ।

बात ओतबे रहितैक तखन साइत विद्यार्थीसभ ओतेक उत्साहित नहि रहैत । मुदा असली आकर्षणक कारण थिक एहिठामक जीवनमे उनमुक्तता -से कोन तरहक? जाहि लेल युवा मोन व्याकुल रहैत अछि ,दिन-राति जाहि सुखक हेतु सपनाइत रहैत अछि । से एतए स्वतः प्रचूर मात्रामे सुलभ रहैत छैक । बरिसातक महिनामे बाढ़ि तँ अएबे करैत छैक,आ जँ बान्ह नहि रहतैक,तँ चारूकात दहो-बहो हेबे करतैक। सएह हाल एतुका परिसरक रहैत छैक । सभ अन्हराएल रहैत आछि,बेहोश लोक-के ककरा सम्हारत?तेँ विद्यार्थी सभकेँ आठो आंगुर घीएमे रहैत अछि । कतेकोगोटे तँ एकबेर एतए अएलाक बाद जेबाक नामे नहि लैत छथि । कोनो-ने-कोनो विषयमे नाम लिखा लेने रहैत छथि । ओही बहानासँ छात्रावासमे जगह भेटि जाइत छनि । मुफ्त यात्रा करबाक हेतु बसक पास भेटि जाइत छनि । आओर की-की ने भेटि जाइत छनि। डिग्री लेबाक ने ककरो अगुताइ रहैत छैक ,ने जरुरति । कथी लेल अपने पैरमे कुरहरि मारत? कहुना विद्या निकेतनसँ सटल रहबाक फिराकमे किछुगोटे छात्रनेता सेहो भए जाइत छथि । जे जतेक असामान्य वेष-भूषामे रहैत छथि तिनकर ततेक मांग बढ़ि जाइत अछि । अहाँ कहि सकैत छी जे ई विद्या निकेतन थिक की

किछु आओर? से अहाँक मर्जी अछि । जे कहबाक होअए से कहि लिअ,जे बजबाक होअए से बाजि लिअ मुदा हुनका लोकनिक मोनपर कोनो फर्क नहि पड़ए जा रहल अछि । ओसभ अपन दुनिआमे मदमस्त रहैत छथि। जकरा जे कहबाक होउ से कहओ,जे बजबाक होउक से बाजओ ।

यामिनी,अपूर्वा,दिव्या एकहि संगे विद्या निकेतनमे पीएचडीक डिग्री हेतु नामांकन लेने रहथि । हम,अरुण,अंबुज सेहो ओही साल ओही डिग्रीक हेतु नामांकन लेने रही । एहिसँ पहिने ककरो कोनो आपसी परिचय नहि रहैक । देशक विभिन्न भागसँ विद्यार्थीसभ ओहिठाम उच्च शिक्षा हेतु आएल रहए। क्रमशः आपसमे परिचय भेलैक। परिचय दोस्तीमे बदलैत गेल । एक तँ सभ जबान छल ,ताहूपरसँ विद्या निकेतनक उनमुक्त वातावरण । विद्यार्थीसभक ध्यान पढ़ाइसँ बेसी आन-आन काजमे लागि रहल छलैक ।यामिनी देखएमे पिंडश्याम रहए मुदा बहुत आकर्षक ।जे देखैत से देखैते रहि जाइत ।अपूर्वा आ दिव्या तँ लगैक जेना जौआँ बहिन होअए । जँ दुनू एकहि रंगक परिधाममे सजि जाए तँ ओकरासभकेँ चिन्हब ककरो लेल मोसकिल भए जाइक । आओरो-आओरो विद्यार्थीसभ अपन-अपन दुनिआमे रमल रहैत छल । ओहिठाम कार्यरत प्राध्यापक लोकनि स्वयं ओही दुनिआसँ गुजरि चुकल छलाह । केओ-केओ तँ अखनहुँ ओकर अवशेषकेँ सम्हारएमे व्यस्त छलाह ।तँ के-ककरा पुछैत आ किएक पुछैत?

एहि तरहे विद्या निकेतन परिसरमे आनंदक वातावरण रहैत छल । मुदा जखन बेसी मीठ खेबैक तँ ओहो बेस्वाद लागए लगैत अछि । तखन लोककेँ होइत छैक जे कनीक अँचार खा ली , किछु नुनगर खा ली । कहबाक मतलब जे लोक परिवर्तनक चेष्टामे लागि जाइत अछि । सएह कखनो झंझटक कारणो होइत छैक। कैकबेर ओ झंझटसभ जनमारा भए जाइत छैक । कैकबेर सुखद परिणाम सेहो होइत अछि । सएहसभ ओहि विद्या निकेतनमे होइत रहलैक। पढ़ाइ लिखाइ तँ होइक तेरहे बाइस मुदा विद्यार्थीसभ तकर परबाहो नहि करए । एहिसाल नहि तँ अगिला साल पढ़ाइ कोनो भागल जा रहल छैक ? मुदा ई समय थोड़े लौटतैक?

विद्या निकेतनमे विद्यार्थी लोकनि व्यक्तिगत स्वतंत्रताक नामपर जे मोन होइत छनि से करैत छथि। कैकबेर हुनकासभकेँ अपनेमे अंतरविरोध भए जाइत छनि । जखन एकहि वस्तुपर कैकटा दाबेदार भए जाएत तँ की हेतैक? कलह हेतैक । लोक आपसमे लड़त आ जे जीतत से राज करत । मुदा से जे होइ ,सभकेँ ईएह नीक लगैत छैक । जँ विद्या निकेतन प्रशासन कनिको हस्तक्षेप केलथि वा ककरो रोक-टोक केलखनि तँ गेल घर छथि । कैकटा छात्र नेता हाथमे खुखरी लेने हुनका सामनेमे ठाढ़ भए जेताह । आब ओ की करत? अपन जान बँचाओत की सुधारक प्रयास करत ।

2

“हमसभ कोनो नवालिग छी जे अहाँसभ सभबातमे पंचैती करए आबि जाइत छी? अहूँ तँ जबान रही ,तखन केहन रही? से बिसरा गेल । सएह होइते छैक ।” -हम ई बात कहने रहिऐक विद्या निकेतनक कुलपति चिन्मयकेँ । ओ बकर-बकर हमर मुँह तकैत रहि गेलाह। चारूकातसँ विद्यार्थीसभ हुनका घेरि लेने रहनि । ओ तमसा कए पुलिसकेँ फोन कए देने रहैक । संयोग एहन रहैक जे ओहि दिन हुनकर कन्या सेहो ओतहि रहैक । तकरा सामनेमे एतेक बैज्जति होएब हुनका बर्दास्तसँ बाहर भए गेल रहनि। मुदा विद्यार्थीसभ द्वारिएपर पुलिसकेँ रोकि देलकैक । कुलपतिजी फोनपर फोन करैत रहलाह । एकटा चुट्टी हुनका मदति करए नहि अएलैक। आखिर ओ कर्सीपर बैसले-बैसल बेहोश भए गेल रहथि। हुनकर बेटी विद्यार्थीसभकेँ बहुत कहलकैक । आखिर हमरा दया आबि गेल आ हम विद्यार्थीक हुजुमकेँ वापस लेने चलि गेल रही। जाइत-जाइत सभ विद्यार्थी जोर-सोरसँ नारा लगा रहल छल-

“इनकिलाब, जिंदाबाद!”

“विद्यार्थी एकता जिंदाबाद!”

विद्यार्थीसभ अपन-अपन छात्रावास चलि गेल रहए । हमरा पाछा-पाछा किछु छात्रासभ बहुत दूर धरि पहुँचि गेल रहए । ओकरासभमे जेना उपरौंज भए गेल रहैक । हम किएक ककरो मना करितिऐक? जखन बहुत दूर धरि एहिना चलैत रहि गेलहुँ तँ

एकाएक चारि-पाँचटा पुलिस घेरि लेलक । छौंड़ीसभ भागलि । बस एकटा अड़ि गेलि । ओ के छलि?

ओ छलि यामिनी । कतोबो इसारा केलिऐक ओ नहि मानलक , अड़ि गेलि ।

"हम अहाँकेँ असगर नहि छोड़ि सकैत छी ।"

कनीकालक बाद पुलिसभैनमे हमरा आ यामिनीकेँ बैसा कए पुलिस लेने चलि गेल । हमसभ जखन विद्या निकेतनक द्वारिसँ बाहर निकलैत रही तखन बहुत रास विद्यार्थीकेँ हमरासभक पछोड़ करैत देखने रहिऐक । ताबे तँ पुलिसभैन बहुत आगु चलि गेल छल । अंबुज,दिव्या,आ किछु आओर विद्यार्थीसभ विद्या निकेतनक द्वारिपर जमा भेल रहए । देखिते-देखिते ई बात चारूकात पसरि गेल । विद्यार्थीसभ तरह-तरहक नारा लगबैत कुलपतिजीक निवासपर पहुँचि गेल रहए । ताबे हुनका हवा लागि गेल रहनि । ओ पाछाबाटे कतहु चंपत भए गेलथि ।

कुलपति चिन्मयक बेटी अपूर्वा सेहो ओही संस्थानसँ शोध कए रहल छलैक । ओ जखन विद्यार्थीक समूहमे रहैत तखन विद्यार्थीक समर्थनमे बजैत । मुदा जखन ओकर पिताकेँ धेराव होइतैक,वा कोनो तरहक परेसानी होइतैक तँ ओ हुनकर समर्थनमे चलि जाइत । स्वभाविके छलैक । पुत्री पिताकेँ नहि समर्थन करत तँ करत ककरा? अपना भरि ओ विद्यार्थीसभकेँ बुझेबाक प्रयास करैत । कहैत जे कुलपतिजी तँ विद्यार्थीक समर्थक छथि मुदा

आओर लोकसभ हुनकर नहि चलए दैत छनि । मुदा ओकर ई तर्क ककरो पचैक नहि ।

“जखन कुलपति किछु कए नहि सकैत छथि तखन ओ कुर्सी छोड़ि किएक नहि दैत छथि ।”

ई परिस्थिति अपूर्वाक हेतु बहुत विकट रूप धेने जा रहल छल । घर जाए तँ पिताक बात सुनए आ बाहर आबए तँ संगीसभ कोनो बात कहबासँ पाछु नहि रहैक । कैकबेर ओकरा मोन होइक जे कुलपति निवाससँ फराके डेरा लए कए निश्चिंत भए पढ़ाइ करए। मुदा पिताक हालत देखि सेहो नहि कएल होइक।

ओहि दिन जखन पुलिस परिसरमे पैसि कए हमरा आ किछु आओर विद्यार्थीकेँ लेने चलि गेल तँ विद्यार्थीसभ हंगामा कए देलक। पहिने तँ ओ सभ कुलपतिजीक कार्यालय गेल । मुदा ओ ओतए नहि भेटलखिन । विद्यार्थीसभ जखन बहुत हल्ला केलक तँ अपूर्वा निकललि । ओकरा देखितहि विद्यार्थीसभ आओर जोर-सोरसँ नारा लगबए लगलैक। हंगामा बढ़ैत देखि अपूर्वा आगु बढ़लि। ओकरा एसगर आगु बढ़ैत देखि अंबुजकेँ दिव्या इसारा केलकैक। ओ दिव्याक इसारा बूझि दू-तीनटा विद्यार्थीक संगे अपूर्वाक लगपासमे ठाढ़ भए गेल । पाछुसँ दिव्या सेहो आबि गेलैक। ओ सभ विद्यार्थीक हुजुमकेँ शांत करबाक बहुत प्रयास केलक । बात बढ़िते देखि अपूर्वा बीचमे कुदि गेलैक आ भाषण शुरु कए देलक-

“भाइ लोकनि!

हम बेसक कुलपतिक बेटी छी मुदा तकर माने नहि जे हम अहाँक विरोधी छी । हम ई बात नीकसँ जनैत छी जे कुलपतिजी स्वयं अहाँसभक समर्थक छथि ।”

“अहाँ गलत बाजि रहल छी । जौँ ओ हमरसभक समर्थक छथि तँ ई सभ किएक भए रहल अछि? किएक ने ओ परिसरमे पूर्वस्थिति बहाल करैत छथि । ई विद्या निकेतन कोनो आइ नहि बनल अछि । कतेक कुलपति आएल आ गेल । मुदा विद्यार्थीक स्वतंत्रतापर केओ हाथ नहि उठओलक । ई पहिल बेर भए रहल अछि जे विद्यार्थीकेँ छात्रावासोमे प्रतिबंधक सामना करए पड़ि रहल छैक । एनामे हमरसभक जान वाँचत? आ जँ बाँचिए गेल तँ ओ जीवन कोनो जीवन होएत?”

“सत्य वचन”-एकस्वरसँ विद्यार्थीसभ ओकर बातकेँ समर्थन केलक ।

“हमहु अहाँसभक समर्थक छी ।”

“से कोना बुझू?”

“जेना अहाँसभकेँ विश्वास होअए सएह करी ।”

“जँ अहाँ हमरा लोकनिक सही मानेमे समर्थक छी तँ छात्रावासमे हमरासभक संगे किएक नहि रहैत छी? जखन अहाँ संगे रहबैक तखन ने पता लागत जे ओहिठामक की हाल छैक ।”

“हम आइए छात्रावास चलि अबैत छी ।”

विद्यार्थीसभ अपूर्वाक बातसँ बहुत प्रसन्न भेलाह । कुलपतिक कार्यालयक घेराव समाप्त कए देल गेल । सभ अपन-अपन छात्रावास दिस बिदा भए गेल ।

एतबहिमे किछु छात्रनेता आगु भेलाह ।

“से सभ तँ ठीक मुदा पुलिस जे केलक तकर की हेतैक? श्याम,यामिनी आ किछु आओर गोटे अखनहुँ थानामे बंद छथि , तकर की हेतैक?”

“अहाँसभ एकर चिंता छोड़ि दिअ । हम एकरा सलटा देबेक ।”

अपूर्वाक बात पर विश्वास कए सभ अपन-अपन कोठरीमे वापस चलि जाइत रहल । अपूर्वा बातकेँ पक्का निकललि। ओ ओहिठामसँ वापस अपन घर नहि गेलि । ककरो मार्फतसँ अपनसभटा किताब आ आवश्यक सामानसभ मंगा छात्रावास पहुँचि गेलि । ततबे नहि तुरंत थाना पहुँचि थानेदारकेँ हमरासभकेँ मुक्त करबाक आग्रह केलखिन ।

“मुदा अहाँ छी के? हम अहाँक कहलापर कारबाइ किएक करू?”

ताबतेमे कुलपतिजीक फोन आएल-

“आब परिसरमे शांति बहाल भए गेल अछि । तेँ सभ विद्यार्थीकेँ छोड़ि देल जानि ।”

“बढ़िआ बात । हम हिनकासभकेँ वापस कए दैत छिअनि ।”

थोड़बे कालक बाद हमसभ परिसर लौटि गेलहुँ ।

हमरा लोकनिकेँ परिसरमे देखिते विद्यार्थीसभ प्रसन्नतामे नाचए लगलाह । केओ ढोल बजा रहल छल तँ केओ थपड़ी बजा कए अपन प्रसन्नताक अभिव्यक्ति कए रहल छल । चारूकात एकहि आबाज आबि रहल छल-

"इनकिलाब, जिंदाबाद!"

विद्यार्थीसभ जतेक मोन भेलैक नाचल,जतेक मोन भेलैक बाजल। जे-जे मोन भेलैक से-से बाजल । अपूर्वा सभ देखैत रहल,सुनैत रहल,ततबे नहि रहि-रहि कए ओहो नारा लगबैत रहलि। सभ मिलिकए रातिमे विशेष संगीत समारोह मनेबाक निर्णय केलक । किछु काल एहि तरहेँ आनंद मनेलाक बाद सभ अपन-अपन छात्रावास वापस चलि गेल ।

3

साँझ होइते विद्या निकेतनक ज्योति भवनमे विद्यार्थी लोकनिक आगमन शुरु भए गेल । विद्या निकेतन परिसरक बीचमे बनल ज्योति भवनमे कला,साहित्य,संगीत आदिसँ जुड़ल कार्यक्रम होइत रहैत छल । समय-समयपर विद्यार्थी लोकनि अपन जुटान सेहो करैत छलाह । कहक लेल रातिमे एगारह बजेक बाद ओ भवन बंद भए जाइत छल । मुदा असलियतमे राति भरि ओतए लोकक आवागमन रहिते छल । बाहरसँ बिजली बंद कए देल जाइत छल

आ भीतरमे ओहिना सभकिछु चलैत रहैत छल । विद्यार्थीक गप्प छोड़ू, शिक्षक लोकनि सेहो ओहि आनंदोत्सवसँ अपनाकेँ फराक नहि राखि पाबथि आ कुनु-ने-कुनु बहाना बनाकए आबि जइतथि। जखन केओ एकबेर आबि जाइत तँ ओहिठामसँ उठि जाएब ओकर बसमे नहि रहि जाइत छल । कैकबेर तँ उत्तेजना आ उत्साहमे सभगोटे एकहिबेर चिचिआ उठैत छल । हल्ला ततेक जोरगर होइत जे बाहर अपन-अपन घरमे सुति रहल लोकसभक निन्न टुटि जाइत। मुदा केओ किछु नहि कए सकैत छल । बिलारिक गलामे घंटी के बान्हए? कैकगोटे तँ चुपचाप भवनक पछिलका द्वारिसँ घुसिआ जइतथि ।

“जखन निन्न टुटिए गेल तँ किछु आनंद मना लेल जाए ।"

“आखिर ओतए होइ की जे लोक एना आकर्षित भए जाइत छल । ओतए जेबाक हेतु लालायित रहैत छल। "

“बढ़िआ होइत जे से नहि पुछितहुँ । संक्षेपमे कही तँ ओतए सभकिछु होइत छलैक जाहि लेल लोक उत्सुक रहैत अछि । अवरोध नामक तँ ओतए किछु रहबे नहि करैक । दुपहर रातिमे भवनक प्रकाश रहि-रहि कए लुप्त भए जाइत छलैक । कहल जाइक जे बिजली चलि गेलैक अछि । बिजली चलि नहि जाइत छलैक ,ओकरा बिदा कए देल जाइक ।”

रातुक कार्यक्रमक तैयारीमे छात्रासभ बेसी जोर-सोरसँ लागि गेलि । लगपासक कालेजसभमेसँ अपन पुरुष मित्रसभकेँ ओहि कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु नोत देलखिन । ओसभ एकदम

सजल-धजल समयसँ पहिने द्वारिपर पहुँचि गेल रहए । द्वारिपर ठाढ़ पहरुआ कात कए देल गेल छल । ओकरा स्थानपर छात्रसभ स्वयं पहरा कए रहल छलाह । ओकरासभ लगमे आगन्तुकसभक नाम रहैक । नामक मिलान होइतहि हुनका लोकनिकेँ मंचधरि पहुँचा देल जाइत छलनि । कैकबेर तँ छात्रासभ स्वयं आगु आबि कए अपन दोस्तकेँ लए जाइत छलि । छात्रसभ कोना पाछा रहितथि? ओहोसभ बाहर रहैत अपन-अपन महिलामित्रसभकेँ हकार देने रहथि । संपूर्ण परिसर नवकनिआ जकाँ सजल-धजल छल । परिसरक माहौल लगैक जेना आइ किछु भइए कए रहत ।

थोड़बे कालमे ज्योति भवन खचाखच भरि गेल । मंचपर प्रकाश एवम् ध्वनिक अभूतपूर्व संयोजनसँ माहौलमे चतुर्दिक उत्तेजना पसरि रहल छल । कार्यक्रमक प्रारंभ केलनि अपूर्वा-

चंदा उगि जनु आजुक राते........। अपूर्वाक मुँहसे एहि गीतक एक शब्द खसल छल कि समस्त ज्योति भवन' “बाह! बाह!” करए लागल । आगु बैसल विद्यार्थीसभकेँ जोशसँ नहि रहल गेलैक । ओ सभ मंचपर पहुँचि गीतक संगे अभिनयक मुद्रा करए लागल । के ककरा सम्हारत? चारूकात बेहोश लोकक करमान लागि गेल छल । एतबहिमे भवनक प्रकाश मिझा गेल । मुदा कार्यक्रमक सक्रियता थम्हल नहि,अपितु बढ़िए गेल । चिन्मयक कोठरीमे एहि कार्यक्रमक खुपिआ प्रसारणक व्योंत छल । विद्यार्थीसभ अपूर्वाक नृत्यकलासँ पहिलबेर देखि रहल छल से बात नहि रहैक । ओ पहिनो सांस्कृतिक कार्यक्रमसभमे भाग लैत रहैत छलि । मुदा

विद्यार्थीक प्रायोजित कार्यक्रममे ओ पहिल बेर सामिल भए रहल । एक हिसाबे विद्यार्थीसभक ई विजय छलैक । छात्रसभ बेर-बेर हमर जयगान कए रहल छलाह ।

चिन्मय सीसीटीभीकेँ बंद केलाह। भरिछाक दारू चढ़ा ओछाओनपर ओंघरा गेलाह। आओर ओ कइए की सकैत छलाह?अपूर्वा हुनकर एकमात्र संतान रहथि। अपना भरि ओ अपूर्वाकेँ पूर्ण स्वतंत्रता देने रहथि। उत्तमसँ -उत्तम शिक्षाक ओरिआन केने रहथि। मुदा ओ ई कहिओ नहि सोचि सकल रहथि जे अपूर्वा ओही परिसरमे ओही विद्यार्थीसभक संगे नाच-गान करत जे सभ काल्हिए हुनकाकी-की ने कहने छल। खैर! जखन ओ किछु नहि कए सकलाह तँ उपाय की रहैक?

ओमहर रातिभरि विद्यार्थीसभक नाच-गान चलैत रहलैक। आश्चर्यक बात ई रहैक जे एहिबेर केओ मना करए नहि अएलैक,केओ नहि कहलकैक जे बारह बजेक बाद कार्यक्रम बंद भए जेबाक छलैक । के कहितैक? सभक जड़ि तँ छलाह-कुलपति चिन्मय । आ जखन ओ अपने पिबि कए चितंग छल तँ अनका ककरो कुकूर थोड़े कटने रहैक जे अनेरे झंझटमे पड़ितए । रातिभरि गीत-नाद चलैत रहल । विद्यार्थीसभ कनस्तरक- कनस्तर नाना प्रकारक पेयसभक पान करैत रहलाह । जखन भोरुकबा उगि गेलैक तँ हम चुपचाप बिदा भेलहुँ । यामिनी हमर पाछा धए लेलक। कनीक फटकी अंबुजक संगे दिव्या जा रहल छलि । एहिना कैकटा जोड़ासभ निकलि गेलैक । क्रमशः भवन खाली भए गेल । एहिबेर जे प्रकाश मिझाएल से फेर नहि जड़ल । भोर भेने सफाइ कर्मचारीसभ पूरा हालकेँ साफ केलक । तकर ओरिआन विद्यार्थीसभ पहिनेसँ केने छल । भवनमे चारूकात कहि ने की-की पसरल छल । लगैत छल जेना महायुद्धक बाद सैनिकसभक पिस्तौलसँ बहराएल गोलीसभक अनगिनित खोखा भवनमे भरि गेल अछि। जे-से । केओ जागत ताहिसँ पहिने ज्योतिभवन केँ नीकसँ साफ कए देल गेलैक । लग-पासक रस्तासभकेँ फेरसँ चिकन चुनमुन बना देल गेलैक । थोड़बे कालमे लगैक जेना रातिमे

ओतए किछु नहि भेलैक । जे केओ देखलक से सभटा सपने रहल होएतैक । ओहुना कोनो चिंताक बात नहि रहैक । कैकटा आचार्य लोकनि सेहो ओहि महोत्सवक सहभागी छलाह । तखन चिंता कथीक? रहल कुलपति चिन्मयक,से अपन बेबसी नीकसँ बूझि गेल रहथि । प्रातभेने ओ ओछाओन छोड़िए नहि पाबि रहल छलाह। बहुत समय बिति गेलैक । हुनकर भनसिआकेँ नहि रहल गेलैक । ओ केबार ठकठकओलक । चिन्मयक निन्न टुटि गेलनि । मुदा अखनो हुनका पर रतुका असर छलनिहे ।

छात्रावासमे हमर आ अंबुजक कोठरी सटले छल । ओही छात्रावासक दछिनबरिआ कोनपर यामिनीक कोठरी छलैक आ उतरबरिआ कोनपर दिव्याक कोठरी रहैक ।

कार्यक्रम समाप्तिक बाद रातिभरि के कतए रहलि तकर हिसाब के करैत? सभ तँ अपनेमे रमल छल । मुदा भोरुकबामे जखन हमर निन्न टुटल तँ अपूर्वा सेहो ओतहि छलि । रच्छ भेल जे ताबे यामिनी सुतले रहए । मुदा अपूर्वा? ओ तँ जेना मौकाक प्रतीक्षामे छलि । हमरा जागल देखिते ओ चमकि उठलि । खैर!जेना-तेना भोर भेल । हम अपूर्वाकेँ इसारा केलिऐक । ओ चुपचाप ओतएसँ खसकि गेलि । पछिलका पाँतिमे सभसँ आगु ओकर कोठरी छलैक । मुदा ओ ओहिमे साइते रहैत । सामान्यतः ओ अपन पिताक सरकारी आवासेपर हुनके संगे रहैत छलि । मुदा आब ओ सपथ खा लेने छलि । किछु भए जाएत ,हुनका संगे नहि रहत।

चिन्मय कोलकातासँ पड़ल-लिखल छलाह । आधुनिकताक पोषक रहितहुँ उच्छृंखलताक विरोधी छलाह , विद्वान तँ छलाहे । तेँ हुनका कुलपति बनाओल गेल रहए । सभकेँ उमीद रहैक जे आब परिसर सुधरि जेतैक । प्रगतिशीलताक नामपर भए रहल कदाचार बंद होएत । विद्या निकेतन सही मानमे विद्यार्जनक केन्द्र बनि सकत। मुदा से सभ किछु नहि भेल । अपितु,चिन्मयक अएलाक बाद तँ हालत आओर गड़बड़ा गेल । लगबै नहि करैक जे ओतए केओ कुलपति अछि । हुनकर शासन ओही कोठरी धरि सीमित भए गेल छल जाहिमे ओ बैसैत छलाह । दिनभरि बैसक पर बैसक होइत रहैत मुदा परिणाम ढाकक तीन पात । अध्यापक लोकनि कक्षसँ निकलितहि हुनकर निंदामे लागि जइतथि । एहिसभकेँ तँ ओ बरदास कए रहल छलाह । मुदा जखन हुनकर अपन बेटिओ विद्रोह कए देलक तँ नहि रहल गेलनि । रातिभरि तँ कहुना दारूक निशामे कटि गेल । मुदा प्रातःकाल ओछाओन छोड़ितहि लगलैक जेना चिन्मयपर भूतक छाया पड़ल छल । आइ चिन्मय कुलपति नहि,अपितु कोनो पिशाँचक रूप धए लेने छलाह। अध्यापक लोकनि किछु बुझेबे नहि करथि । जकरे-तकरे फज्जति कए रहल छी,टेबुलपर राखल संचिकासभकेँ फेकि रहल छी,चपरासीसभकेँ तँ कोनो गतिए नहि रहए देने रहथि ।

हारिकए कैकटा प्रोफेसरसभ मिलिकए हुनकर कोठरीमे पहुँचलाह। केओ किछु कहितए ताहिसँ पहिने चिन्मय बड़बड़ाए लगलाह । विद्यार्थीसभ सेहो हुनकर कार्यालयक चारूकात जमा होबए लागल। काने-कान ई बात सौंसे परिसरमे पसरि गेल । मुदा अपूर्वाकेँ किछु पता नहि चललैक । ओ अपन कोठरी जेना-तेना पहुँचि केबार सटा कए सुति गेल रहए ।

कुलपति चिन्मय अपन लगपासमे एतेक लोककेँ जमा देखि गुम्म पड़ि गेलाह । जेना हुनकर माथा एकाएक बर्फमे धसि गेलनि। प्रोफेसरसभ हुनका ठंढाइत देखि किछु कहबाक प्रयास केलथि। मुदा ताबतेमे चिन्मय एकटा कागज निकाललथि आ धराक दए अपन इस्तिफा लिखि निवंधक हाथमे पकड़ा देलथि। निवंधक ओहि कागजकेँ पढ़िए रहल छलाह कि चिन्मय घोषणा केलथि-

“हम कुलपतिक पदसँ इस्तिफा दए देलहुँ अछि । आब हमरा एहिठामसँ बाहर जेबाक आज्ञा देल जाए ।”

केओ किछु नहि बाजल । चिन्मय पैरे हाथमे झोरा लेने अपन आवास चलि गेलाह । ओहिठाम किछुकाल अपूर्वाक प्रतीक्षा केलथि । कैकगोटेसँ ओकर हाल-चाल जानबाक प्रयास केलथि । मुदा केओ किछु नहि कहि सकलनि । आखिर,स्वयं अपूर्वाक छात्रावासक कोठरी पहुँचि गेलाह । अपूर्वाक कोठरीक केबार बंद नहि छल,ओहिना सटा देल गेल छल । कनीके प्रयाससँ ओ खुजि गेल। चिन्मय अपूर्वाकेँ ओछाओनपर निभेर सुतल देखि ओकरा उठाबक प्रयास केलथि । मुदा ओकरापर कोनो असर नहि भए

रहल छल । हारि कए ओ चोट्टे वापस अपन डेरापर आबि गेलाह । ओ एकटा झोरामे जरूरी समानसभ रखलनि आ परिसरसँ बाहर चलि गेलाह ।

6

चिन्मय इमान्दार,मेहनती आ सख्त व्यक्ति छलाह । विद्या निकेतनक कुलपति बनबासँ पहिने ओ ओहीठाम प्रध्यापक रहथि। जाधरि ओ से रहलाह हुनकर यश चारूकात पसरि गेल रहए। अपन दरमाहाक अधिकांश हिस्सा ओ गरीब बिद्यार्थी लोकनिक कल्याण हेतु खर्च करैत छलाह । हम जखन शुरुमे नाम लेखओने रही तँ ओएह हमरा मदति केने रहथि । गामसँ फटकी विद्या निकेतनमे नाम लिखेबाक जोगार हमरा लग नहि छल। केओ कहलक जे तूँ चिन्मय लग चलि जाह । ओ सभटा जोगार कए देथुन । बात एकदम सही निकलल । हम एकदिन भोरे हुनकर डेरापर पहुँचलहुँ। हम सोचने रही जे आइ हम सभसँ पहुँचएबला विद्यार्थी रहब आ चैनसँ हुनका सभटा बात कहबनि जाहिसँ हमर समस्याक निदान ओ करथि । मुदा जखन हम हुनका ओहिठाम पहुँचलहुँ ताबे तँ ओहिठाम विद्यार्थीसभक पाँति लागि गेल छल । ओतए जइतहि सभ विद्यार्थीकेँ एकटा टोकन नंबर देल जाइक । तकरबाद क्रमानुसार सभविद्यार्थीकेँ बजाओल जाइत । चिन्मय एक-एकटा

विद्यार्थीसँ परिवारक सदस्य जकाँ भेंट करितथि आ जकरा जे संभव होइक मदति करितथि । जौँ अपना पार नहि लागनि तँ आनो-आनो प्राध्यापकसभ लग ओ सिफारसी चिट्ठी लिखबामे संकोच नहि करथि । कैकबेर तँ ओ विद्यार्थीकेँ लेने-देने कुलपति लग पहुँचि जइतथि आ ओकर समस्याक समाधान करबा दितथि । हुनकर एही सहयोगात्मक रुखिक कारण हुनका कुलपति बनाओल गेल छल। विद्यार्थीसभकेँ बहुत प्रसन्नता भेल रहैक । छात्रनेतासभ हुनकर प्रशंसामे दिन-राति एक कए देने रहए । मुदा जखन किछु समय बीतल आ चिन्मय संपूर्णशक्तिसँ विद्या निकेतनक सुधारमे लागि गलाह तँ स्वार्थी तत्वक कान ठाढ़ भेलैक। ओ सभ सपनहुमे नहि सोचने छल जे सदति हँसएबला व्यक्ति कुलपति बनिते एहन रुक्ख व्यवहार करए लागत । छात्रनेतासभ हुनकर विरोध करए लागल आ ओकरे अंतिम परिणति भेल हुनकर इस्तीफासँ ।

चिन्मयक व्यक्तिगत जीवन सेहो उठापटकसँ भरल रहनि। हुनकर पत्नी रागिनी सेहो ओहीठाम प्रध्यापक रहथि। एकदिन भोरे ओ निपत्ता भए गेलि । सौंसे हल्ला भए गेल जे चिन्मयक पत्नी कतहु चलि गेलथि। केओ किछु केओ किछु बाजए । जतेक लोक ततेक तरक गप्प । रागिनी देखबा-सुनबामे बहुत पवित्र रहथि। व्यवहार मे सेहो ओहिना मधुर । हुनका देखलाक बाद एकबेर ककरो सोचए पड़ैत छलैक । मुदा चिन्मयकेँ एहिबात सभसँ कोनो मतलब नहि रहनि । ओ दिन-राति विद्यार्थीसभमे लागल रहैत छलाह । रागिनी कैकबेर कहबो करथि-

"कनीकालक हमरोपर समय देल करू । हम कोनो पाथर नहि छी । पाथरोक महादेवकेँ जल चढ़बए पड़ैत छैक ।"

मुदा चिन्मय रागिनीक इसारा नहि बुझलथि । बुझबो कोना करितथि? ने हुनकामे ओ रागात्मकता छल ने ओ रुचि । तखन होइत की ? जहिना नदीक प्रवाह नहि रोकल जा सकैत अछि तहिना एहि बएसक उमंग कखनो ने कखनो अन्हर अनिते अछि । रागिनीक विभागेमे कार्यरत प्रध्यापक दीपांकक संगे भागि गेलि। चिन्मय किछु नहि कए सकलाह । किछु दिनक बाद हुनका केओ कहलकनि जे रागिनी बनारसमे दीपांकक संगे रहैत अछि। ओतहि नव काज सेहो पकड़ि लेने अछि । तकर बाद ओ ओतए गेबो केलाह। संयोगसँ रागिनी भेटिओ गेलखिन । तखन दीपांक काजसँ बाहर गेल रहए। रागिनी ओसारापर बैसल अखबार पढ़ि रहल छलि। ओकर डेरा बसस्टैंडक सामने छल । चिन्मय बससँ उतरितहि रागिनीकेँ देखलखिन ।

रागिनी आश्वस्त आ निश्चिंत लगैत रहथि । हुनका एहन निश्चिंत देखि चिन्मयकेँ एकमोन भेलनि जे चोट्टे घुरि जाइ । फेर सोचलथि-

"जखन एतेक दूर आबिए गेल छी तँ एकबेर गप्प कए लेनाइए ठीक रहत । की पता रागिनीक मोन बदलि जानि ।"

"रागिनी! रागिनी! " ओ आबाज देलथि । रागिनी पाछा घुमलि। हिनका देखबो केलकनि मुदा घत काढ़ि अखबार पढ़ैत रहि

गेलि । संकेत साफ छल । मुदा चिन्मयकैं तँ मोह धेने छलनि । सोचलथि-

“भए सकैत अछि ओ हमरा नहि चिन्हने होथि ।” तैं दू डेग आगा बढ़ि रागिनीक सामनेमे आबि गेलाह ।

“कोना छी?”

“आब एहिठाम की करए अएलहुँ अछि ? जखन कहैत रही तँ कोनो परबाहे नहि छल ।”

“आब जे भेलैक ,से भेलैक । घुरि चलू । सभ अहाँक बाट ताकि रहल अछि ।”

“केओ ककरो बाट नहि तकैत छैक । ”

चिन्मय गुम्म पड़ि गेलाह । ओहिठाम एकहु क्षण रुकब संभव नहि बुझेलनि । ओ तुरंत वापस भए गेलाह आ फेर कहिओ बनारस नहि गेलाह । तहिआसँ अपूर्वाक संगे ओ समय बिता रहल छलाह । अपूर्वासँ बहुत उमीद रहनि । हुनका विश्वास रहनि जे अपूर्वा बढ़ि कए हुनकर हृदयक दुखकैं शांत कए सकतीह। मुदा सोचल कहाँ होइत छैक । जखन अपूर्वा सेहो विद्रोह कए देलक,अपन रस्ता फराक चुनि लेलक तँ चिन्मयक जीवन व्यर्थ लागए लगलनि ।

“ककरा लेल ई सभ कएल जाए? नौकरी कए की होएत? एकटा पेट तँ कतहु भरि जाएत । ताहि हेतु दिन-राति सभक गंजन किएक सुनैत रही?”- तरह-तरहक बातसभ मोनमे आबि रहल छलनि ।

चिन्मय रागिनीक शिक्षक छलाह । रागिनीक सौंदर्य,व्यक्तित्वक माधुर्य आ विनम्र व्यवहार शुरुएसँ हुनका आकर्षित कए लेलकनि। ट्युटोरिअल किलासमे ओ रागिनीकेँ प्रभावित करबाक कोनो प्रयास छोड़थि नहि । ततबे नहि,जखन वार्षिक परीक्षा लगीच अएलैक तँ ओकरा अपना ओहिठाम बजा कए फराकसँ पढ़ाबथि । मयंक,दीपांक सहपाठी रहथि । रागिनी सेहो हुनके किलासमे रहथि । दुनूगोटे अपना भरि प्रयास करथि जे रागिनीक लगीच भए जाइ । से भेवो केलथि । ई उठापटक चलिते रहल । मुदा चिन्मय सभकेँ पछुआबैत रागिनीसँ बिआह करबामे सफल भेलाह । मुदा बएसक अंतर आ दीपांक आ मयंकक संगे रहल पूर्वक संवंध कैकबेर रागिनीक भावात्मक संसारकेँ हिलबैत रहल,डोलबैत रहल आ बादमे जा कए तँ ओहिमे अन्हरे उठि गेल। ओहि अन्हरमे चिन्मय कतए भसिआ गेलाह से अपनो पता नहि चलि सकलनि आ जखन पता चललनि ताबे तँ बहुत किछु भए गेल छल। आब पछताइए कए की होबएबला छल?

7

चिन्मयक गेलाक बाद बहुतदिन धरि कुलपतिक पद खालिए रहि गेल । कैकगोटेक चुनाव ओहि पदक हेतु भेल । केओ ओतए आबए नहि चाहए । विद्यार्थीसभक मनमानी पराकाष्ठापर पहुँचि गेल छल । परिसरक माहौल रहए जोगर नहि रहि गेल छल। तेँ भेल जे किछुदिन बाहरे बितेनाइ ठीक रहत । भए सकैत अछि जे ताबे विद्या निकेतनक हालत सुधरि जाइक ।

विद्या निकेतनसँ विद्यार्थीसभ समय- समय पर अन्वेषणक बहाना बना कए भ्रमण करए निकलि जाइत छलाह । एहूसाल गर्मीक छुट्टीसँ पहिने सएह भए रहल छल । हम आ यामिनी चंदनपुर बिदा भए गेलहुँ । कहबाक हेतु पढ़ाइ करए जा रहल छलहुँ,अन्वेषण काजकेँ आगा बढ़बए जा रहल छलहुँ । मुदा मूल उद्यश्य रहैत छल मौज-मस्ती करब। रमण आ अपूर्वा सेहो चंदनपुर जेबाक कार्यक्रम बनओलथि । मुदा हमरासभकेँ कोनो जानकारी नहि देलनि । हमहुसभ अपन कार्यक्रमक विषयमे किछु नहि कहने रहिअनि । तेँ ओहोसभ नहि कहलाह तँ कोनो भारी बात नहि भेल। अंबुज आ दिव्या सेहो कतहु निकलबाक योजना बना रहल छलाह। मुदा किछु व्यस्तताक कारण विलंब भए रहल छलनि। ई कोनो एहीबेर भए रहल छलैक,से बात नहि रहैक । सालमे एकाध बेर एहन कार्यक्रम होइते रहैत छलैक । अनुसंधानक नामपर खर्चा

विद्या निकेतनसँ भेटि जाइत छलैक । किछु अपना दिससँ लगा दिऔक तँ सोनामे सुगंध ।

हमसभ रतुका ट्रेन पकड़ने छलहुँ जे भोरे चंदनपुर पहुँचैत। ट्रेन समयपर चलि रहल छलैक । तेँ ट्रेन भोर होइत- होइत चंदनपुर प्लेटफार्मपर अड़कि गेल ।

"उतरै जाउ, उतरै जाउ ।"

-ट्रेनमे यात्रीसभ चिकरि रहल छल ।

"ऐं की भेलैक?"

"की, की हेतैक?"

"अखने निन्न लागल छल ।"

"टीसन आबि गेल । लोकसभ उतरि रहल अछि । तेँ अहाँकेँ उठाएब जरूरी भए गेल ।"

"ओ तँ से फरिचा कए कहितहुँ ने?"

"जँ कनी काल आओर नहि उतरितहुँ तँ संटींग यार्डमे पहुँचि जइतहुँ ।"

"तँ की होइतैक? राति ओतहि बिता लितहुँ? कोनो हर्जा? "

"कोनो हर्जा नहि ? "

से कहि हमरा जोरसँ हँसी लागि गेल । यामिनी सेहो मुस्की दए रहल छलीह । हम तँ अपन समानसभ बान्हि-छानि तैयारे छलहुँ । ओकरो समानसभ झोरामे राखि देने रहिऐक । हमसभ अपन-अपन झोरा लटकेलहुँ आ ट्रेनसँ उतरि गेलहुँ ।

प्लेटफार्मपर'चंदनपुर'लिखल देखि विश्वास भेल जे सही जगह आबि गेलहुँ । यामिनीक संगे हम आगु बढ़ि रहल छलहुँ । टैक्सीबलासभ उपरौंज केने छल । मुदा हम मना करैत गेलिऐक । हम बेर-बेर कहिऐक जे हमरा टैक्सीक काज नहि अछि । कारण आगु बढ़ि कए अएनिहार टैक्सीबलासभ कैकबेर गलत लोक होइत अछि । मुदा ओसभ कथी लेल मानत? कहुना कए प्लेटफार्मसँ आगु भेलहुँ । कनीक आगु बढ़लापर कारी पैंट आ उज्जर सर्ट पहिरने एकटा टैक्सीबला देखाएल । ओ सही आदमी लगैत छल । ओकरा पुछलिऐक-

"गंगा होटल चलबह?"

"किएक ने जाएब?"

"कतेक टाका लगतैक?"

"जे मोन होअए से दए देबैक ।"

"बात परिछाएल नीक होइत छैक । स्पष्ट बाजह जे कतेक किराया लगतैक ।"

"दू सए।"

"ठीक छैक ।"

यामिनीक संगे हम ओकर टैक्सीमे बैसि गेलहुँ । टैक्सी चलि पड़ल।

हम एकटक यामिनीकेँ देखि रहल छलहुँ । यामिनी से बूझि रहल छलि । तथापि जेना अनठओने होइ । ओकर गोर-नार,नमगर,कारी घनगर केस,भरल-भरल देह देखैत बनैत छल ।

टैक्सीबला तीव्र गतिसँ टैक्सी चला रहल छल । लागि रहल छल जेना हमसभ कोनो दोसर दुनिआसँ गुजरि रहल छी । एकाएक बड़ीजोर आबाज भेल। सामनेसँ आबि रहल स्कूटर हमरा लोकनिक टैक्सीसँ टकरा कए चारि हाथफटकी खसल छल । स्कूटरपर सबार एकटा छौंड़ी आ ओकर पाछा बैसल एकटा छौंड़ा ठामहि खसल छल । सड़कपर सौंसे खून पसरि गेल छल । दुर्घटनासँ बचबाक हेतु टैक्सीबला पूरा ताकति लगा कए ब्रेक लगओलक । टैक्सी तीन हाथ ऊपर उठि सड़कपर बामा दिस पलटि गेलैक । रच्छ भेल जे हमरा दुनूगोटेकेँ किछु नहि भेल । खड़ोचो नहि लागल । मुदा टैक्सीबलाक हालत बहुत खराप छलैक। ओ सड़कपर बामा कात पड़ल छल । रातुक समय रहैक। चारूकात अन्हार गुप्प । स्ट्रीट लाइट खराप रहैक । संभवतः तेँ एहन दुर्घटना भेल । ई लोकसभक अनुमान रहैक । मुदा असली कारण तँ हम बुझिऐक। टैक्सी चालकक पूरा ध्यान यामिनीपर रहैक । ओ बेर-बेर सामने लागल सीसामे उचकि-उचकि कए देखि रहल छल । एकाध बेर हम ओकरा तेना करैत देखबो केलिऐक । मुदा किछु कहि नहि सकलिऐक कारण हम तँ अपने व्यस्त रही । ताबते मे ई दुर्घटना भए गेल ।

घायल व्यक्तिसभकेँ हम ध्यानसँ देखैत छी । ई तँ रमण आ अपूर्वा बूझा रहल अछि ।

थोड़ कालक बाद पुलिसक जीप सायरन बजबैत आएल । ओ सभ तीनू घायल व्यक्तिकेँ लेने अस्पताल चलि गेल। पाछूसँ

एकटा जीप आओर आएल । ओहूमे पुलिससभ सबार छल । ओसभ हमरा दुनूगोटेकेँ पुलिस जीपमे बैसओलक आ थाना लेने चलि गेल ।

हम दुनूगोटे संचमंच थानामे बैसल रही कि एकाएक एकटा सिपाही चिचिआ उठल-

“हिनका तँ ठेहुन लगसँ खून निकलि रहल छनि ।”

बात सही छल । यामिनीक ठेहुनक नीचा बहुत चोट लागल छल । ओतहिसँ खून टपकि रहल छल । अफरा-तफरीक माहौलमे ककरो ध्यान यामिनीक चोटपर नहि गेलैक । हल्ला सुनिकए दरोगाबाबू बहार भेल । ओ यामिनीक हाल देखि तुरंत साकंक्ष भेल । यामिनी आ हमरा पुलिसक जीपमे बैसा कए अस्पताल पठा देलक । संगमे दूटा पुलिस सेहो रहैक । एकटा महिला पुलिस सेहो पाछासँ दौड़ल आएलि आ हमरासभक संगे अस्पताल धरि गेलि । अस्पतालमे पहिनेसँ दुर्घटनामे तीनटा गंभीर रूपसँ घायल पहुँचल रहए । मेडिआक लोकसभ से करमान लागि गेल छल । तेहन हालतमे मोसकिलसँ हमरासभकेँ पाछाबाटे अस्पताल आनल गेल । डाक्टरसभ यामिनीक घावकेँ कम आ ओकरा बेसी देखबामे लागि जाइत छल । पुलिस तँ पुलिस ठहरल । ओ डंडा घुमओलक आ जोरसँ बाजल-

“अहाँसभ एकर इलाज नीकसँ नहि कए रहल छी ।”

“से की? ”-डाक्टर बाजल ।

“इहो कहबाक काज छैक? एकरा देहसँ लगातार खून टपकि रहल छैक मुदा अहाँसभक ध्यान कतहु आओर अछि ।”

“अंटबंट नहि बाजह । हमरासभक जे काज अछि से हम कए रहल छी । एक्सरे रिपोर्ट अएतैक तकरबादे किछु कएल जाएत।

“आ ताबे खून बहैत रहतैक तँ ई जीबो करत? ”

“डाक्टर हम छी कि तूँ?

ताबते एकटा पुलिस आगु आएल आ ओहि डाक्टरकेँ गालपर धएले चमेटा धए देलक ।

आब तँ चारूकात हंगामा होबए लागल । डाक्टरसभ चारूकातसँ ओहि पुलिसकेँ घेरि लेलक । बहुत मोसकिलसँ एहि मामिलाकेँ सम्हारल गेल । पुलिसक आला अधिकारीसभ पहुँचलाह । पुलिस केँ डाक्टरसँ माफी मांगए पड़लैक । एहि बीच यामिनीक ठेहुन लगसँ खून बहनाइ अपने बंद भए गेलैक । डाक्टर एक्सरे रिपोर्ट देखलक । सभ ठीक-ठाक रहैक । प्राथमिक उपचारक बाद यामिनीकेँ अस्पतालसँ छुट्टी कए देल गेल । दूपहर रातिक बाद हम यामिनीक संगे होटल पहुँचलहुँ ।

8

भोरे उठितहि हमर ध्यान अस्पताल दिस चलि गेल । कहि नहि ओकरसभक की हाल छैक? जानो बाँचल छैक कि नहि? ओकरसभक हालचाल लेब जरूरी बुझाएल । मुदा यामिनी अखनो अलसाएल पड़ल छलीह । रातिमे बहुत मोसकिलसँ निन्न भेलनि । हुनको तँ चोट लगले रहनि । भगवानक कृपा कही जे चोट बेसी गहींर नहि छल । जाहि तरहे टक्कर भेल छल.किछु भए सकैत छल।

हम कोठरीक बाहर रेलींग पकड़ि कए ठाढ़ रही । सड़कसँ सटले होटल छलैक । रिक्सा,टेम्पू,टैक्सीसभ चलए लागल छल । लगपासक दोकानसभमे ग्राहकसभ आबि-जा रहल छल । सहर एकबेर फेर जागि गेल छल । मुदा यामिनी... ? ओ तँ उठबाक नामे नहि लेथि । हुनका ठामहि छोड़ि हम नित्यकर्मसँ निवृत्त भेलहुँ। अखबार आबि गेल रहैक । अपनेसँ चाह बना अखबार लए बैसबाक उपक्रममे छलहुँ कि यामिनी सेहो उठि गेलि।

“सही समयपर उठि गेलहुँ ।”

“निन्ने नहि टुटि रहल छल । कतेक कालसँ प्रयासमे छलहुँ । अहाँक उठलाक तुरंत बाद हमरो निन्न टुटि गेल रहए । मुदा उठल नहि भेल”

“कोनो बात नहि । सभसँ पहिने दुनूगोटे चाह पिबैत छी । फेर देखल जएतैक ।”

“सही कहलहुँ ।”

हम आ यामिनी चाह पिबि रहल छलहुँ । संगे अखबार सेहो पलटि रहल छलहुँ । अखबारक मुख्यपृष्ठेपर काल्हिक दुर्घटनाक समाचार छपल छल ।

समाचार देखितहि हमर चिंता बढ़ि गेल ।

“जलदीसँ तैयार भए जाउ।”

“कतहु जेबाक अछि की?”

“काल्हुक दुर्घटनाक समाचार पढ़ि चिंता बढ़ि गेल अछि । सोचैत छी अस्पताल जाइ ।”

“कहीं ओतए गेलासँ परेसानीमे ने पड़ि जाइ ।”

“से हेबाक हेतैक तँ ओहुना हेबे करत । ओतए गेलासँ परिस्थितिक सद्यः जानकारी भेटत ।”

“ठीक छैक । हमहु तैयार भए जाइत छी । अहाँ ताबे टैक्सी बजाउ।”

थोड़बे कालक बाद हम दुनूगोटे टैक्सीसँ अस्पताल बिदा भए गेलहुँ।

अस्पताल पहुँचलाक बाद हमसभ सोझे दुर्घटना वार्डमे पहुँचलहुँ । डाक्टरसँ पता लागल जे तीनूगोटेक हालत बढ़िआ छनि। भए सकैत अछि जे साँझधरि छुट्टी कए देल जानि । कोनो भितरिआ समस्या नहि छनि । ई समाचार सुनि मोन कनी हल्लुक भेल । भीतर हुनका लोकनिक शायिका धरि गेलहुँ । तीनूगोटेसँ बेराबेरी गप्प केलहुँ । ओ सभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलाह जे हमसभ अस्पताल आबि हुनकर सभक हाल-चाल लए रहल छलहुँ।

हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि डाक्टरसभ निरीक्षण हेतु आबि गेलाह । ओ हमरासभकेँ देखि सिस्टरपर तमसा रहल छलाह-

“हिनकासभकेँ अखन पर्याप्त आरामक जरूरी छनि । किछुकाल असगरे छोड़ि दिअनु । बहुत जरूरी भेलेपर एकगोटे आबथि आ काज भेलापर चलि जाथि । एहिसँ ओ जलदी स्वस्थ भए जेताह ।”

डाक्टरक गप्प सुनि हम आ यामिनी वार्डसँ बाहर होबए लगलहुँ । से देखि ओ तीनूगोटे डाक्टरसभसँ कहलखिन-

“हिनकासभकेँ रहलासँ हमरासभकेँ बहुत आराम अछि । हिनकासभकेँ एतए रहए दिअनु ।”

“बेसी लोक रहलासँ इलाजमे असौकर्य भए सकैत अछि ।”

“काल्हि हिनकेसभक टैक्सीसँ हमरसभक स्कूटरक टक्कर भेल रहए। केओ दोसर रहैत तँ घुरिकए नहि अबैत । मुदा ई सभ भोरे-भोर एतए आबि हमरसभक हाल-चाल लेलाह आ मदतिओ कए रहल छथि ।”

“ठीक छैक । बाहर राखल बेंचपर बैसि जाउ । जरूरी भेलेपर भीतर आएब ।” -से कहि डाक्टरसभ आगु बढ़ि गेलाह। हम दुनूगोटे बाहर राखल बेंचपर बैसि गेलहुँ ।

डाक्टरसभ जाइत-जाइत टैक्सी चालककेँ छुट्टी कए देलक। बाँकी दुनूगोटेकेँ किछु जाँच करेबाक हेतु कहल गेलनि। “जँ से ठीक निकलि गेल तँ काल्हि हुनकोसभकेँ अस्पतालसँ छोड़ि देल जेतनि ।” से कहि डाक्टरसभ चलि गेलाह । डाक्टरसभकेँ बाहर

होइतहि दुनूगोटे हमरा बजेलथि । अपूर्वा हमरा अंबुजकेँ फोन कए सभ समाचार देबाक हेतु कहैत छथि । हम अंबुजकेँ फोन करबाक हेतु वार्डसँ बाहर भेलहुँ । यामिनी ओतहि बेंचपर बैसल रहथि । अंबुजक फोनक घंटी बजैत रहल,ओहिमे तरह-तरहक घोषणासभ होइत रहल । मुदा अंबुज फोन नहि उठेलाह । आखिर हम फोन बंद कए बेंचपर बैसि गेलहुँ ।

"हमसभ आब वापस चलि सकैत छी ।"

" सही कहलहुँ । अखन एहिठाम कोनो काजो नहि बुझा रहल अछि। "

हम दुनूगोटे वार्डमे जा कए हुनकासभसँ छुट्टी लेलहुँ । हम अपन मोबाइल नंबर आ होटलक पता अपूर्वाकेँ दए अस्पतालसँ बिदा भेलहुँ। जाइत-जाइत काल्हि फेर अएबाक आश्वासन देलिअनि ।

9

प्रात भेने हम आ यामिनी अखबारक संग भोरुका चाह पिबि रहल छलहुँ । तखने फोनक घंटी बाजल । फोन सयनकक्षमे छल । हम जाबे ओतए पहुँचलहुँ ताबे घंटी बंद भए गेल छल । फोन उठा कए देखैत छी ।

अंबुजक फोन छल । हम फोन लेने बाहर अबैत छी । अंबुजक फोनक घंटी बजबैत छी । फोनमे बेर-बेर आबाज अबैत अछि-

"फोन व्यस्त अछि ।" फोन राखि दैत छिऐक । बाँचल चाह जलदी-जलदी खतम करैत छी ।

"अस्पतालसँ कोनो समाचार नहि आएल ।"- यामिनी पुछैत छथि।

"सएह तँ । सोचैत रही जे अंबुजसँ गप्प भए जाएत तखन आगुक कार्यक्रम बनबितहुँ । मुदा ओकर फोन तँ लागिए नहि रहल अछि। एकबेर घंटी बजबो कएल तँ जाइत-जाइत कटि गेल ।"

हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि अस्पतालसँ अपूर्वाक फोन आयल ।

"हमसभ अहाँक फोनक प्रतीक्षा करैत छलहुँ । अंबुजसँ गप्प भेवो कएल की?"

"ओकर फोने नहि लगैत छैक । आइ भोरे ओकर फोन अएबो कएल तँ तुरंते कटि गेल । तखनसँ ओकरे फोन मिलाबएमे लागल छी ।"

"ओ एमहर अस्पतालमे हमरा तँ छुट्टी कए देलक अछि मुदा रमणकेँ किछु दिन आओर रहए पड़तनि ।"

"से किएक?"

"ओ तँ डाक्टरे जानए । किछु-किछु कहि रहल छलैक । हम नीकसँ नहि बूझि सकलिऐक ।"

“अच्छा अहाँ चिंता नहि करू । हमसभ थोड़े कालमे ओतहि आबि रहल छी । ताबे अंबुजसँ फेर गप्प करबाक प्रयास सेहो करबैक ।”

“ठीक छैक ।”

एतेक गप्प हमरा अपूर्वासँ भेले छल कि अंबुजक फोन सेहो आबि गेल ।

“की समाचार? तोहर मिस काल देखि काल्हिए फोन केने रही । मुदा गप्प नहि भए सकल ।”

“समाचार ठीक नहि कहक चाही। ”

“से की?”

“अपूर्वा आ रमण काल्हि दुर्घटनामे घायल भए गेलथि ।”

“तोरा ओसभ कोना भेटलखुन?”

“हम हुनकेसभक हाल-चाल लेबए अस्पताल गेल रही । ओतहि अपूर्वा अहाँसँ गप्प करबाक हेतु कहलक ।”

“मुदा तूँ ओकरासभकेँ केना भेटि गेलहक?

“एतेक बाद फोनपर केना कहिअह?तूँ स्वयं ओकरासँ गप्प कए लएह । सभबात पता लागि जेतह ।”

“अखन तूँ छह कतए?”

“हम तँ होटलमे ठहरल छी । ओना थोड़े कालमे अस्पताले जेबाक बिचारमे छी ।”

“हम तँ अखन गामक रस्तामे छी । नेटवर्क सेहो कखनो लगैत छैक, कखनो अपने बंद भए जाइत छैक । तेँ गप्प भए सकत कि नहि से कोनो ठेकान नहि । तथापि हम प्रयास करब ।”

“अचानक गाम किएक जा रहल छह?”

“माए पिछड़ि कए खसि पड़ल । ओकर दहिना जांघक हड्डी टुटि गेल छैक । ओकरा गामसँ रंगपुर आनल जा रहल छैक । ओतहि शल्यकृया द्वारा ओकर हड्डीकेँ फेरसँ ठीक कएल जाएत । हम दूपहरिआ धरि रंगपुर पहुँचब । ओतए पहुँचलाक बाद फेर फोन करबह ।”

“ठीक छैक । पहिने तूँ ओतए पहुँचह । फेर गप्प करब ।”

थोड़े कालक बाद यामिनीकसंगे हम अस्पताल पहुँचलहुँ । अपूर्वा वार्डक सामनेक बेंचपर बैसल छलि । हमरासभकेँ देखिते ओ उठि कए ठाढ़ी भए गेलि ।

“अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ ।”

“की भेलैक?”

“हमरा तँ छुट्टी कए देलक मुदा रमणकेँ अखन अस्पतालेमे रहए पड़तनि । अल्ट्रासाउंड करैत काल आँतमे किछु गड़बड़ देखबामे आएल छलैक । संभवतः कोनो पुरान समस्या छैक । संगहि हुनकर चोटक घाव गहींर छनि । डाक्टर तकर समाधानमे लागल अछि । ओकरसभक कहब जे रमणकेँ आठ-दस दिन अस्पतालमे रहए पड़तेक ।”

“अहाँ तकर चिंता नहि करू । हमसभ छी ने । जे जेना हेतैक से कएल जेतैक । अहाँ हमरसभक डेरा चलू । कनीको काल सुस्ता लेब । ताबे हम एतए रहब ।”

“ठीक छैक ।”

अपूर्वा यामिनीक संगे होटल चलि आएलि । हम ओतहि रुकि गेलहुँ।

“ आएल रही की सोचि कए आ कथीमे लागि गेलहुँ । एकरा की कहबैक? महज संयोग । मुदा एहनमे ओकरासभकेँ छोड़लो तँ नहि जा सकैत छैक । आखिर दुर्घटनाक समय तँ हमहीसभ ओतए रही। संयोगसँ हम दुनूगोटे बचि गेलहुँ , नहि तँ किछु भए सकैत छल । हम बेंचपर बैसल-बैसल तरह-तरहक बातसभ सोचैत रहलहुँ । एतबहिमे सिस्टर आबाज देलक-

“रमण के संग के छी?”

“हम छी ।”

“अहाँकेँ डाक्टर साहेब अपन कोठरीमे बजा रहल छथि ।”

हम तुरंत डाक्टर साहेबक कोठरी दिस बिदा भए गेलहुँ ।

10

हम आ यामिनी एकहि प्रकल्पपर काज कए रहल छलहुँ। हमरासभक चंदनपुर यात्रा ओही प्रसंगमे भेल छल । मुदा एहिठाम तँ अबिते-अबिते अठबज्जर लागि गेल । ओना इहो कहल जा सकैत अछि जे जान बाँचि गेल। दुर्घटना तँ तेहन जबरदस्त छल जे किछु भए सकैत छल । मुदा संयोगे कही जे जान-मालक बेसी क्षति नहि भेल । मुदा झंझटमे तँ पड़िए गेलहुँ , अस्पतालक चक्कर तँ लागिए गेल । कैकदिनसँ सभ परेसान अछि । अस्पतालक चक्कर होइते अछि जनमारा । जे अस्पतालमे अछि से तँ परेसान रहिते अछि मुदा ओकर समांगकेँ कोनो कम दुर्गति नहि होइत छैक । फेर अहिठाम तँ समांग केओ रहबे नहि करए। सभ तँ अपने फँसल छल।

यामिनी आ अपूर्वाकेँ डेरा पठा कए हम वार्डक बाहर राखल बेंचपर बैसल रही । थोड़बे कालक बाद डाक्टर हमरा अपन कोठरीमे बजओलक । हम गेबो केलहुँ मुदा ताबे ओ उठि कए कतहु चलि गेल रहथि। हुनकर कनिष्ठकेँ सभबात कहलिऐक । ओकरा कतबो कहिऐक,किछु बजबे नहि करए । खाली एतबे कहैत-“डाक्टर साहेब अपने कहताह ।”

मुदा ओ करखन अओताह,कतए गेल छथि,अएबो करताह कि नहि से सभ बात पुछिऐक तँ ओकरा बकोर लागि जाइक । हारि कए हम वापस बेंचपर बैसि गेलहुँ । ओमहर अपूर्वाकेँ चिंता

होइक। हमर फोन से नहि लगैक । असलमे डाक्टरकेँ तकैत-तकैत हम तहखानामे चलि गेल रही जतए नेटवर्क नहि रहैक । हम जहाँ बेंचपर बैसलहुँ कि मोबाइलमे अपूर्वाक पाँचटा मिसकाल देखाएल। बूझि गेलिऐक जे ओकरा बहुत चिंता भए रहल छैक । मुदा हम कइए की सकैत छलहुँ? डाक्टरकेँ कोनो हमरे काज तँ रहैक नहि ने ओकरा लेल ई नव गप्प छलैक । अस्पतालमे तँ एहन होइते रहैत छैक ।

"डाक्टर की कहलक?"

"ओकरेसँ भेंट करए गेल रही । मुदा जाबे गेलहुँ ताबे ओ उठि कए कतहु चलि गेल । तखनसँ कैक चक्कर लगा चुकलहुँ मुदा ओकर कोनो पता नहि अछि । ओकरे प्रतीक्षा कए रहल छी । जखने कोनो समाचार भेटत, तुरंत सूचित करब । अहाँ ताबे जलखै कए लिअ।"

"जलखै करबाक मोन नहि भए रहल अछि । सभटा ध्यान अस्पताले पर अछि ।"

"से तँ वाजिबे थिक । मुदा कनिको काल सुस्ताएब नहि तँ कहीं अहीं ने दुखित पड़ि जाइ ।"

अपूर्वासँ गप्प केलाक बाद हमर मोन उदास भए गेल । की करी किछु फुरा नहि रहल छल । हमसभ चंदनपुर काजे आएल रही। संगे चंदनपुर घुमबाक अभिलाषा सेहो मोनमे छल । मुदा दोसरे समस्यामे पड़ि गेलहुँ । आब कोनो उपायो नहि छल । अस्पतालमे पड़ल रोगीकेँ छोड़ि कए जाओ नहि सकैत छी।

एहिठाम बेसीदिन रहिओ नहि सकैत छी । भगवान भरोसे सभ किछु छोड़ि देबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि बूझा रहल अछि । इएह सभ सोचैत-सोचैत आँखि लागि गेल । हम बेंचपर बैसल छलहुँ कि चारसँ चट्ट ओदरि कए खसल । रच्छ भेल जे ओकर अधिकांश भाग हमरासँ सटले टेबुलपर जा कए खसलैक । टेबुलक कोन झड़ि गेल । मुदा एकटा आधा बीतक टुकड़ी हमर माथपर सेहो खसल । हमर माथ फुटि गेल,खून खसए लागल । चारूकात लोकसभ दौड़ल ।

"की भेल? की भेल ?"

सभकेओ एतबे पूछि रहल छल। थोड़बे कालमे ओतए लोकक भीड़ लागि गेल । हमर माथसँ सोनित टपकि रहल छल । लएह ..आएल छलहुँ सेवा करए आ दोसरे कांड भए गेल। लोकसभ हमरा आपत्तिकालीन वार्डमे लए गेल । आपत्तिकालीन विभागक डाक्टर तुरंत सुइआ देलक आ अंदर लेने चलि गेल । माथमे तीनटा टाका पड़ल ।

"आब हिनका लए जा सकैत छी ।"-डाक्टर कहलक

"मुदा हिनका संगे तँ केओ नहि छनि।"-सिस्टर बाजलि ।

"मोबाइलसँ घरपर फोन कए दहक । केओ-ने-केओ आबि जेतैक।"

संयोगसँ मोबाइल नंबर छलैक दिव्याक ।

"अहाँ के बजैत छी?"

"हम छी दिव्या ।"

“ओ! ....?”

“की भेलनि हुनका?”

“हुनका चोट लागि गेलनि अछि । चोट कोनो बेसी नहि छनि । डाक्टर देखबो केलकनि,पट्टिओ कए देलकनि । आब अस्पतालमे रहब जरूरी नहि छनि ।”

“मुदा हम तँ राजापुरमे छी । एतएसँ की कए सकैत छी?”

“कमसँ कम हुनकर लोककेँ सूचना दए दिअनि ।”

“ठीक छैक ।”

दिव्याक मोन व्याकुल भए गेलैक । मोबाइलमे यामिनीक फोन नंबर तकलक आ ओकरा फोन केलक।

“हम दिव्या बाजि रहल छी ।”

“की समाचार? अचानक कोना मोन पड़लहुँ?”

“हमरा चंदनपुरक अस्पतालसँ फोन आएल छल ।”

“की?”

“जे श्यामक माथपर चोट लागि गेलनि अछि । डाक्टर देखलकनि। कोनो खतराक बात नहि कहि रहल छनि। मुदा हुनका डेरा गेनाइ जरूरी छनि जाहिसँ आराम हेतनि, से केओ हुनकर लोक आबथि।”

“ठीक छैक । हम संपर्क करैत छी ।”

यामिनी तुरंत अस्पताल बिदा भए गेलि । ओकरा एना धरफराइत देखि अपूर्वा सेहो उठि कए ठाढ़ि भए गेलि । ओकरा भेलैक जे जरूर रमणकेँ किछु भए गेलैक अछि ।

"की भेलैक?"

"किछु नहि? अहाँ एतहि रहू । हम अस्पताल जा रहल छी। डाक्टर बजा रहल छैक ।"

"मुदा बात की छैक, से तँ बुझिऐक ।"

"हमरो नीकसँ नहि बूझल अछि । "

"तखन हमरो लेने चलू ।"

"ठीक छैक । मुदा जलदी चलू ।"

दुनूगोटे टैक्सीसँ अस्पताल बिदा भए गेलि ।

11

हमर माथक चोट साधारण छल । एक्सरेमे भितरिआ किछु क्षति नहि निकलैक । से जानि कए सभकेँ उसास भेलैक । मुदा हमर माथामे घाव तँ भइए गेल छल । डाक्टर पट्टी कए देलक,सुइआ देलक आ पाँच दिन धरि दबाइक गोली खेबाक हेतु सेहो कहलक । समय-समयक फेर होइत छैक । तैँ ने अपना ओहिठाम यात्रा करएसँ पूर्व लोक दिन तकबैत छल। मुदा आब तँ लोक आधुनिक विचारक भए गेल अछि । एहिसभ बातमे विश्वास उठि गेल छैक ।

तकर बाद सभक ध्यान रमणपर जाएब स्वभाविक छलैक। हम अपूर्वा आ यामिनीक संगे रमणक वार्डमे पहुँचलहु।

वार्डक सामनेमे डाक्टरसभ भेटि गेलाह । सभसँ बड़का डाक्टर रमणक बारेमे आओर डाक्टरसभसँ गप्प कए रहल छलाह। हमरा देखिते कहए लगलाह-

“हिनका किछु दिन अस्पतालेमे रहए दिअनि तँ बढ़िआ रहतनि । किछु जाँचसभक नमूना लेल गेलैक अछि । मुम्बइसँ ओकर रिपोर्ट अएलाक बादे पता चलत जे बात की अछि । कारण चोटबला जगहपर घाव भरबाक जगह बढ़ले जा रहल अछि । किछु-किछु आओर भितरिआ समस्या बुझा रहल अछि । एक सप्ताहक बाद हिनका अस्पतालसँ छुट्टी करबापर विचार कएल जाएत ।”

हमसभ एकस्वरसँ जबाब देलिऐक-“जे अपने कहबैक सएह ने कएल जेतैक । हमसभ एहि मामलामे की कहि सकैत छी?”

डाक्टर आगु बढ़ि गेलाह । हमसभ सामने राखल बेंचपर बैसि गेलहुँ। आब समस्या छल जे एक सप्ताह अपूर्वा रहती कतए? रमणक अस्पतालक खर्चक जोगार कोना होएत? मुदा यामिनी कहलखिन-

“अहाँसभ व्यर्थ चिंतामे पड़ल छी । हमसभ होटलमे दूटा कोठरी लेनहि छी । एकटामे हम आ अपूर्वा रहि जाएब । रहल खर्चाक बाद । से तत्काल जे आवश्यक हेतैक से हमसभ करब । रमणक परिवारकेँ सेहो सूचित कए देल जेतनि ।”

रमणक परिवारकेँ फोनसँ सभ समाचार कहल गेलनि । ओतए परिवारमे वयोवृद्ध माएक अतिरिक्त केओ आओर नहि

छल। माए कए की सकैत छलीह? । फोनसँ रमणक समाचार सुनि ठोह पारि कए कानए लगलीह । रमणक पिता फौजमे अधिकारी रहथिन आ काश्मीरमे पाकिस्तानी आतंकवादीक हाथे मारल गेल रहथिन । ओहि समयमे ओ बहुत छोट रहथि । ओकरा पालब-पोसब,शिक्षाक व्यवस्था करब सभटा भार बूढ़ माएपर बजरि गेलनि। सरकार अपना भरि बहुत मदति केलकनि मुदा लोकक स्थान टाका नहि लए सकैत अछि । जखन से समस्या बजरि जाइत छल तँ रमणक माए भाव विह्वल भए जाइत छलि । शुरुमे फौजक लोकसभ बहुत देखरेख केलकनि। मुदा समयक संगे बात पुरनाइत गेल । फेर माएक बएस सेहो बढ़इत गेलनि । जे से । मुदा जिनगी तँ ठहरि नहि जाइत छैक। से चलिते रहलैक । रमण जबान भए गेल छथि । उच्च शिक्षा लए रहल छथि। सरकारी छात्रवृत्ति भेटि रहल छनि । सरकार दिससँ रहबाक हेतु घर भेटल छनि । चिकित्साक सुबिधा छनि । सभ किछु रहितो कतहु-ने-कतहु लोकक अभाव बुझना जाइते छनि । तथापि समय जेना-तेना बिति रहल छल । रमणक माए सभ किछु एहि विश्वासक संगे सहि रहल छलि जे काल्हि हुनकर भविष्य नीके हेतनि । रमणक पढ़ि-लिखि उच्च स्थान प्राप्त कए लेत आ ओ चैनसँ भगवानक आराधना करतीह । मुदा रमणक दुर्घटनाक समाचार जेना हुनका हिला कए राखि देलकनि । हमरा फोनपर हुनकासँ गप्प करैत हुनकर हालतक अंदाज भए गेल । अपना भरि बोल भरोस देलिअनि । डाक्टरी रिपोर्ट अएबाक गप्प कहलिअनि आ इहो आश्वस्त केलिअनि जे

हमसभ हुनका संगे छी। मुदा ताहिसँ की?हम रमणक स्थान तँ नहि लए सकैत छलहुँ ।रमणकेँ दुखित भए गेलाक बाद हुनकर भविष्य दावपर लागि गेल छलनि ।रमणक स्थान के लए सकैत छल? केओ नहि।

ओमहर हमसभ अस्पताल बेरा-बेरी जाइत अबैत रहलहुँ। रातिमे बेसी काल हमही अस्पतालमे रहि जाइत छल हुँ ।मुदा कैक दिन एहि तरहे ओतए जगरना केलाक बाद हमर देह जबाब दए रहल छल ।यामिनी ई बात बुझलक ।

“आइ अहाँ आराम करू ।हम अस्पताल चलि जाएब।”

“अपूर्वाकेँ सेहो संगे लेने जेबनि ।”

“ओकरो मोन ठीक नहि लगैत छैक ।दिनमे कैकटा दस्त भए गेल रहैक ।कनी-कनी देहो छक-छक करैत छैक ।”

“तखन हमही चलि जाइत छी ।”

“से कतहु भेलैक अछि ।अहाँक हाल की अछि से अपना नहि बूझा रहल अछि?”

अंततोगत्वा, यामिनी अस्पताल चलि गेलीह । ताबे अस्पतालमे एकटा अलग कोठरीमे रमणकेँ राखि देने रहनि। ओहिठाम एकटा बेंचपर रोगीक सहायककेँ रहबाक जोगार छलैक। एमहर डेरापर रहि गेलहुँ हम आ सटले दोसर कोठरीमे अपूर्वा ।

12

हम बहुत थाकल रही । कैक रातिसँ नीकसँ सुतल नहि रही। ओछओनपर जाइते निन्न पड़ि गेलहुँ । दूपहर रातिमे बुझाएल जेना किछु अभरि रहल अछि । जेना केओ सद्यः हमर पैरकेँ हिला रहल अछि । मुदा किछु बाजि नहि रहल अछि । क्रमशः हमर आँखि खुजि रहल अछि । ताबते तँ ओ जेना हमर बगलमे बैसि गेल अछि । औंघाएल मोनमे बुझेबे नहि करए जे बात की छै क,जे ओ के अछि,की चाहि रहल अछि । हम बेसी काल औंघाएल नहि रहि सकलहुँ।

“के?”

“हम अपूर्वा ।”-से ओ निधोख कहि गेलि ।

हम एना सुन्न किएक भए गेल छी । किछु ने बाजि सकैत छी,ने कनिको फटकी जा पाबि रहल छी। जरूर कोनो मायाजालमे फँसि गेल छी । हमरा होश भेल , मुदा देरी सँ । तकर बाद तँ हम ओछाओन छोड़ि कए कोठरीसँ बाहर भए गेलहुँ । मुदा ओतेक रातिमे जेबे कतए करितहुँ। रेलीग पकड़ि कए मुक्त आकास दिस देखि रहल छलहुँ । ताबतेमे ओ कोठरीसँ निकलि अपन कोठरीमे चलि गेलि । आ हम..बड़ीकाल धरि मूर्तिवत ठामहि रहि गेलहुँ ।

राति बितैत गेल । मुदा आँखिमे निन्न बिला गेल छल । हम नीकसँ जागि गेल रही,ठाढ़.. निठ्ठाह ठाढ़े रहि गेल रही ।

हम रेलिंग पकड़ने पाछा दिस देखैत छी । अपूर्वा केबारक औढ़सँ एकटक हमरा देखि रहल छथि । हमरा सम्मुख देखि किछु कहबाक प्रयास करैत छथि । मुदा बाजि नहि पबैत छथि । ने हम रेलिंगसँ आगा बढ़ि सकलहुँ ,ने ओ केबारक औढ़सँ हटि सकलि । राति ओहिना बितएपर अमादा छल । समय ठाढ़ नहि रहि सकैत छल । भोरुकबाक आवाहन भए चुकल छल । हम वापस अपन ओछाओनपर चलि गेल रही आ अपूर्वा बेसुध अपन कोठरीमे सुति गेल रहथि । भोरमे जखन हम ऊठलहुँ तँ लागए जेना बहुत नीक सीनेमा देखि कए आएल छी ।

ओमहर अस्पतालमे यामिनीकेँ राति भरि मोन उचटल रहैक । ओ बेंचपर बैसले रहि गेलि । रमणकेँ तँ डाक्टर कोनो दबाइ दए देने रहैक । ओ रातिभरि एक्के करोटे सुतल रहि गेल । ओही कोठरीमे एकटा दोसर मरीज सेहो रहैक । ओकर मदति करबाक हेतु एकटा युवक बैसल छल । ओ बेचैन लागि रहल छल। कनी काल बेंचपर बैसए तँ कनी काल बाहर । ओ एना किएक कए रहल अछि ? यामिनीक मोनमे रहि-रहि चिंता होइक। एनामे निन्न हेबाक सबाले नहि छल । कहुना कए भोर भेल । रमणक निन्न टुटलैक । ओ यामिनीकेँ बैसल देखि कहैत अछि-

“अहाँ सुतलिऐक नहि की? रातिभरि एहिना बैसले देखलहुँ ।”

“से अहाँ कोना बुझलिऐक?”

“बीच-बीचमे हमर निन्न टुटए तँ अहाँकेँ एहिना बैसलि देखी ।”

“हमरा घरसँ बाहर निन्न हेबे नहि करैत अछि । फेर एहिठाम तँ तरह-तरहक दृश्यसभ होइत रहैत अछि ।”

“से की?”

“अहाँकेँ की-की कहब । जलदीसँ अहाँ ठीक होउ जाहिसँ हमसभ अपन-अपन स्थानपर वापस सकुशल पहुँची ।”

“से बात तँ सही अछि । मुदा अपना वशमे अछिए की?”

“बेसी चिंता नहि करू । इहो समय बिति जेतैक । ”

यामिनीकेँ डेरा जेबाक इच्छा रहैक मुदा केओ आबए तखन ने । हम अपन कोठरीमे पड़ल रही । अपूर्वा नहा-सोना कए तैयार रहथि । मुदा संकोचसँ हमरा किछु कहथि नहि । एहिसभमे दस बाजि गेल । आखिर हम ऊठलहुँ। अस्पतालक चिंता भेल । हमरा तँ आठे बजे ओतए जेबाक छल । खैर! जे भेल से भेल । आब तँ चली । जलदीसँ तैयार भए अस्पताल बिदा भेलहुँ । जेबासँ पहिने अपन कोठरीक कुंजी अपूर्वाकेँ देबाक हेतु हुनकर कोठरी दिस बढ़लहुँ। ओ हमरा देखिते हँसि दैत छथि । हम आओर लजा जाइत छी ।

हम जाबे अस्पताल पहुँचलहुँ ताबे यामिनी होटल आबि गेल रहथि । ओ अपूर्वाक कोठरी बेर-बेर खटखटबइत छथि। मुदा केबार नहि खुजैत अछि । अपूर्वा बेसुध सुतल छथि । असलमे

रातिभरि ओ जगले रहथि । जहाँ हम अस्पताल दिस बिदा भेलहुँ की ओ सुति रहलीह । यामिनीकेँ अपूर्वाकेँ ऊठाएब जरूरी रहनि । ओ बेर-बेर केबारपर धक्का देथि। अंततोगत्वा,अपूर्वा उठलि - अलसाएल,अर्धतंद्रित । केबार खोलि ओ फेर ओछाओन पर पड़ि रहलि ।

13

आखिर अस्पतालमे रमणक मेडिकल रिपोर्टसभ आएल । रिपोर्ट देखि डाक्टरसभ चिंतित भए गेल । ओकरसभक अनुमान सही साबित भेलैक । रमणकेँ आँतमे कैंसर रहैक -सेहो बहुत विकसित । डाक्टरसभ बहुत सोच-विचार कए निर्णय केलक जे रमणकेँ अस्पतालसँ छुट्टी कए देल जाए । ओतए रहनहुँ कोनो फएदा नहि होबए बला छलैक । अस्तु, डाक्टरसभ ओकरा अस्पतालसँ मुक्त कए देलक । संगे इहो कहलकैक जे रंगपुर चलि जाउ । ओतए किछु दिन परिवारमे रहब तँ मोन लागि जाएत ।

रमणकेँ आइ अस्पतालसँ छुट्टी भए गेलैक । अस्पतालमे बिताओल गेल दस दिन जेना दस वर्ष लागि रहल छलैक । मुदा आइ ओ बहुत प्रसन्न छल । ओकरा लेबाक हेतु अस्पताल केओ नहि गेल रहैक । आब की करए? ओकरा अपूर्वासँ से उमीद नहि

रहैक। केओ आओर आबए,नहि आबए मुदा अपूर्वा तँ अएबे करत। से ओकर सोचब रहैक। मुदा समयक गति बहुत विचित्र होइत अछि ।करवन की भए जाएत से के जनैत अछि?अस्पतालसँ छुटि रमण सभसँ पहिने अपूर्वाकेँ फोन लगओलक । मुदा फोन लगातार व्यस्त आबि रहल छलैक ।कैकबेर नेटवर्क नहि भेटैक । अंततोगत्वा, अपूर्वाक फोनक घंटी बजलैक । मुदा बजिते रहि गेलैक । ओ फोन नहि उठओलक । रमणक मोनमे तरह-तरहक आशंका होबए लगलैक ।कहि नहि की भेल? अपूर्वा फोन किएक नहि उठा रहल अछि? आब की करी?

अस्पतालक बाहर सामनेमे बस स्टैंड छलैक । ओतए राखल बेंचपर बैसि रमण हमरा फोन केलक ।

"हम छी रमण ।"

"हम अस्पताले दिस बिदा होइत रही ।मुदा.."

"मुदा की?"

अपूर्वाकेँ उठबामे देरी भए गेलैक ।तकर बाद ओ बहुत काल धरि किछु-किछु करैत रहलि ।आखिर हम पुछलिऐक-

"हम कतेक कालसँ बाट ताकि रहल छी।"

"कथीक बाट ताकि रहल छी?"

"अहूँ चलबै ने?"

"हमरा मोन नीक नहि अछि ।"

"की भेल?"

"अपूर्वा किछु नहि बाजलि । हारि कए हम असगरे बिदा होइत रही कि अहाँक फोन आबि गेल ।"

"कोनो बात नहि । हम बस पकड़ि कए होटले आबि रहल छी ।"

"ठीक छैक ।"

रमण होटल पहुँचल । यामिनी जरूरी सामानसभ किनबाक हेतु दोकानपर गेल रहए । हम आ अपूर्वा ओसारापर राखल कुर्सीपर बैसल गप्प-सप्प करैत रही । ओही समयमे रमण ओतए पहुँचल ।

" आउ, आउ ।"-हम कहलिऐक । मुदा अपूर्वा अबाक रहि गेल । कनीकालक बाद ओकरा जेना करेंटक झटका लगलैक । ओ बेंचपरसँ उठलि आ कोठरीमे चलि गेलि । रमणकेँ अपूर्वाक रुखि देखि बहुत चिंता होबए लगलैक । मुदा कए की सकैत छल? अपूर्वा ओकर के छैक? किएक ओकर स्वागत करितैक। हम दुखित छलहुँ कि ठीक भए गेलिहुँ ,ताहिसँ ओकरा किएक परेसान हेबाक चाही? रमण मोने-मोन सोचैत छल । आब ओकरा होटलमे एकहु क्षण नीक नहि लागि रहल छलैक ।

ओ झोरा उठओलक आ वापस होबए लागल-

"की भेल? कतए बिदा भेलहुँ?"

"आब एहि बातसभमे की राखल अछि?"

"अहाँकेँ ईसभ की सोचा रहल अछि ?"

“अहाँसभ हमर बहुत देखभाल केलहुँ । आब हमरा जाए दिअ ।”-से कहि रमण बिदा भए गेल । मुदा ओकर देहमे जान नहि लगैक । अपूर्वा संगे ओकर दोस्ती एना कपुर जकाँ बिला जेतैक से ओ सपनोमे नहि सोचने छल । मुदा जे चलि गेल से चलि गेल । ओकर बाट ताकब व्यर्थ । जाइत-जाइत रमण सएहसभ सोचि रहल छल। कनीके फटकी बस स्टैंड रहैक । ओ बस स्टैंडपर बैसल बसक प्रतीक्षा कए रहल छल। सामनेसँ यामिनी जा रहल छलि । रमण ओकरा देखबो केलकैक । मुदा टोकि नहि सकल कि जानिए कए नहि टोकलकैक । मुदा यामिनी ओकरा नहि देखने रहैक । ताबे बस आबि गेलैक । रमण बसमे चढ़ल । बसमे बहुत भीड़ छलैक। ओ जेना-तेना बसक पौदानपर लटकल छल । बस आगु बढ़ि गेलैक । तरवन यामिनीक ध्यान ओकरा पर पड़लैक । यामिनी चिकरि कए रमणकेँ किछु कहए चाहलक । मुदा बसक हल्लामे किछु सुना नहि रहल छलैक आ बस आगु बढ़ि गेलैक ।

होटलमे ओतबे दिनमे की भेलैक जे अपूर्वा आ रमणक दोस्ती हवामे उरिआ गेलैक । आब अपूर्वाक वश चलैक तँ हमरा लेने पहाड़क ओहि पार चलि जाए । मुदा यामिनी जे छलैक,सदिखन चौकस आ सावधान । यामिनीकेँ रमणकेँ एना चलि जाएब बहुत अनसोहांत लगलैक । ओ होटल पहुँचि अपूर्वाकेँ सबालपर- सबाल करए लगलैक । मुदा अपूर्वा बेअसर छलि , जेना यामिनीक प्रश्नसभ अर्थहीन भए गेल होइक । ई सभ बात

यामिनीक चिंता बढ़ा देबाक हेतु पर्याप्त छल । ओहुना पछिला आठदिनसँ ओ बहुत किछु देखि चुकल छलि।

हम यामिनीक भाव भंगिमाकेँ देखि रहल छलहुँ । ओकरा मनोदशाकेँ बूझि रहल छलहुँ । मुदा हवाक रूखि के बदलि सकैत अछि? लोककेँ हवाक दिसाक अनुकूल चलबाक होइत छैक । से बात यामिनी किएक नहि बूझि रहल छैक? जे- से । हमसभ चंदनपुर अपन शोध कार्यक हेतु आएल छी । ओहीपर ध्यान केंद्रित करबाक चाही ।-हम कहलिऐक ।

“मुदा अहाँक शोधक विषय तँ बदलैत जा रहल अछि । तकर की कएल जाएत?”

“एहनो कहीं भेलैक अछि । अपूर्वा सेहो अपनेसभक शोध काजसँ जुड़ए चाहैत अछि ।”

“ओ की चाहैत अछि आ अहाँ की चाहैत छी ताहिसँ हमरा की मतलब?”

“लगैत अछि अहाँकेँ ई विचार पसिंद नहि पड़ल । बात हमरे अहाँक नहि अछि । विद्या निकेतनक अनुमति सेहो चाही ने। फेर हमरसभक काज बहुत अगुआ गेल अछि । अपूर्वाकेँ दिक्कति भए सकैत छनि । ”

“से तँ अपूर्वा जानथि । ओ पहिने विद्या निकेतन जा कए पता करथि । एहन संभवो छैक कि नहि । ताबे हमसभ अपन काज करी । व्यर्थ चिंतामे किएक पड़ल रही ?”

हम अपूर्वा आ यामिनी जलखै केलहुँ । ओहीकालमे अपूर्वा कहलकैक-

“हम सभ विद्या निकेतन चली । ओतहिजे जरुरी हेतैक से प्रयास कएल जेतैक । एहिठाम चिंता केलासँ तँ किछु होबए बला नहि अछि । जँ ओसभ नहि मानत तखन देखल जेतैक ।”

“मुदा हमसभ तँ थोड़बे दिन पहिने ओतएसँ अएलहुँ अछि। अहाँ चाही तँ चलि जाउ । हमसभ बादमे मोन होएत तँ आबि जाएब ।

“सभगोटे संगे चलैत छी ।”

एहिबात पर सभक सहमति भेल । तय भेल जे काल्हि भोरे सभगोटे विद्या निकेतनक हेतु बिदा होएब । कहुना कए दिन बीतल । रातिमे सुतबासँ पहिने हमसभ अपन-अपन समानसभ सरिआ लेने रही जाहिसँ भोरे राजापुरक ट्रेन पकड़बामे दिक्कति नहि होअए। सबेरे-सकाल सभगोटे भोजन कए विश्राममे चलि गेलहुँ । मुदा ककरो निन्न हेबे नहि करैक । एहि करोटसँ ओहि करोट बदलैत रहलहुँ । दूपहर रातिमे बाहर रेलिंगपर जेना केओ ठाढ़ि छलि । हम घौत काढ़ने पड़ल रही । ओ क्रमशः हमरा कोठरी दिस बढ़ि रहल छलि । ई के अछि? ओ कनीक आओर आगु बढ़लि । आब तँ स्पष्ट देखा रहल अछि । जाबे हम किछु बाजी ताबे ओ हमर कोठरीमे पहुँचि गेलि। हम ओहिना सुतल रहबाक अभिनय करैत रहलहुँ । मुदा ओ तँ बढ़ले जा रहल छलि । हमरा मुँहसँ अचानक निकलि

गेल-अपूर्वा। ओ धराक दए हमरा मुँहपर हाथ धए देलक । हमर आबाज बाहर नहि भए सकल।

जखन बहुत राति बिति गेल तँ हम इसारासँ ओकरा कहलिऐक-

“आब निकलू । भोर होबए जा रहल अछि ।”

अपूर्वा स्वीकृतिमे इसारा करैत कोठरीसँ बाहर चलि गेलि।

आखिर भोर भेल । हम तीनूगोटे ट्रेनसँ राजापुर बिदा भए गेलहुँ ।

14

दीपांक,रागिनी आ चिन्मय एकहि संगे ओही विद्या निकेतनमे पढ़ैत रहथि । ओही समयमे हुनका लोकनिमे रागिनीक संगे प्रेम अंकुरित भेल रहनि । युवावस्था आ विद्या निकेतनक ओ रंगीन माहौल जतए जकरे देखू जीवनक आनंद मनाबएमे भिड़ल छल,ओ लोकनि कोना बँचितथि आ किएक बचितथि?जाहिठामक जे व्यवहार रहैत छैक सएह ने लोक अनुकरण करत । मुदा एहिठाम समस्या ई भए गेल रहैक जे दीपांक आ चिन्मय दुनूगोटे रागिनीक चक्करमे पड़ि गेल रहथि । रागिनी सेहो तकर कोनो प्रतिवाद नहि करए । संभवतः ओकरा नीके लगैक जे एकटा स्वतः शुलभ

विकल्प सदरिकाल तैयार रहैक ,ककरो पामोजी नहि । कालक्रममे किछु एहन भेलैक जे रागिनी चिन्मय दिस झुकैत गेलि । से एहि हदधरि जे चिन्मय आ ओकर बिआहो भए गेलैक। दीपांक चोटाएल साँप जकाँ मौकाक ताकमे रहए । कालांतरमे से अवसर ओकरा भेटि गेलैक । ओ सालो बोर देने रहल आ जहाँ माछ फँसलैक कि जी-जानसँ बंसी छिपलक । ओ इएह-ले,ओएह ले परिसर छोड़ि रातिएमे घसकल । से तेहन कए घसकल जे बनारस पहुँचिएक ऊपर भेल ।

बाह रे दीपांक । थोड़बे दिनक बाद रागिनीकेँ संतानक संभावना बुझेलैक । दीपांक अड़ि गेलैक जे ओ संतान ओकर नहि छैक । तखन चिन्मय उदारतापूर्वक ओहि संतानकेँ अस्पतालेसँ लए अनने रहए । ओएह छलैक अपूर्वा । अपूर्वाकेँ ओ पालन-पोषण केलक,पढ़ाइ-लिखाइक व्यवस्था केलक ,सभकिछु केलक । मुदा ओकरो मोनमे कतहु-ने-कतहु खुटका रहिए गेलैक । तकर प्रभाव ओकर अपूर्वाक संबंधपर पड़ैत रहलैक आ ओकर अंतिम परिणति दुखांत भेल ।

हमसभ जखन विद्या निकेतनमे रही तखनेसँ चिन्मय आ रागिनीक खिस्सासभ लोक कानाफूसी करैत छल । चटकार लेबाक हेतु,कोनो आओर मतलब नहि रहैक । ई केओ नहि सोचि सकल रहैक जे अहि खिस्साक असली दृश्य आगु आबए बला अछि। मुदा सेहो भेलैक । समस्त परिसरमे चिन्मयक पराभवक दुखद वृतांत काने-कान पसरि गेल । अपूर्वा सज्ञान छलि । चिन्मय क दुर्दशा

देखि ओ बहुत दुखी भेल रहए । मोने-मोन संकल्प केलक जे जी-जानसँ हुनकर सेवा करत जाहिसँ हुनकर कष्ट कम होनि ,ओ जिबि सकथि । एहि बातमे कोनो मतभेद नहि भए सकैत अछि जे ओ सही मानमे अपन संकल्पक अनुरुप प्रयासो केलक । मुदा भावी प्रवल होइत छैक । कुलपति बनलाक बाद चिन्मयक मोन आ मिजाज दुनू बदलि गेलैक । अपूर्वा दिन-राति हुनका बुझेबाक प्रयास करैत रहल । मुदा बेअसर । हारि कए ओहो पिताक डेरा छोड़ि छात्रावासमे रहए लागलि ।

अपूर्वाक रमणसँ आब कोनो संपर्क नहि रहि गेल रहैक । तथापि ओकरा करवनो काल रमण मोन पड़ैक। आखिर ओ गेल कतए ? ओकर स्वास्थ ठीक भेलैक कि नहि? अखन ओ की कए रहल अछि । एहि तरहक प्रश्न ओकर मोनमे उठैत रहैत छलैक । मुदा ओ कइए की सकैत छलि ? बहुत दिनक बाद ओकरा केओ कहलकैक जे रमण नहि रहल । ओकरा आँतक कैंसर अंतिम अवस्थामे छलैक । रंगपुर गेलाक थोड़बे दिनक बाद ओकर देहावसान भए गेलैक। ई समाचार सुनि अपूर्वा बहुत उदास भए गेल रहए । संभवतः इएह नियति छल ।

चिन्मय बहुत नीक शिक्षक रहथि । मुदा प्रशासकीय क्षमता नहि रहनि । इएह कारण छल जे ओ कुलपतिक रूपमे काज नहि कए सकलाह,असफल भए गेलाह । ओ तँ जे भेल से भेल । आब एहि बएसमे घर बाली छोड़ि कए चलि गेलनि,से बड़का अनर्थ भए

गेलनि । एक हिसाबे हुनकर जिनगीमे ई घटना भूकंप आनि देलक। सभटा सपना चूर-चूर भए गेलनि ।

चिन्मय आब कुलपत नहि,प्राध्यापक नहि ,एकटा निरीह प्राणी भए गेल रहथि जकर केओ संग देबए हेतु तैयार नहि रहए । अपूर्वा सेहो हुनकासँ तंग भए फराक भए गेल छलि । कैकबेर ओकर संगीसभ कहबो करैक-

“तोरा अपन पिताक सुधि लेबाक चाहिऔक?”

“से किएक?”

“इहो कहबाक काज छैक? एहि बएसमे ओ असगर रहि रहल छथि से कोनो नीक बात भेलैक?”

“हम बहुत प्रयास केलहुँ । मुदा ओ अपने बातटा बुझैत छथि । हमरा भेल जे हुनकर संगे हमरो माथ घसकि जाएत । तेँ हटि गेलहुँ। ”

“से जे होइ मुदा आब हुनकर देखभाल के करतनि?”

ई बात कैकगोटे ओकरा कहैत रहलैक । दिन-राति एकहि रंगक बात सुनैत-सुनैत अपूर्वाकेँ धैर्य नहि रहि गेल रहैक । बात बढ़एसँ पहिनहि ओ चुपचाप ओहिठामसँ उठिकए चलि जाइत। मुदा ई समाधानो तँ नहि छलैक ।

15

हम जखन विद्या निकेतन परिसर घुरि अएलहुँ ताबे चिन्मय परिसर छोड़ि सहरमे कतहु डेरा लए लेने रहथि । कुलपतिक कुर्सी अखनो खालिए छल । तत्काल काज चलबएक हेतु गणित विभागक अध्यक्ष प्रोफसर अधिपतिकेँ कुलपतिक प्रभार देल गेल रहनि । ओ तँ अपने मानल रसिक छलाह। हुनकर नामक प्रस्ताव छात्रसंघेक दिससँ कएल गेल रहए। विद्या निकेतन प्रशासन झट दए एकरा मानि लेलक । आओर कोनो विकल्पो नहि रहैक । पढाइ होउ नहि होउ,माहौल तँ ठीक होअए। तखने किछु काजो होएत । सएह सोचि प्रोफेसर अधिपतिकेँ कुलपतिक कार्यभार दए देल गेल।

चिन्मय कतेक दिन घर पर बैसल रहितथि । छुट्टीसभ समाप्त भए गेलनि । किरायाक मकानमे रहबाक कारण खर्चा आओर बढ़ि गेल रहनि । हुनकर कष्टप्रद स्थितिक जानकारी पाबि एकदिन वर्तमान कार्यकारी कुलपति प्रोफेसर अधिपतिजी हुनकासँ भेंट करबाक हेतु पहुँचलाह । चिन्मय कृषकाय,उदास चौकीपर पड़ल रहथि । असगर रहबाक कारण भोजनोक कोनो ठेकान नहि रहैत छलनि । कखनो खेलहुँ,कखनो ओहिना पड़ल रहलहुँ । घरक चीज-वस्तुसभ यत्र-तत्र पसरल छल । लगैत छल जेना ओ घर मनुक्खक बास नहि हो । घरक एहन भयावह दृश्य देखि अधिपतिजी गुम्म पड़ि गेलाह । ओ बेर-बेर हुनका टोकथि,किछु

कहए चाहथि । मुदा चिन्मय कैँ तँ जेना मुँहसँ आबाज बिला गेल रहनि, बकारे नहि फुटनि । हुनका चिन्मयक हालतपर बहुत दुख भेलनि ।

थोड़ेक काल ओहिठाम एहिना मौन पसरल रहल । फेर चिन्मय बहुत मोसकिलसँ बजलाह-

"केमहर अएलहुँ?"

" बहुत दिनसँ अहाँसँ भेंट नहि भेल छल । रातिमे एकटा विचित्र सपना देखलहुँ । नहि रहल गेल । भोर होइते अहाँसँ भेंट करबाक हेतु बिदा भए गेलहुँ ।"

" चिंताक कोनो बात नहि । हम तँ ठीके छी ।"

"हमरासँ कोनो बात नुकाएल नहि अछि । आबो देरी नहि भेलैक अछि । अहाँ काजपर वापस आबि जाउ। हमसभकिछु ठीक कए देब । काजमे लागल रहब तँ कम सँ कम समय कटि जाएत । असगर एनामे तँ केओ पागल भए जाएत ।"

“डर होइत अछि जे हमरा ओतए रहलासँ कहीं माहौल फेर ने खराप भए जाए?”

“से कतहु भेलैक अछि? अहाँसँ विद्यार्थीलोकनिकेँ कोनो व्यक्तिगत कुन्नह तँ छैक नहि । ओ सभ तँ कुर्सीपर बैसल लोकसँ लड़ैत छल । आब जखन अहाँ कुर्सीपर छीहे नहि तखन कथीक परेसानी होएत? फेर हमहु तँ छीहे ।

“तखन की कएल जाए?”

"हमरा विचारसँ तँ अहाँकेँ अविलंब विभागमे काज शुरु कए देबाक चाही । एहिसँ विद्यार्थीसभकेँ फएदा हेतैक आ अहूँक समय नीकसँ कटि जाएत ।"

"से बात तँ सही कहि रहल छी । कैकबेर कोनादनि मोन होइत रहैत अछि । बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ सम्हारैत छी ।"

"अहाँ तँ पड़ल-लिखल लोक छी । एना तँ नहि हेबाक चाही ।"

"ई सभ कहनाइ आसान छैक मुदा वास्तविक जीवन किछु आओर होइत छैक ।"

" एकबेर जहाँ काज पकड़ि लेब तँ बहुत रास समस्याक अपने समाधान भए जाएत । नित्यप्रति किछुगोटेसँ भेंट-घांट होएत, किछु व्यस्तता रहत, ऊपरसँ आर्थिक लाभ तँ हेबे करत ।"

"बात तँ अहाँ सही कहि रहल छी । मुदा ओतए जाएब तँ अपूर्वासँ फेर भेंट होएत । ओ हमर बात तँ मानत नहि। तखन फेर बाताबाती होएत,विवाद होएत,आपसी कटुता बढ़त । फेर हम ककरा लेल अरजब? अपूर्वा लए कए चिंता रहैत छल । ओकरा हमर परबाहे नहि छैक तखन हमही अनेरे किएक परेसान रही?

"से सभ बुझलिएक । मुदा समय आ योज्ञताक सही उपयोग हेतु सेहो जरूरी थिक जे अहाँ शिक्षण काजमे लागि जाउ ।"

एतेक गप्प-सप्पक बादो ओ किछु निर्णय नहि कए सकलाह । विचार करबाक हेतु किछु समय देबाक आग्रह

केलखिन। अधिपतिजी चलि गेलाह । मुदा जाइत-जाइत फेर कहलखिन-

“अहाँ नीकसँ सोचि लिअ । जखन करवनो अहाँक मोन बदलए,काज करबाक इच्छा होअए तँ हमरा फोन कए देब । हम सभटा ओरिआन कए देब ।”

अधिपति चिन्मयक पुरान मित्र रहथि । हुनका चलि गेलाक बाद कैकदिन धरि चिन्मय सोच-विचार करैत रहि गेलाह आ एकदिन अन्हरोखे अधिपतिसँ भेंट करए हुनकर डेरा पहुँचि गेलाह। ओ पूजाक हेतु फूल तोड़ि वापस भेल छलाह । ओसाराक आगु हिनका देखि बहुत प्रसन्न भेलाह । हुनकर हाथ पकड़ने सोझे अपन कोठरीमे लेने चलि गेलाह । ओतए दुनूगोटे संगे चाह पीलाह। गप्प-सप्पक क्रमे चिन्मय फेरसँ काज करबाक सहमति दैत बजलाह-

" मुदा हम आब मात्र शिक्षणक काज करब।"

" हमहु तँ सएह कहि रहल छी । हम सभटा कागज तैयार कए लेने छी । अहाँ आइएसँ काज शुरु कए दिअ।"

“ठीक छैक ।”

थोड़क कालक बाद दुनूगोटे संगे जलखै केलाह आ संगहि विद्या निकेतन हेतु बिदा भए गेलाह ।

हुनकर प्रस्तावकेँ चिन्मय मानि विद्या निकेतनमे अंग्रजी विभागमे प्राध्यापकक काज शुरु कए देलनि । नौकरी तँ हुनकर रहबे करनि । थोड़ बहुत खानापुरीक बाद सभटा जोगार भए गेल। शिक्षकक रूपमे हुनकर यश तँ रहबे करनि । बहुत रास विद्यार्थीसभ

आन-आन किलाससँ हुनकर व्याख्यान सुनबाक हेतु ओहि किलासमे बैसि जाइत छलाह । थोड़बे दिनमे चारूकात चिन्मयक प्रशंसा होबए लागल । एकबेर फेर हुनकर जिनगी व्यवस्थित होबए लागल । दिनभरि तँ हुनकर समय नीकसँ बीत जानि मुदा साँझसँ असगर घर काटए दौड़ैत छलनि । किछु फुरेबे नहि करनि जे की करथि?

16

चिन्मय एकदिन सोफापर बैसल अखबार पढ़ि रहल छलाह। संयोगसँ विज्ञापनक पृष्ठ उनटि गेल । ओहिमे वृद्ध,एकाकी लोकसभक हेतु बनल आश्रम 'श्रीनिकेतन”मे रहबाक हेतु आवेदन आमंत्रित कएल गेल छल । आवेदन व्यक्तिगतरूपसँ आश्रमक सचिवक ओहिठाम देबाक रहैक । ओतए वृद्ध ,एकाकी लोकनिक समस्त आवश्यकताक पुर्तिक व्यवस्था कएल जाइत छल । तकर एवजमे हुनकासँ किछु नहि लेल जाइत छल । स्वेच्छासँ जे जतेक दान दए देथि । चिन्मय ओहि विज्ञापनकेँ बहुत ध्यानसँ पढ़लाह आ ओकरा कैंचीसँ काटि कए सम्हारि कए राखि लेलाह । फेर ओहिमे देल विवरणक अनुसार दर्खास्त बनओलथि आ ओ तुरंत सचिवकेँ फोन कए देलखिन । दुनूगोटेमे झुरझार गप्प शुरु भए गेल-

“हम छी चिन्मय । विद्या निकेतनमे अंग्रजी विभागमे प्रोफेसर । घरपर असगरे रहैत -रहैत तंग भए गेल छी । अखबारमे वृद्धाश्रमक विज्ञापन देखिलिऐक तँ सोचलहुँ जे अहाँसँ गप्प करी ।”

“हम तँ अहाँकेँ नीकसँ चिन्हैत छी ।”

“से कोना?”

“सभटा बात फोनेपर कए लेब । काल्हि हमरा ओहिठाम आउ । तखने सभटा गप्प चैनसँ होएत ।”

“ठीक छैक । अपन पता लिखा दिअ ।”

ओ अपन घरक पता लिखा देलखिन ।

“ठीक छैक । तँ काल्हि भोरे हम अहींक ओतए छी ।”

से कहि फोनकेँ राखि देलनि । रातिभरि चिन्मयकेँ निन्न नहि भेलनि । तरह-तरहक बातसभ मोनमे आबि रहल छलनि ।“ कहि रहल छल जे ओ हमरा पहिनेसँ जनैत अछि कहीं ओतहु पुरने बातसभक चर्चा ने होइत रहए । तखन की करब? ।” बड़ी राति धरि चिन्मय करोट बदलैत रहि गेलाह । भोरुकबामे कनीक आँखि लगलनि । थोड़बे कालमे अखबारबला अखबार धमाकसँ फेकलक। चिन्मयकक निन्न टुटि गेलनि । थोड़ेक काल धरि अखबार उनटबैत रहलाह । मुदा ओहूमे मोन नहि लगलनि ।

तखन ओ नित्यकर्म कए सचिवक ओहिठाम जेबाक हेतु तैयार भए गेलाह । धरफरीमे नाम पुछनाइए बिसरा गेल रहनि । आब दोबारा ओही लेल फोन करब ठीक नहि बुझेलनि । अस्तु,फोनपर देल गेल पतापर पहुँचबाक हेतु लगीचक बस स्टैंडपर

पहुँचि गेलाह । सौंसे सड़क खाली छल । केओ-केओ प्रातः भ्रमणक हेतु देखाइत । बस आबएमे देरी होइत देखि हुनकर बेचैनी बढ़ि रहल छलनि । एतबहिमे तीन-चारिटा विद्यार्थीसभ सेहो प्रातः भ्रमण करैत हुनकर लग पहुँचि गेलनि । चिन्मय चश्मा नहि लगओने रहथि । तेँ ओकरासभकेँ चिन्हि नहि सकलथि । हम अपूर्वा आ यामिनी चिन्मयक लगमे ठाढ़ रही मुदा ओ हमरासभकेँ चिन्हि नहि सकलाह । ओ अपनेमे तल्लीन रहथि।

"कहि नहि ओ आश्रम केहन अछि । ओकर संस्थापक लोकनि के छथि? कहीं ओतहु तरह-तरहक फसादमे ने पड़ि जाइ । आइ-काल्हि ककरो कोनो ठेकान नहि थिक । समाजसेवाक नामपर तरह-तरहक लफड़ासभक समाचारमे पढ़ैत रहैत छी।"

एतबेमे हम हुनका टोकलिअनि,

"सर! एतेक भोरे केमहर बिदा छी?"

चिन्मयक ध्यान अचानक टुटि गेलनि ।

"के?"

"सर! हम श्याम ।"

"आ तोहर संगे ईसभ के अछि?"

"अपूर्वा आ यामिनी।"

चिन्मय संकोचमे पड़ि गेलाह ।

अपूर्वा सेहो किछु नहि बाजलि । ताबतेमे बस आबि गेल आ ओ बसमे चढ़ि गेलाह । हमसभ देखिते रहि गेलहुँ ।

"आखिर ओ जा कतए रहल छथि?"-अपूर्वा बाजलि ।

“तोहर चिंता वाजिब अछि । मुदा हमसभ कइए की सकैत छी?”

“कमसँ कम प्रयास तँ कइए सकैत छी ।”

“हमसभ सेहो बस पकड़ि लैत छी । देखिऐक कतए जा रहल छथि?”

“हमर मोन ठीक नहि लागि रहल अछि । तँ हम वापस अपन कोठरी चलि जाइत छी । अहाँसभ भेने आउ।”- यामिनी बाजलि ।

“ठीक छैक । मुदा अहाँकेँ की भए रहल अछि?”

“ कहि नहि काल्हिसँ अपच जकाँ भए गेल अछि । खेबाक मोने नहि भए रहल अछि । तथापि, रातिमे किछु खा लेलिऐक। तकर बाद आओर मोन गड़बड़ लागि रहल अछि । सोचने रही जे टहललासँ मोन हल्लुक होएत मुदा गड़बड़े भेल जा रहल अछि । पेट फुलि कए तरास भए गेल अछि ।”

“अहाँ जाउ । हमसभ घुमि कए अबैत छी तँ डाक्टर लग चलब ।”

“तकर काज नहि हेतैक । आराम करबैक अपने ठीक भए जेतैक ।”

यामिनी अपन छात्रावास घुरि गेलि । हम आ अपूर्वा पछिला बससँ ओमहरे बिदा भेलहुँ । बस चालक टिकट देबए आएल । बसमे खचाखच लोक भरल छल । बहुत मोसकिलसँ हमसभ आगु बाटे चढ़ि गेल रही । बस चालक पाछुसँ आगा आबि

रहल छल । हमरा लग अबैत-अबैत बहुत समय लागि गेलैक । ताबतेमे बसक चेकिंग भए गेलैक । पाँच-छओटा पुलिस आ एकटा हाकिम दे-देनादन,दे-दनादन बसमे पैसल । बसमे हरकंप मचि गेल। बहुत रास यात्रीकेँ बस चालक किराया लए लेने रहैक आ टिकट देने नहि रहैक । हमरासभकेँ तँ टिकट नहिए रहए। तथापि हमसभ जस-के-तस ठाढ़े रहलहुँ । बिना टिकटबला यात्रीसभकेँ बससँ उतारि देल गेल। हमहु दुनुगोटे उतरि गेलहुँ । सड़कक कातमे नीमक गाछ तरमे सभटा यात्री जमा छल । चेकिंगबला हाकिम फराके ठाढ़ भए गेल छल दूटा मुस्टंड सिपाही आबि कए घोषणा केलक-

"बिना टिकटबला यात्रीसभ सएटाकाक जमा करह नहि तँ तीनमास जहलक खिच्चड़ि खाए पड़तह ।" कहबी छैक जे मरता क्या नहि करता । सभटा यात्री जेना-तेना सएटाकाक जमा करा देलक । मुदा हम दुनूगोटे आ एकटा आओर यात्री अड़ि गेलहुँ । हमरासभकेँ पुलिस कातमे बैसा देलक । शेषयात्रीकेँ ओही बससँ बिदा कए देल गेल । बस तँ चलि गेल । आब रहि गेलहुँ हम दुनूगोटे आ एकटा आओर यात्री । पातर-छितर ,गोर आ फुर्तिगर लोक छल ओ यात्री । पुलिस बेर-बेर ओकरा कातमे लए जाए आ किछु कहैक। मुदा बात नहि बनैत देखि पुलिस ओकरा फज्जति करए लागए । हम दुनूगोटे कातमे बैसल रही । पुलिससभकेँ इच्छा रहैक जे पहिने ओहि यात्रीसँ निपटि लेल जाए फेर हमरासभक हिसाब होइत । मुदा ओ तँ एकदम पकठोस निकलल ।

"जे करबह से करह मुदा एकसए टाका हमरा ने अछि ने हम देबह ।"-ओ साफे कहि देलकैक ।

पुलिस ओकरा कातमे ठाढ़ रहबाक इसारा कए हमरा दिस बढ़ल । हम ओकरासभटा बात साफ-साफ कहि देलिऐक । इहो कहि देलिऐक जे हमसभ स्वयं परेसान छी । अचानक बसयात्रा करए पड़ल अछि । एहिबेर छोड़ि देल जाए ।

"सभ एहिना बजैत अछि । एहि बातक कोन ठेकानजे अगिला बेर तूँसभ एहन काज नहि करबाह ?"

ओ तेसर आदमी हमरासभसँ पुलिसक वार्तालाप सुनि रहल छल । जखन ओकरा नहि रहि भेलैक तँ मोछपर ताव दैत ओ आगा बढ़ल । जेबीसँ अपन परिचयपत्र निकाललक ।

परिचयपत्र देखिते पुलिसबलासभ ओकर पैरपर खसि पड़ल । ओसभ रहि-रहि कए माफ माफी मांगि रहल छल । असलमे ओ एसपी मयंक छलाह । पुलिसक खिलाफ बहुत रास सिकाइति होइत रहैत छलनि । तेँ औचक निरीक्षण कए ओकरासभकेँ पकड़लनि । इसारा दैतहि पाछासँ पुलिससँ भरल दूटा जीप आएल। एकटापर एसपी साहेब स्वयं बैसलहा आ दोसरपर पुलिससभ । सभकेँ लेने-देने ओ बिदा भेलाह । जाइत-जाइत हमरोसभक ओरिआन कए देलाह । थोड़बे कालक बाद एकटा बस आएल । ओहिबससँ हमरासभकेँ चढ़ा कए बिदा कए देलाक बादे ओ वापस अपन कार्यालय गेलाह । हमसभ बसमे बैसि तँ गेलहुँ मुदा कतए जाएब से पते नहि रहए । हमसभ तँ सोचने रही

जे जतए चिन्मय उतरताह ओतहि पाछु लागल हमहुसभ उतरि जाएब । मुदा बीचेमे बहुत देरी भए जेबाक कारण चिन्मयक कोनो ठेकान नहि लागल । बस अपन अंतिम स्टापपर आबि गेल छल । सभटा यात्री उतरि गेल । हमरासभकेँ बैसले देखि बस चालक पुछलक-

"अहाँसभ कतए जाएब?"

"हमसभ एहीबससँ वापस भए जाएब ।"

बस चालक किछु नहि बाजल । ओकरा पता रहैक जे हमसभ एसपी साहेबक आदमी छी । तेँ बेसी सबाल-जबाब नहि केलक । चुपचाप बसचालकक सीटपर जा कए बैसि गेल । बसमे केओ आओर यात्री नहि छल । अगिला स्टापपर जखन बस ठहरल तँ ओहिमे किछु यात्री सबार भेलाह । संयोग एहन भेलैक जे एकटा यात्रीहमरासभक पाछाबाटे आएल आ हमरासँ आगुक सीटपर बैसि गेल । ओ बहुत परेसान लागि रहल छल । बेर-बेर रुमालसँ मुँह पोछि रहल छल । पाछासँ देखलापर हमरा कैकबेर होअए जे चिन्मय छथि । मुदा पूरा आश्वस्त हेबाक हेतु प्रयासो नहि कए पाबी । कारण अपूर्वा हमरे देहपर ओंगठि गेल रहथि । कनीके काल बस चललाक बाद हुनका सुता गेलनि । हमहु संचमंच ओहिना रहि गेलहुँ ।

थोड़े कालक बाद हमरो निन्न लागि गेल । हम निन्नेमे सपना रहल छलहुँ ,किछु-किछु बड़बड़ाइत छलहुँ कि हमर माथ आगु सीटपर बैसल यात्रीक माथसँ टकरा गेल । माथमे अनचोके लागल

चोटसँ ओ यात्री चिचिआ उठल। हल्ला सुनि हमर निन्न टुटि गेल । अपूर्वा सेहो जागि गेलि । हम नहि बूझि सकलिऐक जे आखिर ओ यात्री किएक चिचिआ रहल छल । हमरा लगमे ठाढ़ दोसर यात्री सभटा बात कहलक । हम सामने बैसल यात्रीसँ माफी मंगलहुँ ।

"एहिमे माफीक कोन बात भेलैक? संयोग छैक । कोनो अहाँ जानि कए थोड़े केने रही?"

"मुदा अहाँकेँ चोट तँ लागिए गेल ने?"

ओ नीक लोक छल । चुप भए गेल । हमरसभक यात्राक अंत समीप छल । बसमे लोक ठसल छल। आगु बढ़ब आ बससँ निकलब मोसकिल भए रहल छल । बहुत मोसकिलसँ दुनूगोटे बससँ उतरि सकलहुँ । बससँ उतरैत काल चिन्मयकेँ तकलिअनि । मुदा ओ तँ एहि सभसँ बचबाक हेतु एक स्टाप पहिने बससँ उतरि गेल रहथि। हम अपूर्वाकेँ ई सभ नहि कहलिऐक । मुदा हमरा बुझा गेल जे चिन्मय हमरासभकेँ बसमे बैसल देखि लेने रहथि आ तेँ एक स्टाप पहिनहि उतरि गेलाह । हम आ अपूर्वा बस स्टापपर उतरि गेलाक बाद ओहिठाम राखल बेंचपर बैसि गेलहुँ। बहुत थाकि गेल रही , तेँ सुस्ताएब नीक लागि रहल छल ।

बस स्टापपर बैसल रही कि चिन्मयकेँ रिक्सासँ विद्या निकेतन दिस जाइत देखलिअनि । संभवतः ओ काज फेरसँ शुरु कए देने रहथि आ किलास करबाक हेतु जा रहल हेताह । हम अपूर्वाकेँ रिक्सा दिस ध्यान देबाक चेष्टा कए रहल छलहुँ । मुदा ओ किछु सोचि रहल छलि । ताबे रिक्सा आगु बढ़ि गेल छल ।

"की बात?"

"सामने रिक्सासँ अहाँक पिता जा रहल छलाह।"

अपूर्वा रिक्सा दिस तकलक मुदा रिक्सा बहुत आगु बढ़ि गेल रहैक ।

"हम तँ हुनका बसेमे देखने रहिअनि ।"

"की कहैत छी?"

"सही बात कहि रहल छी?"

तँ हमरा कहलहुँ किएक नहि?

"अहाँ निन्न पड़ि गेल रही । हम सोचलहुँ जे बससँ उतरबा काल भेंट भए जाएत । मुदा ओहो हमरा लोकनिकेँ देखि लेने छलाह आ हमरासभसँ बँचबाक हेतु एकस्टाप पहिने उतरि गेलाह।

"मुदा हमरा ई नहि बुझा रहल अछि जे ओ अहाँसँ गप्प किएक नहि केलाह? बसमे देखलाक बादो चुपचाप उतरि गेलाह।"

"मोन जखन साफ नहि रहैत छैक तँ एहिना होइत छैक।"

"से की? आखिर ओ अहाँक पिता छथि । सएटा गलती माफ कए सकैत छथि ।"

"इएह तँ सोचबाक बात छैक ।"

"से की?"

"समयपर सभटा बात अपने बूझि जेबैक।"

अपूर्वाक आँखिसँ नोर अनवरत खसि रहल छल । हमरा किछु आओर पुछबाक/ कहबाक साहस नहि भेल । हम चुप्पे रहि गेलहुँ । थोड़े कालक बाद अपूर्वा शांत भेए गेलि । तकरबाद

रस्ताभरि ने ओ किछु बाजलि ने हम किछु पुछलिऐक । हमसभ वापस अपन-अपन कोठरी लौटि गेलहुँ ।

चिन्मय बससँ उतरि कए सोझे फोनपर देल गेल पतापर पहुँचलाह । ओ घर बस स्टापसँ थोड़बे दूरपर छल । बीचमे एकटा बड़ीटा पोखरि छल । पोखरिक दोसर भीरपर ओ घर छल । ओतए पहुँचि तँ गेलाह मुदाघरक जिज्जर बंद रहैक । ताला सेहो लागल रहैक । तालाक कुंडीमे एकटा चिठ्ठी खोसल छलैक । चिन्मय चिठ्ठी पढ़ैत छथि-

"प्रिय चिन्मयजी!

हम बड़ीकाल धरि अहाँक अएबाक प्रतीक्षा केलहुँ । मुदा अहाँकेँ अएबामे बहुत विलंब भए गेल । हारि कए हमरा जरूरी काजसँ जाए पड़ि रहल अछि । अहाँ हमरासँ भेंट करबाक हेतु साँझमे सोझे आश्रमे चलि आएब। अएबासँ पहिने फोन जरूर कए लेब । तखने आश्रमक पता सेहो भेटि जाएत । ”

चिन्मय चिठ्ठी पढ़ि कए उदास भए गेलाह । रस्ताभरि की-की सपना देखने रहथि । मुदा एहिठाम अएलाक बाद ठक दए उपास । आब की करथि? थोड़े काल तँ ओहिना ठाढ़ रहि गेलाह । फेर सोचलाह-

" एहिठाम आब ठाढ़ रहबाक कोनो फएदा नहि । वापस चलैत छी । आइएसँ विद्या निकेतनमे किलासो शुरु करबाक अछि ।”

चिन्मय वापस बस स्टैंडपर अएलाह । जाइते बस भेटि गेलनि । बसमे जेना-तेना पैसिओ गेलाह । बसमे ठाढ़ होइते हुनकर ध्यान हमरा लोकनिपर पड़लनि । संकोचसँ ओ आँखि मुनि लेलनि। हमसभ की जाने गेलिऐक जे ओ कोन चक्करमे गेल रहथि । मुदा हुनकर अपने मोनमे समस्या रहनि । तैं एक स्टाप पहिने उतरि रिक्सासँ विद्या निकेतनक अंग्रेजी विभागमे पहुँचि गेलाह ।

17

चिन्मय कुलपति रहथि चाहे साधारण प्राध्यापक,हुनका कोनो फर्क नहि पड़लनि । ओहिना धोती कुर्ता हवाइ चप्पलमे विद्या निकेतन आबथि,जाथि । किलासमे मोनसँ पढ़ाबथि । विद्यार्थीसभ हुनकर किलासमे बकोध्यान लगओने रहितए । एकहुटा किलास नहि छोड़ैत । कुलपतिसँ प्राध्यापक वापस भए गेलाक बाद हुनकर दिनचर्या फेरसँ पूर्ववत भए गेलनि । मुदा व्यक्तिगत जीवनमे ओ बहुत दुखी रहथि । जाबे अपूर्वा संगे रहनि ताबे ओ ठीक-ठाक रहथि। मुदा जखन ओहो हटि गेलनि तकरबादक हालतक वर्णन की कएल जाए? ने खेबाक ठेकान,ने पहिरबाक । घरमे समानसभ यत्र-तत्र फेकल रहैत छल । कखनो खेलहुँ,कखनो नहेलहुँ । कैकदिन तँ विद्या निकेतन भुखले चलि जाथि । ओतए कैंटीनसँ किछु-किछु मंगा लितथि । किछु खइतथि,किछु बाँटि दितथि । कुलमिला कए एकटा फक्करक जीवन भए गेल रहनि । तैं जखन ओहि दिन विज्ञापन देखलखिन तँ आशाक किरण देखेलनि । चोट्टे

ओकर देल पतापर पहुँचि गेल रहथि । मुदा कहबी छैक जे जखन समय प्रतिकूल रहैत छैक तखन अपन छाँहो संग छोड़ि दैत छैक । चिन्मय जखन ओहि पतापर पहुँचलाह आ ओहिठाम घर बंद भेटलनि तँ हुनकर मनोदशा सोचल जा सकैत अछि । ओहिठाम भेटल चिठ्ठी पढ़ि ओ वापस भए गेलाह जरूर मुदा छटपट करैत रहि गेलाह । दिनभरि मोनमे चैन नहि रहनि । आखिर चिठ्ठीमे देल गेल पतापर जेबाक निश्चय केलाह । साँझक समय रहैक । कनी-कनी बुन्नी पड़ि रहल छल । घरमे राखल एकटा टुटलाही छाता ओढ़ने बिदा भेलाह । कनीके आगु गेलाक बाद एकटा आटोबला भेटलनि। ओकरा पता देखए देलखिन ।

ओ आटोबलाकेँ पुछलखिन-

“हौ! आश्रम चलबह?”

“कोन आश्रम?”

“श्री निकेतन”

“किएक नहि जाएब । मुदा ओ स्थान एहिठामसँ साठि किलोमीटरसँ कम नहि होएत।”

“किराया कतेक हेतैक से कहह ।”

“तीन सए एक पीठक । जँ वापसी सेहो आएब तँ दुनू पीठक पाँच सए लागत ।”

“ठीक छैक । दुनू दिसका पाँच सएपर बात तय भेल । मुदा हमरा ओहिठाम किछु देरी लागि जाएत तँ हर्जा ने ने?”

"कोनो हर्जा नहि । जखन वापस घरे आबक अछि तँ कथीक चिंता ।"

चिन्मय आटोरिक्सासँ बिदा भेलाह । थोड़बे कालक बाद आटोरिक्सा सहर छोड़ि देहात दिस बढ़ि गेल । तकरबाद एकटा विशाल आमक बगीचा अएलैक । ओकरे बीचबाटे रस्ता रहैक । आटोरिक्सा आगु बढ़ैत गेल । जाहि हिसाबे ओ चलि रहल छल ताहिसँ स्पष्ट होअए जे आटोबलाकेँ ई रस्ता नीकसँ बूझल छैक।

"हमरा लगैत अछि तूँ एहि रस्तासँ नीकसँ वाकिफ छह ।"- चिन्मय कहलखिन ।

"हमरसभक काजे इएह छैक । रस्ता नहि चिन्हबैक तँ यात्रीकेँ पहुँचेबैक कोना?"

"से तँ ठीके ।"

"मुदा बँचि कए रहब ।"

"से की?

"ओहि आश्रमक बारेमे तरह-तरहक बातसभ सुनैत रहैत छी ।"

"से की?"

"जाइते छी ने, अपने सभटा बात बुझबैक ।"

रिक्साबलाक रहस्यात्मक बात सुनि चिन्मय चिंतामे पड़ि गेलाह । फेर मोने-मोन सोचलाह-

जखन आबिए गेल छी तँ जा कए स्वयं देखिए ली जे बात की छैक । आटोबला तकरबाद किछु नहि बाजल । कलमे-कलम

आटो चलैत रहल । थोड़ेक कालक बाद आटो ठाढ़ भए गेल । सए एकड़मे पसरल विशाल श्रीनिवास आश्रमक द्वारिपर हम आटोसँ उतरलहुँ । आटोबला कहलक-

“हमर किराया दए दिअ ।”

“वापस होएब तरवने ने ।”

“एहिठाम लोक अबैत अछि अपना मोने मुदा वापस होएब ओकरा वशमे नहि रहि जाइत छैक ।”

“ से किएक?”

“ई तँ रहस्य छैक ।”

“ तेँ हमर किराया दए दिअ । हम सामनेक गाछतरमे अहाँक प्रतीक्षा करब ।”

“जौँ कोनो गड़बड़ी भेलैक तँ हम की करब?”

“से तँ अहाँ जानी । हम तँ आटो चालक छी । कइए की सकैत छी? एकरासभसँ झंझटि करब तँ पेट के भरत?”

चिन्मय जेबी सँ पाँच सए टाका निकालि आटो चालककेँ दए देलखिन । आटो चालक टाका प्राप्त कए हँसल । ओकर हँसीमे किछु रहस्य बुझना जा रहल छलैक । मुदा ओ किछु बाजल नहि, हमहु किछु पुछलिऐक नहि ।

आटो बला सामने गाछतरमे आटो लगा देलक आ अपने लगपासमे टहलए लागल । चिन्मय आगु बढ़लाह । ओहि विशाल भवनक द्वारिपर मोट-मोट अक्षरमे लिखल छल-श्रीनिवास आश्रम । चिन्मय द्वारिक भीतर पैर रखैत छथि कि अद्भुत सुगंधक अनुभव

भेलनि । वातावरण मह-मह कए रहल छल । ओ ठोकले स्वागत कक्षमे गेलाह । ओहिठाम बैसल एकटा वृद्ध हुनकर स्वागत करैत बाजल-

“आउ, आउ । हम अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ ।”

चिन्मय स्वागत कक्षमे पहुँचले छलाह कि चाह आबि गेल। दोसर छौंड़ा किछु बिस्कुट राखि गेल .संगहि बनारसी पान सेहो राखि गेल । चिन्मय तँ भुखाएल छलाह । बहुत रुचिसँ चाह-पान केलाह । संगहि ओहि वृद्ध व्यक्तिसँ गप्प-सप्प करैत रहलाह। गप्प-सप्पक क्रममे कतहु किछु गड़बड़ नहि बुझेलनि । हुनका भेलनि जे आटोबला खामखा डरा रहल छलनि । जे से । आब ओ आश्वस्त भेल छलाह कि स्वागती एकटा फार्म देलकनि । ओहि फार्म संगे बीस हजार रुपया शुल्क देबाक प्रावधान सेहो छलैक । संयोगसँ चिन्मय अपन चेकबुक संगे लेने गेल रहथि । बैंकमे बहुत सीमित टाका बँचल छलनि । तथापि ओ फार्म भरि आवश्यक चेक भरि कए जमा कए देलखिन । आश्रमक खातामे हुनकर नाम चढ़ि गेलनि। हुनकर एकटा फोटोक सेहो दरकार छल । मुदा ओ फोटो नहि अनने रहथि । जेना-तेना एकटा पुरान परिचय पत्रसँ फोटोकेँ उखारलाह आ फार्मपर साटि देलखिन । हुनकर काज चलि गेलनि। ओ आश्रमवासी बनि गेलाह । मुदा ई अखन पक्का नहि छल । ताहि हेतु साँझमे हुनका आश्रमक संचालक मंडल सम्मुख उपस्थित होबए पड़तनि । ई बात ओ स्वागती आब कहलकनि । चिन्मय सोचलाह-

“कोनो बात नहि । ओहो ओपचारिकता भइए जाए ।”

चिन्मयकेँ संचालक मंडलक सदस्यगणक सम्मुख जेबाक रहनि। ओना तँ ओ बहुत विद्वान छलाह,तरह-तरहक लोककेँ देखने छलाह मुदा एहिठाम बाते किछु आओर रहैक । सभकिछु अछैत ओ ओहि आश्रम मे एकहिसाबसँ शरण लेबए जा रहल छलाह । तेहन मानसिकतामे पड़ल व्यक्तिक सोच केहन हेतैक? इएह ने जे ओ सभ की सोचताह? हम आश्रममे रहए लेल किएक विवश छी? खैर! ओहो समय आबिए गेल । पाँच मेसँ चारिटा संचालक मंडलक सदस्य आएल छलाह । हुनका सभ जनैत छलनि मुदा ओ ककरो नहि जनैत रहथि । हुनकर फार्म पढ़ल गेल,संचालकमंडलक सदस्यसभ एकटक हुनका देखलनि । हुनकर प्रमुख बजलाह-

"फार्ममे सभटा शर्तसभ छैक से तँ अहाँ पढ़िए लेने हएब? शर्तसभ मंजूर अछि?"

ओ पढ़ने तँ नहि रहथि मुदा आब मनो कोना करथिन । कहलखिन-

"हँ,हँ हमरासभटा शर्त मंजूर अछि ।"

"इहो जे अहाँक बाद अहाँक संपत्तिपर एहि संस्थाक हक हेतैक ?"

"किएक नहि? हमर अछिए के? कम सँ कम एहि संस्थामे लागि जाएत तँ एकटा पूण्यक काज होएत ।"

"तखन तँ ठीके छैक ।"

हुनका तुरंत एकटा आवास आवंटित कए देल गेलनि । ओकर कुंजी सेहो दए देल गेलनि । एकटा स्वयंसेवककेँ कहल गेलैक जे हुनका अपन कोठरी देखा देल जानि ।

चिन्मय ओकरासंगे अपन कोठरी दिस बिदा भेलाह । मोसकिलसँ एक डेग बढ़ल हेताह की रागिनी आ दीपांक देखेलनि।

18

“अहाँ एतए केना पहुँचि गेलहुँ?”

-दीपांक चिन्मय दिस इसारा करैत कहलखिन।

“हम तँ अखने आबिए रहल छी । अहाँसभ अपन हाल कहू ।”

“एहिठाम रहनिहार लोकसभक कमोवेस एकहि हाल रहैत छैक । सभ अपन घरसँ कतहु-ने-कतहु परेसान भए एतए शरण लैत अछि। मुदा हमसभ तँ बहुत दिनसँ एहि संस्थासँ जुड़ल छी । एहिमे हमरसभक बहुत योगदानो अछि । असलमे असगर रहैत-रहैत मोन उबिआ गेल । कोशिश केलहुँ जे अपूर्वाकेँ संगे राखि ली। मुदा ओ से नहि मानलक । खाली धन एकठ्ठा कइए कए की करितहुँ? केओ भोगनाहर छल नहि? सोचलहुँ जे किछु सामाजिक काज करी जाहिसँ जनकल्याण होइक,मोनो शांत होएत।”

"ई तँ बढ़िआँ विचार केलहुँ । मुदा अहाँसभ रहैत कतए छी?"

"हमसभ तँ अखन अपने घरमे रहैत छी । मुदा एहिठाम आएब-जाएब लागले रहैत अछि ।"

"मुदा हमरा तँ से कहिओ नहि कहलहुँ।"

"अहाँसभ के की कहितहुँ? सभबात तँ बुझले अछि -हमरो आ अहूँकेँ । जीवनक आब शेषांश अछि । किछु समय जे वाँचल अछि से नीकसँ कटि जाए ।"

"विचार तँ उत्तम बुझाइत अछि । तखन एहिमे बाधा की अछि?"

"बाधा की रहत? सभठाम किछु-ने-किछु गड़बड़ लोक रहिते अछि। सएह हाल एहू संस्थाक भए गेलैक । किछु गलत आदमी एहिमे पैसि गेल अछि जाहिसँ परेसानी बढ़ि गेल अछि ।"

"से की?"

"ओ सभ नवलोककेँ गलत-सलत फार्म भरा कए ओकरसभटा संपत्तिपर कब्जा कए लैत अछि । पेंसन धरि हथिआ लैत छैक । की-की कहू? अहाँ बँचि कए रहब ।"

"हम तँ फार्ममे दस्तखत कए देने छिऐक ।"

"सत्यानाश भए गेल । आबो वापस भए सकए तँ कए लिअ ।"

चिन्मयक माथा ठनकलनि । ओ चोट्टे स्वागती लग पहुँचलाह आ फार्म वापस मंगलखिन । ओ साफे मना कए देलकनि।

“अहाँक फार्म हमरा लग नहि अछि । ओ तँ काल्हिए ऊपर चलि गेल ।”

चिन्मय जखन बहस करए लगलाह आ फार्म वापस देबाक हेतु अड़ि गेलाह तँ चारि- पाँचटा मुस्टंड हुनका घेरि लेलकनि ।

मुस्टंडसभ चिन्मयक कोनमे बनल कोठरीमे लए जा कए बंद कए देलक । कोठरीक आगामे दूटा पहरुआ तैनात कए देल गेल। चिन्मयकेँ किछु बुझेबे नहि करनि जे ई सभ की आ किएक भए रहल अछि?

ओहि दिन साँझमे एकटा महिला हुनकर घरक जिज्जिर ठकठकओलक । पहरुआसभ हटि गेल । चिन्मय बाहर अएलाह। महिलाक आग्रहक अनुसार ओ ओकर पाछा-पाछा बिदा भए गेलाह । ओहि महिला संगे किछुकाल चललाक बाद चिन्मय एकटा मंडप लग पहुचलाह । हुनका संगे आबि रहल महिला ओतहिसँ लौटि गेलि । ओतए मंडपमे पहिनेसँ दीपांक आ रागिनी बैसल रहथि । हुनका लोकनिकेँ ओतए पहिनेसँ बैसल देखि बूझेबे नहि करनि जे आखिर बात की थिक ?

“एतेक दिनक बाद ई सभ हमर फेरसँ पछोर किएक करए लागल ?”

एतबहिमे दीपांक आगु बढ़ि हुनका अपना संगे मंडपमे लए जाइत छथि । रागिनी ठामहि बैसल छथि ।

“हमरा एहिठाम किएक बजाओल गेल , ओहो छलसँ ।”

“उद्येश्य जँ नीक होअए तँ रस्ता कोनो माने नहि रखैत अछि ।”

“हमरा साफ-साफ कहू , बुझौअल नहि बुझाउ ।”

“इएह तँ अहाँमे गड़बड़ी अछि । दोसरकेँ सुनबाक, बुझबाक हुनर अहाँमे अछिए नहि । तखन कहबैक जे अहाँक केओ सुनिते नहि अछि । जखन अहाँ ककरो ध्यान करबैक, दोसरक सुख-दुखसँ मतलब रखबैक तखन ने केओ बेर पड़लापर अहूँ संगे ठाढ़ होएत ।”-रागिनी बाजलि ।

“आब रहिए की गेल जाहि लए केओ हमरा लग ठाढ़ रहत कि हटि जाएत? जे क्षति हेबाक छल से भए गेल । जकरा जेबाक छलैक से चलि गेल । आब तँ खेल खतमपर अछि ।”

“एना नहि बाजू । जीवनमे सदिखन आशान्वित रहबाक चाही ।”

“आइ अहाँ बहुत उदार आ आशावादी बनि गेल छी । बात की छैक?”

“बात की रहतैक । समय साल बहुत आगु पहुँचि गेल ।बीतल बातकेँ पकड़ि कए रखलासँ की फएदा? -रागिनी बजलीह ।

“फरिछा कए कहिअनु ने ।”- दीपांक बाजल ।

चिन्मय चुपचाप हुनका लोकनिक बात सुनि रहल छलाह। एतबहिमे ओ महिला भफाइत चाह आ किछु बिस्कुट लेने उपस्थित भेलीह । चाह,बिस्कुटकेँ टेबुलपर राखि ओ चोट्टे वापस भए गेलि।

“हमसभ असगर रहैत-रहैत तंग भए गेल छी । असलमे अपूर्वा तँ हमरे लोकनिक संतान छथि । हमसभ हुनका वापस आनए आएल छी जाहिसँ हुनकर बिआह नीकसँ करा दिअनि ।”

“हम तँ अहाँकेँ पहिने कहैत रही जे ओ अहींक संतान छी। मुदा अहाँ तरह-तरहक फसाद करए लगलहुँ । उल्टे हमरे की-की ने कहलहुँ । आब अपूर्वा कोनो नेना नहि अछि जे हम जे कहबैक से ओ मानि लेत । सत्य तँ ई अछि जे आइ-काल्हि ओ हमरोसँ तमसाएल अछि आ हमरासँ फराक छात्रावासमे रहैत अछि ।”

“ओकरा तँ हमसभ मना लेब मुदा अहाँ तँ अपन सहमति दिअ ।”

“हम अपन सहमति कोन आधारपर दए दिअ? हमरा अपूर्वा की कहत?”

“से किएक? ओकरा सभटा बात बूझल छैक । फेर आब ओ कोनो दुधपीबा बच्चा नहि अछि । अपन स्वतंत्र निर्णय लए सकैत अछि ।”

“जखन से बात छैक तखन हमरासँ किएक पुछि रहल छी? जे मोन होअए से करैत जाउ ।”

“हमसभ अपूर्वासँ भेंट कए चुकल छी । ओकरासभ बात पता भए गेल छैक ।”

“तखन दिक्कत कथीक अछि?”

“ओ नहि मानि रहल अछि । हमसभ कैकबेर प्रयास केलहुँ। ओकरा अपन समस्त संपत्तिक बारिस बनेबाक बात सेहो कहलिऐक । मुदा ओ तँ पाथर भए गेल अछि ।”

“पाथर ओ नहि भेल अछि । अहीं पाथर भए गेल रही । हम कतेक कहने रही जे रागिनीक पेटमे अहींक संतान अछि । मुदा अहाँ नहि मानलहुँ । हमरा अपूर्वाकेँ आश्रय देबए पड़ल । तकरबादो रागिनी अहींक संगे चलि गेलि । हम सालक-साल कष्टमे समय बितबैत रहि गेलहुँ ।”

“सभ बात बुझलहुँ । मुदा बितलाहा बातकेँ धेने रहलासँ ककरो हित नहि होएत । एहि दुनिआमे जे आएल अछि से जाएत। हमहुसभ आइ ने काल्हि गुजरि जाएब । मुदा जीबिते जँ गल्तीक सुधार कए सकी तँ एहिसँ बढ़िआ किछु नहि भए सकैत अछि ।”

“मानि लिअ जे हम मानिए लेब ताहिसँ की होएत? अपूर्वा हमरोसँ फराक भए गेल अछि । कैकमाससँ गप्प-सप्प नहि भेल अछि । बुझेबे नहि करए जे एना अचानक ओकर मोन हमरा प्रति एतेक तीत किएक भए गेलैक ? आब बुझाइत अछि जे जरूर अहींसभ ओकर मोनकेँ विषाक्त केने होएब ।”

“संकाक की इलाज छैक? हमसभ तँ अपने परेसान भए गेल छी । अपनोसँ आ आनोसँ । हम किएक ककरो किछु बिदति करबैक?”

“ईकी भेलैक? बिदति नहि तँ की भेलैक? ककरो माथमे एतेक पुरान बातकेँ ठुसि देब ,ओहो एहन बात जाहिसँ ओकर संपूर्ण आस्तित्व हिलि सकैत अछि, कतएसँ वाजिब कहल जा सकैत अछि?”

“तरवन की कएल जाए?”

“से हम की कहि सकैत छी? जे ठीक बुझाए से करू? अहाँसभ कोनो दुधपीबा बच्चा नहि छी आ ने हमरासँ एतेक सिनेह अछि जे सभबात हमरेसे पुछि कए करी।”

दीपांक आ रागिनी पहिनो एहि विषयपर बहुत प्रयास कए चुकल रहथि । आइ नओ- छओ करबाक निश्चय कए आएल रहथि। मुदा बात नहि बनैत देखि ओ आगु बढ़बाक निश्चय केलनि। अपन दहिना हाथसँ किछु फटकी ठाढ़ मुस्टमडसभकेँ इसारा केलथि । ओ सभ तुरंत मंडपकेँ घेरि लेलक । जाबे चिन्मय किछु बुझितथि,किछु बजितथि ताबे तँ ओसभ हिनका उठा-पुठा कए लेने चलि गेल आ ओही कोठरीमे जा कए बंद कए देलक।

19

आटोबला कहुना कए राति बितओलक । भोर भए गेलैक। तरवनो जखन चिन्मय नहि घुरलाह तँ ओकरा बात गड़बड़ बुझेलैक । ओ आटोरिक्सा चलओलक आ इएह-ले,ओएह-ले ओहिठामसँ खसकि गेल । एक दिन बीतल,दू दिन

बीतल,तेसरोदिन जखन चिन्मय विद्या निकेतन नहि पहुँचलाह तँ अधिपतिजीकेँ चिंता भेलनि । विद्यार्थीसभकेँ सेहो ई बात पता लगलैक । केओ अपूर्वाकेँ सेहो कहलकैक । संयोगसँ ओहि समय हमहु ओकरे कोठरी दिस जा रहल छलहुँ । अपूर्वाक आँखिसँ नोर झहरि रहल छल । ओकर मोन अपराधवोधसँ भरल रहैक । ने ओ चिन्मयक डेरा छोड़ैत आ ने हुनकर ई हाल होइतनि । मुदा आब की कएल जाए? हम अपना भरि अपूर्वाकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ। छात्रावासमे सौंसे गर्द पड़ि गेल छल । चारूकातसँ विद्यार्थीसभ अपूर्वाकेँ घेरि लेलक । जकरा जेना पार लगैक,अपन संवेदना व्यक्त करए लागल । मुदा एहिसभसँ होबए बला की छल?

जरूरी तँ ई छलैक जे चिन्मयक पता लगाओल जाए,हुनका वापस आनल जाए आ जँ किछु समस्या अछि तँ तकर समाधान काएल जाए। मुदा बेसी लोक तँ तमासा देखए आएल रहए । थोड़बे कालमे भीड़ छटि गेल। रहि गेलहुँ हम आ अंबुज । हमसभ अपूर्वाक हालचाल लेबए छात्रावास दिस बढ़लहुँ। अपूर्वा बहुत परेसान छलि। हमसभ जेना-तेना अपूर्वाकेँ शांत केलहुँ । फेर सभगोटेक विचार भेलैक जे अधिपतिजीसँ एहि विषयपर चर्चा कएल जाए । भए सकैत अछि जे ओ किछु मदति कए सकथि ।

विद्यार्थीसभ अधिपतिजीक कार्यालय पहुँचल । ताबे ओ पुलिसकेँ सूचना दए देने रहथि । एसपी मयंक सेहो विद्या निकेतनक छात्र रहल रहथि । तेँ ओहिठामक माहौलसँ ओ वाकिफ रहैत छलाह । बेर-कुबेर लोकसभकेँ मदतिओ करैत छलखिन । एक

हिसाबे ओ परिसरक शुभेच्छु छलाह । अधिपतिजी चिन्मयक बारेमे सभबात कहलखिन । मयंक तुरंत अपन मातहत कर्मचारीकेँ कारवाइ करबाक हेतु आदेश देलखिन । हुनकर आदेशपर पुलिस तुरंत सक्रिय भए गेल । पुलिस एहन घटनासभक बारेमे जानकारी लेबाक क्रममे सभटा पुरना फाइलसभकेँ उल्टा गेल ।

पुलिसकेँ प्रारंभिक जाँचक बाद किछु-किछु पता चललैक। एकदिन चारि बजे साँझमे पुलिस कुलपतिक कार्यालमे आएल । ओ अपूर्वासँ किछु जानकारी प्राप्त करए चाहैत छल । कुलपति कार्यालयसँ अपूर्वाकेँ समाद गेलनि । ओ ओतए पहुँचलीह। हमरो पता लागल । ओहि समय हम कुलपतिक कार्यलयक लगीचेमे रही । हमहु ओमहरे बढ़लहुँ । ताबे अपूर्वा कुलपति कार्यालय पहुँचि गेल रहथि। एसपी मयंक हुनका संगे एकांतमे गप्प कए रहल छलाह । हम बाहरे बैसि अपूर्वाक प्रतीक्षा करए लगलहुँ । ताबते अंबुज सेहो ओतए आबि गेलथि ।

एसपी मयंक अपूर्वा आ ओकरा संगे हमरा,अंबुजकेँ लेने एसपी कार्यालय पहुँचि गेलाह । हुनका अपूर्वासँ किछु आओर पुछबाक प्रयोजन बुझा रहल छलनि । एसपी कार्यालयमे पुलिसक किछु आओर अधिकारीसभ पुरना फाइलसभ लए उपस्थित रहथि।

“अहाँ अपन पिताक डेरा छोड़ि देलाक बाद हुनकासँ फेर कहिआ भेंट केलिअनि?”

“कहिओ नहि?”

“किएक?”

“हमरा हुनकासँ तामस भए गेल छल ?”

“से किएक?”

“जाहि प्रकारसँ ओ विद्यार्थीक प्रति सख्त चलाह से हमरा पसिंद नहि छल । हम हुनका बुझेबाक प्रयासो केलहुँ । मुदा ओ अड़ल रहि गेलाह ।”

“मुदा ई तँ पर्याप्त कारण नहि भेल जे अहाँ हुनकासँ फराक भए जाइ ।”

“आखिर पढ़ाइ-लिखाइ सेहो तँ करबाक रहैक । एहन माहौलमे से संभव होइत? अहीं बाजू।”- से कहैत-कहैत अपूर्वा बहुत भावुक भए गेलीह । ओ आगु किछु नहि बाजि सकलीह । पुलिस मामिलाक गंभीरता बुझि पूछताछ रोकि देलक आ हुनका फेर काल्हि अएबाक हेतु कहलकनि ।

ओहिठामसँ निकललाक बाद अपूर्वा बहुत परेसान लागि रहल छलि । ओकरा होइक जे पुलिस नाहक ओकरापर सक कए रहल अछि । हमसभ ओकरा बुझेबाक प्रयास करैत रहलहुँ । मुदा अपूर्वाक मोन बहुत अशांत भए गेल रहैक । ओ अपन कोठरीपर चलि गेलि आ हमसभ कुलपतिक कार्यालय दिस बढ़ि गेलहुँ ।

अपूर्वाकेँ एतेक परेसान देखि हमरा नहि रहल गेल । कैकदिनसँ ओ नीकसँ भोजन नहि केने रहए,सुतल नहि रहए,संभवतः स्नानो नहि केने रहए । ओकर मानसिक स्थिति ओकर आकृतिपर साफे देखा रहल छलैक । हम अपूर्वाक कोठरी पहुँचलहुँ आ ओकरा झिकने सोझे जलपानगृह चलि गेलहुँ । ओ कतबो ना-नुकुर केलक ,दुनूगोटे भरिपोख जलखै केलहुँ । तकरबाद लगीचेमे ठाढ़ एकटा आटोरिक्सा पकड़ि सहर दिस बिदा भए गेलहुँ । हम आइ तय कए कए आएल रही जे अपूर्वाक मदति करब.चाहे हमरा जे करए पड़ए । आटोबला पुछलक-

“अहाँसभ कतए जेबैक?”

“एसपी कार्यालय ।”

ओ सोझे एसपी कार्यालय बिदा भेल । रस्तामे हम आ अपूर्वा गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । गप्प-सप्पमे बेर-बेर चिन्मयक चर्च होइत छल ।

“ओ कतहु चल गेल, फेर घुरि नहि आएल, पुलिस पाछा पड़ल अछि मुदा ओहोसभ किछु कए नहि पाबि रहल अछि ।”

एहि विषयसभपर चर्चा होइत रहल । आटोबलाक कान ठाढ़ भेलैक। ओ बाजल-

“अपनेसभ किनकर चर्चा कए रहल छी?”

“हिनके पिता चिन्मयक ।”

“जे एहिठाम कुलपति रहथि ।”

“हँ,हँ हुनके । मुदा अहाँ कोना जनैत छिअनि?

“हुनकासँ हमरा एहिना एकदिन भेंट भेल रहए । ओ हमरे आटोसँ साँझमे कतहु गेलथि । हमरा कहलथि जे वापसीमे सेहो एही आटोसँ चलब । हम रातिभरि हुनकर प्रतीक्षा करैत रहि गेलहुँ। मुदा ओ वापस नहि भेलथि। आखिर, हारि कए हम लौटि गेलहुँ ।”

आटोबलाक गप्प सुनि कए अपूर्वाक जान मे जान अएलनि । हुनका लगलनि जे ओ आटोबला स्वयं कोनो देवदूत बनि कए उपस्थित भए गेल अछि ।

“हमरासभकेँ अहाँ ओहि स्थान धरि लए जा सकैत छी?”

“किएक नहि । हम तँ ओमहर जाइते रहैत छी । मुदा छैक ओ बहुत दुर ।”

“कतेक दूर हेतैक?

“एहिठामसँ कम सँ कम सत्तरि किलोमीटर तँ हेबे करतैक।”

ताबे एसपी कार्यालय आबि गेल छल । अपूर्वा आटोबलाकेँ ओतहि ठहरबाक आग्रह कए हमरासंगे एसपीक कार्यालय पहुँचलीह । द्वारिसँ मोसकिलसँ दू-तीन डेग बढ़ल होएब कि एसपी साहेब अपन कारसँ पहुँचलाह । कारसँ उतरितहि अपूर्वा आ हमरा देखैत छथि । इसारासँ हमरासभकेँ अपन कोठरीमे बजओलथि । हम दुनूगोटे हुनकर कोठरीमे पहुँचैत छी ।

“किछु पता लागल कि नहि?”-ओ पुछैत छथि ।

"संयोगसँ एकटा आटोबला भेटि गेल । ओ कहैत अछि जे हुनका ओएह साँझमे लए गेल रहए । मुदा ओ वापस नहि आएल रहथि ।"

"ओकरा बजाउ ।"-एसपी साहेब बजलाह ।

एकटा पुलिस आटोबलाकेँ पकड़ने एसपी साहेबक सामनेमे हाजिर कए देलक । आटोबलाक सिटीपिटी गुम्म रहैक । ओकरा देखितहि एसपी मयंक पुछलखिन-

"तूँ चिन्मयजीकेँ लए कए कतए गेल रहए?"

"जतए हमरा लए गेलथि हम गेलहुँ ।"

"तखन की भेलैक?"

"ओ हमरा कहलनि जे हमरे संगे वापसो हेताह । हम रातिभरि हुनकर बाट तकैत रहि गेलहुँ । मुदा ओ वापस नहि भेलाह। हारि कए हम चलि अएलहुँ । अहीं कहू जे हम ओतए कतेक कालधरि बैसल रहतहुँ?"

"बात तँ सही कहि रहल छह । मुदा ओ ककरा ओतए गेलथि? की काज रहनि?"

"से सभ हम ने हुनका पुछलिअनि, ने हमरा ओ कहलथि ।"

"मुदा ओहि स्थानक पता तँ तोरा हेतह?"

"किएक ने? हम तँ ओतए जाइते-अबैत रहैत छी ।"

"ठीक छैक । तूँ बाहर प्रतीक्षा करह । हमसभ थोड़े कालक बाद ओतए चलब ।"

एसपी साहेब आटोबलासँ गप्प कए आश्वस्त लागि रहल छलाह ।

"आखिर किछु पता तँ लागल । ओहिठाम गेलाक बाद आओर जानकारी भेटत । एहि कांडमे जरूर केओ जान-पहचानक आदमीक हाथ लागि रहल अछि ।"

तकरबाद हमरा लोकनि एसपी साहेबक संगे चाह-पान केलहुँ । अपूर्वाक मोन आइ बहुत दिनक बाद हल्लुक लागि रहल छलनि । बेसक हुनका चिन्मयक संगे मतभेद भए गेल रहनि मुदा तकर माने ई नहि जे हुनका संगे कोनो मतलब नहि रहनि । एतेक दिनक संग छोट-मोट घटनासँ बिसरल नहि जा सकैत छल। तँ हुनकर परेसानी स्वभाविक रहनि । मुदा आजुक घटनासँ लगलनि जे समस्याक समाधान भए जाएत ।

चाह-पान केलाक बाद एसपी साहेबक संगे हमसभ बिदा भेलहुँ। आगु-आगु पुलिसक जीपमे आटोबला बैसल छल । करीब एकघंटा धरि चललाक बाद अगिला जीप ठाढ़ भेल । ओकर पाछा हमहुसभ ठाढ़ भए गेलहुँ। एसपी साहेब अपन कारसँ बाहर भेलाह। हमहुसभ हुनका संगे कारसँ उतरि गेलहुँ । मुख्यद्वारिपर मोट-मोट अक्षरमे लिखल छल-श्रीनिवास आश्रम एसपी साहेब आटोबलाकेँ संग केलाह आ आश्रम दिस बढ़ि गेलाह । पाछा लागल हमहुसभ ओमहरे बिदा भेलहुँ ।

"आब कहह जे केमहर की छैक?"

"से हमरा किछु नहि बूझल अछि? हम तँ चिन्मयकेँ बाहरे उतारि देलीअनि आ रातिभरि गाछक तरमे हुनकर प्रतीक्षा करैत रहलहुँ ।"

"तोरा किछु तँ अंदाज हेतह?"

"किछु नहि बाबू साहेब । हमरा किछु नहि बूझल अछि । ओना हम हुनका कहने रहिअनि जे ई स्थान बहुत खतरनाक मानल जाइत अछि । मुदा ओ अपन धुनमे रहथि ।"

"मुदा तोरा ई कोना पता रहह जे ई स्थान खतरनाक अछि?"

"हम एहिठाम कैकटा यात्रीसभक संगे अबैत रहलहुँ । तेँ किछु-किछु सुनल रहए ।"

एसपी मयंक आटोबलाक बात सुनि गंभीर भए गेलाह । ओ हमरासभकेँ ओतहि ठहरबाक हेतु कहलनि आ स्वयं द्वारिसँ किछु पुलिसक संगे आगा बढ़ि गेलाह ।

21

एसपी मयंक विद्या निकेतन परिसरक माहौलसँ पूर्ण परिचित छलाह । ओ स्वयं ओहीठामसँ पढ़ल रहथि । विद्या निकेतनक उनमुक्त वातावरणसँ ओ अवगते नहि ,अपित भुक्तभोगी रहथि । कामिनीकसंगे हुनकर सालो मित्रता रहलनि । भोर,साँझ दुनूगोटे संगे रहितथि । दुनूक कोठरी अगल-बगल रहनि। मुदा बेसीकाल रहथि दुनूगोटे संगे । कामिनी रहबो करैक

तेहने । जेम्हरे बाटे जाइत, जेना बिजली चमकि गेल हो । लोक ओकरे देखैत रहि जाइत । परिसरमे कैकटा छौंड़ा कामिनीक पाछा पड़ि गेलैक । तकर बाद की भेल की नहि,कामिनी चंपत भए गेलि। मयंक ओकरा तकबाक बहुत प्रयास केलनि । थाना-पुलिस एक कए देलनि । मुदा किछु पता नहि चललनि । कोनो सूचना भेटनि ताहि हेतु चारूकात प्रयास करैत रहलाह । कामिनीक कोठरीमे चुपचाप पैसि कए एक-एकटा कागज उल्टा गेलाह जाहिसँ ओकरा बारेमे किछु पता लागनि । ओहीक्रममे हुनका एकटा डायरी भेटलनि । डायरीक पहिल पन्नापर कामिनीक रंगीन फोटो साटल छल । ओकर हाथ आगु दिस बढ़ल,जेना ककरो बजा रहल होइक। मयंक ओहि डायरीकेँ पाबि बहुत आश्वस्त भेल रहए। भेलैक जे आब किछु-ने-किछु अंदाज लागत जे एना किए भेलैक,कामिनी स्वयं चलि गेलि कि कोनो दुर्घटनाक शिकार भए गेलि ? ओ कामिनीक डायरी कतेको दिनधरि पढ़ैत रहि गेल रहए । मुदा किछु नहि भेलैक । कामिनी गेलैक से गेले रहि गेलैक । तकरबाद मयंक कहिओ एहि चक्करमे नहि पड़ल । ककरोसँ बिआह नहि केलक । पुलिस विभागमे अधिकारी बनि गेलाक बादो ओकरा रहि-रहि कए कामिनीक प्रसंग मोन पड़ैत रहि गेलैक। आइ जखन चिन्मय काण्डक जाँचमे ओ आएल तँ एकबेर फेर अपन वितलाहा जिनगी मोन पड़ि गेलैक । ओकरा चिन्मयक संगे सहानुभूति होबए लगलैक। ओकरो संगे किछु ओहने भेल रहैक ।

अचानक मयंकक मोनमे बितलाहा बातसभ हरिआ गेलैक। बहुत मोसकिलसँ ओ अपन मोनकेँ सम्हारलक ।

"अखन जाहि काजे आएल छी ताहिपर ध्यान देबाक चाही"

-ओ मोने-मोन सोचलक । एसपीक आगमन सुनितहि ओहि परिसरमे अफरा-तफरीक माहौल भए गेल । मुस्टंडसभ चिन्मयकेँ लेने जा रहल छल । थोड़बे फटकी रागिनी आ मयंक सेहो जाइत रहथि । ओकरासभकेँ देखितहि एसपी मयंक जोरसँ आबाज केलक-

“खबरदार! जौँ आगा बढ़बह तँ मारल जेबह । ओकरा पाछा चलि रहल पुलिससभ सांकंक्ष भए गेल । मुस्टंडसभ चिन्मयकेँ छोड़ि कए भागि गेल । रागिनी आ दीपांक ठामहि ठाढ़ रहि गेल । किछु फुरेबे नहि करैक जे ई सभ अचानक कोना भए गेलैक । ओकरासभकेँ कनिको उमीद नहि रहैक जे ओतए पुलिस आबि जेतैक ओहो एसपीक संगे । मुदा से तँ सद्यः देखा रहल छलैक। पुलिस चिन्मयकेँ अपना कब्जामे कए लेलक । रागिनी आ दीपांक एसपी साहेबक निहोरा करए लागल ।

“हमरासभक किछु गलती नहि अछि । हमसभ तँ अपने परेसान छी।”

“गलती ककर छैक आ ककर नहि छैक तकर हिसाब-किताबक हेतु बहुत समय छैक । पहिने ई बताबह जे तूँ सभ

एहिठाम की कए रहल छह? एहिठाम तोरासभकेँ के अनलकह? चिन्मयक ई हाल के केलक?”

“चिन्मयसँ तँ हमरसभक पुरान झगड़ा अछि । हमसभ एकहि संगे पढ़ैत छलहुँ।”

“हमरा ओ सभ बूझल अछि । मुदा अखन की भेलैक जाहिसँ चिन्मयक अपहरण कएल गेलनि ।”

“अपहरण नहि सरकार। ओ तँ स्वयं एतए आएल छलाह। संयोगसँ हमहुसभ आएल रही । गप्प-सप्पमे पुरना बातसभ उठि गेल । बस एतबे बात छैक...”

एसपी साहेब पुलिसकेँ इसारा केलखिन । पुलिससभ दुनूगोटेकेँ पकड़ि लेलक । चिन्मयकेँ तँ पुलिस पहिने पकड़ि लेने छल । तीनूगोटेकेँ जीपमे बैसा कए पुलिस बिदा भेल ।

22

ओहि दिन साँझ पड़ि रहल छल । आओर जाँच करब संभव नहि रहैक । सभ थाकि से गेल रहए । अस्तु,एसपी साहेब,चिन्मय,रागिनी आ दीपांकक संगे पुलिस मुख्यालय वापस भए गेलाह । तीनूगोटेकेँ पुलिस विभागक अतिथि गृहमे राखल गेल। ई तय भेल जे काल्हि दस बजे आगुक कार्यवाही होएत । जा धरि पुलिसक जाँच चलत,ताबे ओ सभ कतहु नहि जा सकताह । अपूर्वाकेँ सेहो पुलिसक जाँचमे सहयोग करबाक सूचना देल

गेलैक। प्रात भेने ठीक दस बजे एसपी मयंक अपन कार्यालय पहुँचि गेल रहथि । ओहिठामसँ ओ सदल-वल अतिथि गृह पहुँचि गेलाह। चिन्मय,रागिनी आ दीपांकसँ हुनकर चर्चा होबए लागल । मुदा अपूर्वा ओतए नहि गेलि। पुलिससभ ओकरा कैकबेर फोन केलकैक । मुदा ओ मना कए देलक । ओकर जबाब बहुत साफ रहैक-

"हम आब कोनो नवालिग नहि छी । हम अपना बारेमे, अपन भविष्यक बारेमे सोचि सकैत छी, निर्णय लए सकैत छी। रहल हुनका लोकनिसँ हमर संबंधकेँ, से ओ सभ स्वयं सोचथि। ओना पिताक रूपमे हम सभदिन चिन्मयेकेँ बुझलिअनि। परिस्थिति एहन भेल जे हम आब हुनकोसँ फराक छी । मुदा हुनकर हमरा प्रति उपकार तँ छनिहे । जँ ओ हमर पालन-पोषण नहि करितथि तँ हम कहि नहि आइ कतए रहितहुँ,जीवितो रहितहुँ कि नहि? तेहन हालतमे आब रागिनी आ दीपांकक आग्रहक कोनो अर्थ नहि थिक। ओ सभ भोग-विलासमे लागल रहथि । जे मोन भेलनि से करैत गेलाह । एतबो ध्यान नहि रहलनि जे हम हुनका लोकनिक प्रेमक प्रतिकृति छलहुँ । आब ओहि विवादमे की दम अछि?बहुत मोसकिलसँ हम स्वतंत्रताक अनुभूति कए रहल छी आ तकरा कोनो हालतमे नहि छोड़ि सकैत छी ।"

अपूर्वाक विचारसँ एसपी साहेब अवगत भेलाह । ओ सभ बात रागिनी आ दीपांकके सेहो कहलखिन । लगेमे बैसल चिन्मय सेहो सभटा सुनलनि । ककरो किछु नहि फुराइक । दीपांक आ

रागिनी बहुत निराश रहथि । हुनकर सभक इच्छा रहनि जे कोनो रस्ता निकलैक जाहिसँ ओ अपूर्वाकेँ प्रभावित कए सकथि । आब जखन मामिला पुलिसक हाथमे छलैक तँ ओकर पटाक्षेप एतेक आसानीसँ ओसभ थोड़े होबए देतैक ।

एसपी साहेब अपन बात समाप्त केनहि छलाह कि चिन्मय आ दीपांकमे विवाद होबए लागल ।

“हम तँ पहिने कहैत छलहुँ जे अपूर्वाक पिता अहीं छी । मुदा अहाँ कहाँ मानलहुँ ।”

“जे भेलैक, से भेलैक आब ओकर कोन हिसाब छैक ।”

“हिसाब छैक कोना नहि ? कोनो हमरे-अहाँक बात तँ अछि नहि। अपूर्वाक बारेमे सोचिऔक । ओकरा पर की बीति रहल होएत? इएह कारण छल जे ओ कतेको माससँ बेचैन बुझा रहल छलि आ अंततोगत्वा, मौका भेटितहि हमरो छोड़ि गेलि । ओ किन्नहु अहाँसभक संगे नहि जाएत,नहि रहत । अहाँक अपन मजबूरी होएत मुदा जे बस्तुस्थिति अछि से सएह अछि ।”

“जँ डीएनए जाँच करबा लेल जाए तखन तँ बात स्पष्ट भए जाएत ने ।”

“जखन अपूर्वा अहाँक संगे रहबाक हेतु तैयारे नहि अछि तखन ओहिसँ की होएत?”

“कमसँ कम सत्यबात दुनिआक नजरिमे तँ आबि जेतैक ।”

“हमरा तरफसँ कोनो हर्जा नहि अछि ।”

ताबे एसपी साहेब कतहु जेबाक हेतु तेयार भए गेल रहथि। जाइत-जाइत ओ आदेश कए देलथि जे दीपांक आ चिन्मय काल्हि फेर दस बजे हुनका सम्मुख उपस्थित होथि । अपूर्वाकेँ सेहो बजाओल जाए । ताधरि ओ सभ अपन-अपन घर वापस जा सकैत छथि ।

एसपी साहेब आदेश दए चलि गेलाह । चिन्मय असगरे जेना-तेना अपन डेरा हेतु बिदा भए गेलाह । थोड़ेक काल पैरे चललाक बाद हुनका ओएह आटोबला देखेलनि । चिन्मय जोरसँ हल्ला केलनि-

"आटो-आटो ।"

हुनकर आबाज सुनि आटोबला ठाढ़ भए गेल । ताबे चिन्मय आटोक लगीचमे पहुँच गेलथि ।

" ओ तँ अहीं छी ।"-आटो बला बाजल ।

"संयोगसँ तूँ देखा गेलह । हमरा अपन डेरा पहुँचा दएह ।"

"ठीक छैक ।"

चिन्मय आटोपर बैसि गेलाह । हुनका देखि आटोबलाकेँ बहुत उत्सुकता भेलैक । ओ पुछिए देलकनि-

"केमहरसँ आबि रहल छी?"

"की कहिअह? समयक फेरामे पड़ि गेल छी ।"

"से की?"

"ओहि दिन तूँ हमरा पहुँचा देने रहह ।"

“तकरबाद की भेलैक? हम तँ रातिभरि अहाँक प्रतीक्षा करैत रहि गेलहुँ ।”

“ की-की कहिअह? बहुतरास बातसभ भेलैक । कहुना कए जान बाँचि गेल ।”

“सएह कहू । हम तँ अहाँकेँ चेतओने रही ।”

“सभटा लिखल होइत छैक । हमरा परेसानी लिखल रहए से भेल।”

थोड़बे कालमे आटोरिक्सा हुनकर डेरा लग पहुँचि गेल । चिन्मय आटोबलाक मोबाइल नंबर लए लेलनि जाहिसँ आगुओ काज पड़लापर ओकरा बजाओल जा सकए ।

23

एसपी मयंक कैकबेर अपूर्वाकेँ भेंट करबाक हेतु समाद देलखिन । मुदा ओकर उत्तर एतबे रहैत छल-

" हम एहन किछु नहि केने छी जे पुलिस हमरा बजाबए । जे गलती केने अछि से जानए।”

हारि कए एकदिन एसपी साहेब स्वयं ओकर कोठरी धरि पहुँचि गेलाह । संगमे हमहु रहिअनि । हमरा ओ पहिने सुचना देने रहथि। तेँ विद्या निकेतनक प्रमुख द्वारिएपर हम हुनकर स्वागत हेतु ठाढ़ रही। हमरा ओ अपना कारमे बैसा लेलाह । रस्ताभरि अपूर्वाक बारेमे जानकारी लैत रहलाह । फोनेसँ ओ अधिपतिजीकेँ अपन आगमनक बारेमे कहि देने रहथिन। जखन एसपी साहेब अपूर्वाक

कोठरीपर पहुँचलाह तँ ओ दोकानसँ किछु जरूरी सामान कीनि कए अबैत छलि ।

एसपी साहेब अपन परिचय दैत कहलखिन-

" हम छी एसपी मयंक । हमहु एक समयमे एही विद्या निकेतनक विद्यार्थी रही । हमरा एहिठामक परिवेश आ जीवन शैलीक नीकसँ जानकारी अछि । मुदा बीचमे किछु विचित्र घटनासभ घटित भेल। तेँ अहाँसँ भेंट कए सही जानकारी लेनाइ जरूरी बुझाएल ।"

"अहाँ ककर-ककर जानकारी लेब? एहिठाम तँ ईसभ होइते रहैत अछि । ने दीपांक नेना छथि ने चिन्मय । फेर ओ घटनासभ कोनो आजुक तँ अछि नहि । जखन समय रहैक तखन तँ ओ सभ एक-दोसरपर दोषारोपण करैत रहि गेलाह। आब कोनो जाँच भेलासँ की हेतैक? हमरा जे सुख-दुख लिखल छल से भेल । हम आब अपन रस्ता चुनि लेने छी,अपन जीवन अपना तरहें जीवाक हेतु कृतसंकल्प छी । हम आब ककरो संगे नहि रहब । तखन हमरा पाछा पड़बाक की औचित्य थिक ?"

“से जे होइक ,मुदा सरकारी नियमकेँ अनुसारे ने किछु हेतैक? जखन मामिला चलि गेलैक अछि तँ ओकर निष्पादन तँ कानूनी रूपसँ मान्य तरीकेसँ हेतैक। हमरा हिसाबे तँ अहाँकेँ डीएनए जाँच करा लेबामे कोनो हर्जा नहि छैक । ओहिसँ बात साफे फरिछा जाएत।”

“जँ से जरुरी बुझाइत अछि तँ ई जाँच पूरा परिसरमे हेबाक चाही । तखने एहिठामक असलियत बुझाएत?"

एसपी साहेब गुम्म पड़ि गेलाह । अपूर्वा अपन बात पर अड़ल रहि गेलि । एसपी साहेब वापस चलि गेलाह । ओमहर परिसरमे चारूकात कानाफूसी होबए लागल ।

केओ कहितए-"जँ परिसरमे सभहक डीएनए जाँच भेलैक तँ एहिठाम रहनाइ मोसकिल भए जाएत।"

दोसर बाजल-"मोसकिल की हेतैक? एहिठामक हाल ककरा ने बूझल छैक। भने बात सभदिन लेल फरिछा जाएत"

तेसर बाजल-" गरल मुर्दा उखारने कोनो फएदा नहि होबए बला अछि । कहिआ के की केलक तकर दंड दोसर-तेसर लोकसभ भोगए से कहाँक न्याय थिक?"

एहिना तरह-तरहक गप्प-सप्प होइत रहल । जतेक मुँह ततेक तरहक बात ।

ई बात क्रमशः सौंसे पसरि गेल । कैकगोटे हमरो कहलक। जखन बात गरमाइते गेल तँ हम एहि विषयपर चर्चाक हेतु बैसार करबाक निर्णय केलहुँ । ओहिमे परिसरक छोटसँ पैघ सभकेँ आमंत्रित कएल गेल । बैसारमे निर्णय भेल जे आगामी जलसा लगीच अछि । ओही अवसरपर एहू विषयपर चर्चा कएल जाएत ।

परिसरमे जलसाक समय लगीच छल । चारूकात ओकर तैयारी चलि रहल छल । कार्यक्रमक आयोजक लोकनि सक्रिय भए गेल छलाह । लगपासक कालेजसभमे हकार दए देल गेल रहैक ।

केओ छुटि नहि जाथि ताहि लेल फिरिस्त बना लेल गेल रहैक । पुरान विद्यार्थीसभकेँ सेहो हुनकर पतापर पोस्टकार्ड पठा देल गेल रहनि । परिसरक उतरबरिआ कातक मैदानमे बड़काटा सामिआना लगाओल गेल ।विद्या निकेतनक समस्त छात्र,शिक्षक,आचार्य,प्राचार्यसभ बजाओल गेल रहथि । ततबे नहि विद्यार्थी लोकनिकेँ अपन मित्रसभकेँ बजेबाक छूट सेहो रहनि । ककरो हाथमे ककरो नामक बैनर तँ ककरो हाथमे स्वागतक झंडा। विद्यार्थीसभ अपन-अपन फाँरमे छोटसँ पैघ सीसी नुकओने रहथि। ओना कैकटा साहसी विद्यार्थी बिना कोनो परबाहकेँ बोतल पकड़ने चलि रहल छलाह । मंचपर सजल-धजल विद्यार्थीसभक शोभा देखैत बनैत छल । सामिआना लोकसँ ठसाठस भरि गेल। विद्यार्थीसभ अपन पुरुष आ महिला मित्रक संगे मदमस्त भेल एमहर ओमहर आबथि,जाथि । कार्यक्रमक शुरुमे गीत गाओल गेल-" कामिनी कर स्नाने...। लागल जेना समस्त सामिआनामे तूफान आबि गेल । के केमहर जा कए ठाढ़ होएत तकर कोनो ठेकान नहि ।

परिसरमे घटित घटनासभ लए कए माहौल तँ गरमाएले छल । सभक मोनमे ओ बातसभ घुरमि रहले छल । तकर विस्फोट तँ भेने रहैक । सएह भेलेक । जलसाक बीचेमे डीएनए जाँचक बारेमे विस्तारसँ जानकारी दैत स्वयंसेवकसभ डीएनए जाँचक समर्थनमे प्रपत्र बाँटए लगलाह । संयोगसँ मंचपर बैसल अपूर्वाकेँ

सेहो ओ हाथ लगलैक । ओकरा पढ़तहि अपूर्वाक बहुत तामस भए गेलैक । ओ तुरंत माइक पकड़लक आ शुरु भए गेलि -

" भाइ लोकनि । अहाँसभ एहि पुस्तिकाकेँ पढ़ने होएब । जँ नहि पढ़ने होइ तँ पढ़ लिअ । अहीं कहू जे आबक युगमे डीएनए करेबाक की औचित्य छैक? ओहो एहि परिसरमे जतए युग-युगसँ वैयक्तिक स्वतंत्रता सहज, सुलभ रहल अछि । हम तँ एसपीकेँ साफे मना कए देने रहिऐक । मुदा ओ सभ हमर बात नहि मानलाह। तेँ ई आफद एहिठाम धरि पहुँचि गेल । आब अहींसभ कहू जे की कएल जाए?"

श्रोतागण सर्वसम्मतिसँ हुनकर समर्थनमे थपड़ि पीटि रहल छलाह।

ओहि दिनुका कार्यक्रम एहू लेल विशेष छल जे ओहिमे पुरान-पुरान संगीसभक भेट-घांटक अवसर भेटलनि। के-के नहि आएल रहथि । ओ सभ अपन-अपन गाममे रहैत छलाह । कार्यक्रमक जानकारी भेटलापर उनटे पैरे बिदा भेलाह । एहन-एहन बहुत रास संगीसभसँ भेंट कए हमरा बहुत आनंद भए रहल छल । हम हुनकासभकेँ आग्रह केलिअनि जे तुरंत गाम नहि लौटि जाथि,किछुदिन एहिठाम हमरासभक संगे रहथि । विद्या निकेतनक अतिथि गृहमे रहबाक नीक व्यवस्था अछि । कोनो कष्ट नहि हेतनि आ जौं हेबे करतनि तँ कोनो बात नहि । अपन घर छैक। सही मानेमे विद्या निकेतनक छात्रावास कतेको विद्यार्थीक हेतु घरोसँ बेसी सुखकर लगैत छलनि । सभ किछु स्वतः सुलभ छल ।

ओहिठामक वातावरणमे सभ सदरिकाल उनमुक्त जीवन-यापन करैत छलाह । मुदा बाहरसँ आएल अतिथिसभ अपन-अपन व्यस्तता देखबैत भोरे वापस गाम बिदा भए गेलाह। सभ अपन-अपन परिवारमे लागि गेल रहथि ।

"अहाँसभ एहिना अबैत रहब। "- अपूर्वा बजलीह ।

सभ एकमतसँ ओकर बातक समर्थन केलनि । विद्या निकेतनक मिनीबससँ हुनका सभकेँ रेलवे टीसन धरि पहुँचा देल गेलनि ।जाइत-जाइत हुनका लोकनिक वर्तमान मोबाइल नंबर आ घरक पता सेहो लए लेलहुँ ।

“जौं कहिओ मौका भेटत तँ अहाँसभक गाम आएब ।”

“जरूर आएब ।”

रातिमे डीएनए जाँचक ततेक जोर विरोध भेल जे पुलिस एहि मामिलामे आगु बढ़ब ठीक नहि बुझलक । तथापि जेना-तेना ओ सभ अपूर्वाक माथसँ केस झीकबामे सफल भए गेल । पुलिसबलासभ मोंछपर ताव दए रहल छल । एसपी मयंक अपन डेरापर रहथि । ओ सभ केस लेने अति उत्साहमे हुनकर डेरा पर पहुँचि गेल । एसपी साहेब पूजामे लीन छलाह । ताबे पुलिससभ हुनकर डेराक ओसारापर ठाढ़े रहि गेल । करीब आधा घंटाक बाद ओ पूजा घरसँ बाहर भेलाह । केओ पुलिससभ दए कहलकनि । ओ ओसारापर अबैत छथि-

" की बात छैक ? "

“सर! काज भए गेल ।”

“कोन काज?”

“ओएह डीएनए बला।”

“ओ तँ मना कए देने रहिऐक ।”

“हमसभ से तँ नहि बूझि सकलिऐक । मौका पबितहि अपूर्वाक माथसँ किछु केस झींकि लेलिऐक । ओकरा सीसीमे बंद कए अनलहुँ अछि ।”

एसपी साहेब तामसे बुत भए गेलाह ।

“तोरासभकेँ जखन माथा नहि छौक तँ अपने मोने एहन काज किएक करैत छैं?”

सिपाहीसभक सीटीपीटी गुम्म । आब की करए?एसपी साहेब ओकरासभसँ केसक नमूना लए लेलथि ।

" बिना सहमतिकेँ ई जाँच नहि कराओल जा सकैत अछि। तेँ हमसभ एहि प्रयासमे रही जे सहमति बनए मुदा से नहि भए सकल ।”

“हमसभ एतेक बात नहि बूझि सकलिऐक सरकार! मुंसीजीक बात बुझबामे दुबिधा भए गेल ।”

“आगुसँ ध्यान रखिअह।”

“ठीक छैक, सर!”

प्रातभेने अखबारसभक पन्ना रातुक जलसाक समाचारसँ पाटल छल । अखबारक मुखपृष्ठपर तरह-तरहक रंगीन चित्रक संग कार्यक्रमक जीवंत वर्णन कएल गेल रहए ।

“परिसरमे प्रेमक बिहाड़ि।"

" परिसरमे भेल राति भरि तमासा। "'

" डीएनए जाँचक प्रयासपर जोरदार हंगामा ।”

" अपूर्वा केसमे सभगोटे उत्सुकतासँ परिणामक प्रतीक्षा कए रहल छथि ।”

एहि तरहें समाचार पत्रसभ तरह-तरहक शिर्षकक संग विद्या निकेतनमे काल्हि भेल उत्सवक समाचार प्रमुखतासँ छापलक । लोकसभमे चारूकात एही घटनाक चर्चा होइत रहल।

सभ अखबारक बिक्री बढ़ि गेल । मुदा 'दैनिक उत्सव' नामक समाचार पत्रक तँ जेना लुटि भए गेल । हमरो ओहि समाचार पत्रक बारेमे पता लागल। उत्सुकता भेल जे आखिर ओहिमे एहन की छपल अछि जे सौंसे सहरमे ओकर लुटि भए रहल अछि । दिनमे एगारह बाजि गेल छल । ओहि समयमे सामान्यतः अखबारसभक विक्रयक काज समाप्त भए जाइत अछि । मुदा टीसनपर भेटबाक संभावना बुझाएल । संयोगसँ एकटा रिक्साबला जाइत रहए । ओकरा टीसन धरि पहुँचेबाक आग्रह केलिऐक । थोड़बे कालमे रिक्सासँ टीसनक बाहर पहुँचि गेलहुँ । एक पाँतिसँ चारिटा अखबारबला बैसल छल । ककरो लगमे "दैनिक उत्सव" नामक अखवार नहि छलैक । हम बहुत उदास भए गेलहुँ । अंतमे एकटा अखबारबला कहलक-

"जौं अहाँ कनीकाल ठहरी तँ हम जोगार कए देब ।"

"ठीक छैक । हम दस मिनटक बाद वापस अबैत छी । हम ताबे लगपासमे टहलैत रहलहुँ । थोड़बे कालमे अखबारबला हाक देलक-

"कहाँ गेलहुँ बाबू साहेब?"

"एतहि छी।"

"अखबार भेटि गेल । एकटा पानबलाक ओहिठाम राखल छलैक। पढ़ल छैक, ताहि लेल हर्जा ने- ने?"

"कोनो हर्जा नहि । अखबार पढ़बासँ मतलब अछि ।"

ओकरासँ अखबार लए विद्या निकेतन दिस वापस बिदा भेलहुँ । सोचलहुँ जे डेरापर पहुँचि चैनसँ असगरमे पढ़ब ।

25

रातिमे सुतए काल एसपी मयंकक माथमे ओएह बात सभ घुमि रहल छलनि। अपूर्वाक सौंदर्य,आ ओकर पारिवारिक जटिल समस्या,चिन्मय आ दीपांकक आपसी मतभेद, आ ताहिसभक बीचमे रागिनीक पिच्छर स्वभाव । सभटा हुनकर मोनमे बिजलौका जकाँ नाचि गेलनि । ओ बड़ीकाल धरि एहि समस्यापर सोचैत रहि गेलाह।

" लगैत अछि सभ एक-दोसरकेँ ठगि रहल अछि आ एहि चक्रव्युहमे फँसि अपूर्वा परेसान अछि । एकर किछु समाधान करब जरूरी थिक। "एकाएक हुनका किछु फुरेलनि । ओ अपन पीएकेँ फोन केलथि-

" काल्हि भोरे तोरा कतहु जाए पड़तह । तेँ जरूरी सामान लेने अबियह ।"

“ठीक छैक सरकार!”

भोरे पीए साहेब अपन यात्रा-बैग लेनहि हाजिर भेलाह । एसपी साहेब सेहो सबेरे तैयार भए घरक कार्यालयमे बैसि गेलाह ।

पीए साहेबकेँ देखितहि कहैत छथि-

“एहि डिब्बामे राखल नमूनाकेँ डीएनए जाँच करेबाक छैक। ई काज तूँ स्वयं अपना सामनेमे करबिअह । ककरो कानो-कान पता नहि चलबाक चाही ।”

“जे आज्ञा सरकार!”-से कहि पीए साहेब नमूनाबला डिब्बाकेँ सम्हारि कए रखलक आ एसपी साहेबक चिठ्ठी संगे डीएनए प्रयोगशालामे पहुँचि गेल । ओ प्रयोगशालाक अधिकारीकेँ एसपी साहेबक पत्र देलक । पत्रमे सभबात ओ फरिछा कए लिखि देने रहथि ।

“मुदा जाँचक रिपोर्ट अएबामे कम सँ कम दस दिन लागत। तेँ अखन अहाँ जाउ । एसपी साहेब निश्चिंत रहथि । हमसभ पूर्ण सतर्कतासँ ई काज करब जाहिसँ कोनो हेराफेरी नहि भए सकत।”

प्रयोगशालाक अधिकारी बाजल ।

“तहन तँ चिंताक कोनो बाते नहि । फिलहाल हम जाइत छी । जखन रिपोर्ट आबि जाइ तँ एसपी साहेबकेँ सूचित कए देबनि।”

“ठीक छैक ।”-से कहि पीए साहेब ओतएसँ लौटि गेल । वापस अएलाक बाद एसपी साहेबकेँ सभटा बात कहलकनि।

“हमरा पता चलि चुकल अछि । ओतएसँ फोन आएल छल । तूँ अपन आओर काजसभमे लागि जाह ।”

ठीक दस दिनक बाद एसपी साहेबकेँ ओहि प्रयोगशालासँ फोन आएल ।

“सर! रिपोर्ट तैयार अछि ।”

"तखन?"

"कही तँ हम अपन आदमीसँ पठा दी ।"

"जँ किछु एमहर-ओमहर भए गेल तखन? हम अपन पीएकेँ पठा रहल छी । ओकरे हाथे रिपोर्ट पठा देब ।"

"कोनो बात नहि ।"

एसपी साहेब पीएकेँ बजा कए सभटा बात कहलखिन । इहो कहलखिन जे एहि विषयमे ककरोसँ चर्चा नहि कएल जाए ।

"जी सरकार!"

पीए साहेब तुरंत ओतए बिदा भए गेलाह । कनिके आगु गेल हेताह कि झमाझम वर्षा होबए लागल । तथापि ओ भीजले-तितले प्रयोगशाला पहुचि गेलाह । संयोग एहन भेलैक जे हुनका प्रयोगशाला पहुँचितहि वर्षा सेहो रुकि गेलैक । ओ प्रयोगशालामे रिपोर्ट लेलाह आ चोट्टे वापस भए गेलाह । जखन ओ एसपी साहेबक कार्यालय पहुँचलाह तँ पता लगलनि जे ओ अखने कोनो जरूरी काजसँ बाहर गेलाह अछि । ओ अपन सीटपर जा कए बैसले हेताह कि एसपी साहेबक फोन आबि गेलनि ।

"हमरा किछु जरुरी काजसँ जाए पड़ल । घंटाभरिमे वापस भए जाएब । ताबे तूँ कतहु नहि जइअह ।

ठीक छैक सर! पीए भीजले देहे हुनकर प्रतीक्षा करैत रहल। एसपी साहेब अएलाक बाद सभसँ पहिने ओएह रिपोर्ट पढ़लनि । ई तँ गजब बात बुझा रहल अछि । अपूर्वाक डीएनए ने चिन्मयसँ मेल खाइत अछि ने दीपांकसँ । रागिनीक योगदान तँ स्पष्ट

अछि । मुदा दोसर पक्षके थिकाह? हुनकर जानकारी कोना भेटत? खैर! जे बात छैक से छैक । हम ओकरा की कए सकैत छी? तेँ तँ ई जाँचसभ लोक नहि करबैत अछि । ककर डंक ककरा लागल तकर कोन ठेकान,ओहो एहि विद्या निकेतन परिसरमे । एसपी साहेब कनीकाल सोचैत रहलाह । फेर पीएकेँ बजेलखिन-

तूँ काल्हि दस बजे दीपांक,रागिनी आ चिन्मयकेँ हमर घरक कार्यालयपर बजाबह । तूँ अपनो ओतहि रहिअह।

ठीक छैक सरकार ।

पीए साहेब तीनूगोटेकेँ एसपी साहेबक हुकुमक जानकारी करबा देलथि । ताहि हेतु गोपनीय शाखाक अत्यंत विश्वस्त सिपाहीकेँ पठाओल गेल ।

प्रातभेने दीपांक आ चिन्मय ठीक दस बजे एसपी साहेबक घरपरक कार्यालय पहुँचि गेलथि । पीए साहेब सेहो आबि गेल रहथि । मुदा रागिनी नहि आयल छलि । एसपी साहेब हुनको अएबाक हेतु कहने रहथिन । तेँ किछु काल प्रतीक्षा करैत रहलाह। मुदा जखन हुनका पता लगलनि जे रागिनीक मोन खराप छनि आ आबएसँ असमर्थ छथि तँ ओ आगु बढ़लाह । कार्यालयमे चिन्मय आ दीपांक आमने-सामने बैसल रहथि । बीचमे एसपी साहेबक कुर्सी लागल छल । ओ कखनहु दीपांककेँ देखथि तँ कखनहु चिन्मयकेँ । हुनका मोने-मोन कैकबेर हँसी लागनि ।

"ई सभ केहन मूर्ख अछि । आबो आपसमे लड़ि रहल अछि , ओहो ओहि बातक लेल जाहिमे कोनो हाथ-पैर अछिए नहि।"

आखिर चिन्मयकेँ नहि रहल गेलैक। ओ पुछि बैसल-

"की बात छैक? अपनेकेँ बहुत परेसान देखि रहल छी ।"

"परेसान हम नहि अहाँसभ होबएबला छी?"

"की बात?"

"बात की रहतैक? डीएनए रिपोर्ट गड़बड़ आएल अछि।"

"की छैक?"

"रिपोर्टक अनुसार अपूर्वाक डीएनए रागिनीसँ तँ मिलैत छैक मुदा दीपांक वा चिन्मयक डीएनएसँ बिल्कुल मेल नहि खाइत छैक।"

"तखन?"

"तखन की। ई बात स्पष्ट अछि जे अहाँ दुनूमेसँ केओ ओकर पिता नहि छी ।"

चिन्मय आ दीपांक-दुनू एक-दोसरक मुँह देखैत रहि गेलाह।

"आब समस्या अछि जे ई तेसर आदमी के अछि?"

"रागिनीकेँ पता हेतनि।"-चिन्मय बजलाह ।

"मुदा ओ तँ अहिठाम अएबासँ पहिने मना कए देलथि । संभवतः हुनका अंदाज छलनि जे की होबए बला अछि?"

“मुदा हमरासभकेँ तँ कहि दितथि । हमसभ अनेरे आपसमे लड़ि रहल छी ।”

“अखन अहाँसभ अपन-अपन घर वापस जाउ । चैनसँ चिंतन करू जे की करबाक अछि । हमरा हिसाबे व्यर्थक विवादमे पड़लासँ किछु लाभ नहि होबए बला अछि ।”-से कहि एसपी साहेब उठि कए चलि गेलाह ।

26

एसपी साहेब डेरामे एकांतमे बैसल छलाह । हुनकर ध्यान अचानक कामिनीक डायरीपर चलि गेलनि ।

ओ डायरीक पन्नासभकेँ उल्टा-पुल्टा कए पहिनो कैकबेर देखने रहथि । मुदा ओकरा पढ़बाक साहस नहि होनि । आइ फेर ओ डायरी हुनकर हाथमे छलनि । ओकरा एकटा पन्ना उनटओलथि। मुदा एहिबेर ओकरा बिना पढ़ने आगु नहि बढ़ि सकलाह ।

"प्रिय मयंक,

हम बहुत दिनधरि तोहर बातपर विश्वास करैत रहलहुँ । इएह हमर जीवनक भयंकर गलती साबित भेल । हम नहि बूझि सकलहुँ जे तूँ सेहो सएह छह । अनकासँ कनीको फराक नहि । जाबे तोरा हमरासंगे सुख भेटबाक मौका छलह ताबे तँ तूँ तरह-

तरहक व्योंत कए अबैत-जाइत रहलह । तोरा कारण हमरा की-की ने सहए पड़ल। लोकसभ की-की ने कहलक । मुदा हम अड़ल रहलहुँ । मुदा जखन बात ओझराएल तँ तकरा सोझराबक स्थानपर चुपचाप घसकि गेलह । आब एहि हालतमे हम की करू? कतए जाउ? जकरे कहबैक सएह हँसत,मौकाक फएदा उठाबक प्रयास करत । हम कतहु चलिओ जइतहुँ । फेर कहिओ एमहर पैर नहि दितहुँ । मुदा हम अखन असगर नहि छी । हमरा संगे एकटा निर्दोष जीवनक सृजन भए रहल अछि । ओकरा कोना धोखा दए सकैत छी? जन्म हेबासँ पूर्वहि ओकर जीवन कोना लए सकैत छी? मुदा तोरा एहिसभसँ कोन मतलब? मुदा समय ककरो नहि होइत अछि। हम तँ जा रहल छी । कोनो कीमतपर एहि निर्दोष जीवनक रक्षाक हेतु एहि परिसरकेँ सदा-सर्वदाक हेतु छोड़ि रहल छी । आगु भगवानक इच्छा।"

ओकर बाद कामिनीकेँ कतहु नहि देखल गेल । ओ कतए गेलि,कोना रहलि,ओकर संतानक की भेलैक? कोनो बातक किछु पता नहि लागि सकल । मयंक एसपी भए गेलाह । राज-काजमे लागि गेलाह। मुदा हुनका ई घटना हुनकर हृदयमे तेहन चोट दए गेलनि जे दोबारा ओहि मार्गपर जेबाक साहस नहि भेलनि । फेर कहिओ ककरो संगे रागात्मक संबंध नहि बना सकलाह,ने बिआह कए सकलाह । एकरे कहैत छैक भावी। जखन करवनो ओ डायरी देखैत छलाह तँ पुरनका घाव हरिआ जाइत छलनि । तँ ओ डायरीकेँ पढ़बाक साहस नहि कए सकलाह । आइ संयोग एहन भेलैक जे

ओ डायरी उनटओलथि,पढ़ौ लगलाह । मुदा एकहि पन्नामे तेहन बम फुटल जे ओतहि हाथमे लकबा मारि देलकनि। आँखि बंद भए गेलनि । हृदय चित्कार कए उठलनि । मुदा एहिसभसँ आब की होबए बला अछि?

किछुए दिनक बाद कामिनीकेँ सदर अस्पतालमे संतान भेलैक। केओ दोसर ओकरा संगे नहि रहैक । ओहनो हालतमे ओ एसगरि स्वयं अस्पताल पहुँचल छलि । ओतए अस्पतालक मुख्यद्वारिपर बेहोश भए खसि पड़ल छलि । तकरबाद जखन ओकरा होश भेलैक,आँखि खुजलैक तँ ओ अस्पतालमे छलि । हुनकर संतानक जन्म भए गेल रहनि । लगमे दुधपीबा रहि-रहि कए अपन करुण क्रंदनसँ सौंसे वार्डक मनुष्यताकेँ हिला कए राखि देने छल ।

“केओ तँ हेतनि हिनकर संगे?”-लोकसभ बजैक ।

“सएह कहू । केहन कठोर छैक एकर घरक लोक जे एहन हालत देखिओ कए सुन्न भेल छैक ।”

“की पता की बात छैक ? कहीं एमहर-ओमहर ने केने होइक ।”

जतेक आदमी ततेक तरहक बात । के ककर बातक उत्तर देत?

सरकारी अस्पतालमे जतए कोनो सुबिधा नहि छल,जतए सिफारसीसभक मात्र काज नीकसँ होइत छल,ताहिठाम कामिनीक संतानक सुरक्षित जन्म लेलक,कामिनी स्वयं सेहो ठीक छलि । मुदा

संयोग एहन भेलैक जे ओही राति एकटा आओर महिलाकेँ ओकरे बगलमे संतान भेलैक ।लगभग एकहि संगे ।ओहि महिलाक नाम छलैक रागिनी ।रागिनी आ कामिनी नामो मिलैत-जुलैत छलैक । ओहिठाम काज कए रहल सिस्टरक गलतीसँ दुनू बच्चा बदलि गेलैक आ कि जानि कए बदलि देल गेलैक , कहल नहि जा सकैत अछि ।मुदा रागिनी ई सभ देखि रहल छलि। ओ जोरसँ हल्ला केलक । ततेक जोरसँ हल्ला केलक जे सभटा डाक्टर,नर्स,आ बहरिआ लोकसभ जमा भए गेल ।

“बातकी छैक? बात की छैक ?”- सभक मुँहमे एतबे बात। अस्पतालक निदेशक हल्ला सुनिकए स्वयं अएलाह ।ताबे तँ मिडिआक करमान लागि गेल छल ।निदेशक महोदय रागिनीक बात मानि ओकर संतान वापस दिआ देलथि। रागिनी शांत भए गेलि। मुदा कामिनीक कतहु पता नहि छल । ओ अन्हरोखे अस्पताल छोड़ि कए चलि गेलि ।निदेशक संगे घुमि रहल डाक्टरक काफिलाक लेल ई समस्या भए गेल ।आब एहि बच्चाक की कएल जाए? एकर माए कतए गेल? अस्पताल प्रशासन बहुत दिनधरि कामिनीक बाट तकैत रहल ।कामिनीक किछु पता नहि चलल । ओ नवजात संतानकेँ अस्पतालमे छोड़ि जे निपत्ता भेल से घुरि नहि आएलि ।अएबो ककरा लग करैत?आखिरओकर नवजात संतान अनाथालयमे राखि देल गेल ।

मुदा कामिनीक स्मृति मयंकक मोनमे सदति बनले रहल ।

27

एसपी मयंक द्वारा कराओल गेल डीएनए जाँचसँ मामिला सोझरएबाक बदलामे आओर ओझरा गेल । एतबा तँ तय भेल जे रागिनी अपूर्वाक माए छथि । मुदा चिन्मय आ दीपांक छोड़ि ओ तेसर आदमी के छथि? आब ई नव पेंच तेहन कए फँसि गेल जे सभ परेसान भए गेल । सभसँ बेसी परेसानी तँ रागिनीकेँ भेलैक । ओकरा तँ से सभ बूझले रहैक । मुदा बात पुरान भए गेल रहैक । सभकिछु बिसरा गेल रहैक । ने ओ सभ अपूर्वाक आनबाक प्रयास करितथि ,ने एहन घनचक्करमे पड़ितथि । मुदा आब तँ जे हेबाक छल से भए गेल । मामिला सोझरेबाक बदला आओर ओझरा गेल। रागिनी आ दीपांकमे दिन-राति झगड़ा होबए लागल ।

रागिनी आ दीपांकक आपसी विवाद बढ़िते गेल । कैकबेर तँ दुपहरिआ रातिमे दुनूगोटेमे ततेक चिकरा-भोकरी होइत जे लगपासक लोकसभ परेसान भए जाथि । लोकसभ अपना भरि दुनूगोटेकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलक । मुदा कोनो सुधार नहि भेलैक । दीपांककेँ लगैक जे रागिनी ओकरा ठकलक ,सत्य बात नहि कहलक । जौँ ओ सभटा बात कहने रहैति तँ ई मौके नहि अबैत । अनेरे चिन्मय संगे विवाद किएक कएल जाइत? ओना ओकरो कहब ठीके रहैक । चिन्मय तँ चिकरि-चिकरि कए दीपांककेँ कहैक-"अपूर्वा हमर संतान नहि अछि ।" मुदा दीपांकोक सक अपना भरि ठीके रहैक । ओ सभ की जाने गेलाह जे एहि मामिलामे

केओ तेसरो थिकाह? से बात तँ रागिनीकेँ फरिछाबक रहैक। मुदा ओ अपन पैरमे अपने कुरहरि कोना मारैत? एहि अवसरवादिताक परिणाम अपूर्वासँ जुड़ल विवाद छल । अपूर्वाकेँ बादमे बुझाए लागल रहैत जे चिन्मय ओ नहि थिक जे ओकरा बूझल जा रहल छैक । ओकर मोन चिन्मयकेँ पिता मानबाक हेतु कैक बेर तैयार नहि होइक । मुदा ओकर पालन-पोषण तँ चिन्मये केने रहथि । अपना भरि जे संभव छलनि,से केलथि । ई बाद अलग थिक जे एकदिन अपूर्वा झटकि कए चिन्मयसँ फराक भए गेलि । ओहो घरेसँ नहि,ओकर मोनोसँ । कतेक की बात छैक,की-की भेलैक से लोक की जाने गेलैक । लोक तँ एतबे बुझैक जे तात्कालिक किछु मतभेदक कारण दुनूगोटे फराक रहि रहल अछि। जे से । बात आब बहुत गंभीर रुखि लए लेने छल । रागिनीकेँ आब दीपांकक संगे एकहु क्षण बिताएब पराभव भए रहल छलैक । एकदिन भोरुकबेमे ओ दीपांककेँ सुतले छोड़ि बिदा भए गेलि । रागिनी एक-दू दिन विद्या निकेतनक लगपासमे रहलथि आ एकदिन अहल भोरे पैर-पैरे नदीक कातमे पहुँचि गेलि। बहुत रास लोकसभ प्रातः भ्रमण कए रहल छलाह । चिन्मय सेहो प्रातः भ्रमण कए रहल रहथि। एतबेमे हुनका नदीमे आगा बढ़ैत रागिनी देखेलनि । ओ दौरलाह । जोर-जोरसँ आबाज देलनि-“ठहरु, एना नहि करू ।” जाबे ओ रागिनी धरि पहुँचितथि ताबे तँ ओ नदी मे विलीन भए गेल रहथि । ओकरा बचेबाक प्रयासमे ओकर पछोड़ धेने चिन्मय सेहो नदीमे कुदि गेलाह। देखिते-देखिते ओहिठाम लोकक करमान लागि गेल ।

हमहु अपन संगी संगे लगे-पासमे प्रातः भ्रमण कए रहल छलहुँ । लोकसभक मुँहे चिन्मयकेँ नदीमे डुबि जेबाक समाचार सुनलहुँ । मुदा ई केओ नहि कहि पाबए जे आखिर ओ किएक डुबि गेलाह । हमर उत्सुकता कम नहि भए रहल छल । तेँ हम आओर आगा बढ़लहुँ । ओहिठाम किछु गोटे ठाढ़ छलाह । ओ सभ दुनूगोटेकेँ नदीमे डुबैत सद्यः देखने रहथि । हुनकेसभसँ सभ बात पता लागल। एहि घटनाक समाचार सुनि एसपी मयंक किछु गोताखोरसभक संगे पहुँचलाह । चारूकात महाजाल फेकल गेल । मुदा हुनका दुनूगोटेक किछु पता नहि चलि सकल ।

चिन्मयक नदीमे एहि तरहें डुबि जेबाक समाचार देखिते-देखिते सौंसे परिसरमे पसरि गेल । हम सोचिते रही कि अपूर्वाकेँ समाद दिऐक कि अपूर्वा स्वयं हकासलि-पिआसलि ओहिठाम पहुँचि गेल । हम ओकर हाल देखि बहुत परेसान भए गेलहुँ । अपना भरि ओकरा शांत करबाक प्रयास केलहुँ । मुदा ओकर आँखिक नोर झहरैत रहि गेल । एकहु क्षण हेतु ओ ठहरबाक नामे नहि लए रहल छल । ओकर ई हाल देखि एसपी मयंक सेहो बहुत चिंतित रहथि । अफसोचक बात तँ ई रहैक जे लाख प्रयासक अछैत ने चिन्मयक पता चलि सकल ने रागिनीक।

हम अपूर्वाकेँ अपना भरि बहुत बुझबिऐक । मुदा अपूर्वा किछु सुनबाक,बुझबाक स्थितिमे नहि छलि । घंटो नदीक कछारमे एकसरि बैसलि रहलि ,कनैत रहलि । ओकरा मोनमे कतहु-ने-कतहु अपराधवोध छलैक । रहि-रहि कए ओकरा मोनमे होइक जे जँ ओ

चिन्मयसँ फराक डेरा नहि लेने रहैत तँ साइत ई घटना नहि होइत। मुदा ई सभ सोचलासँ आब की फएदा? जखन भरिदिनक प्रयासक बादो किछु पता नहि लागल तँ हम अपूर्वाकैं बहुत मोसकिलसँ ओकर कोठरी धरि वापस अनलहुँ । अपूर्वाक कैकटा संगीसभ राति भरि ओकरे संगे रहि गेलि ।

भोरे मयंक अपन डेराक ओसारामे बैसल चाह पीबि रहल छलाह,संगे अखबारो पढ़ि रहल छलाह । अखबारक मुखपृष्ठपर मोट-मोट अक्षरमे रागिनी आ चिन्मयक डुबि जेबाक समाचार छपल छल । केओ कहए जे ओ सभ जान-बूझि कए डुबि कए आत्महत्या कए लेलक । केओ कहए जे दुर्घटना भए गेलैक । मुदा एकटा प्रत्यक्षदर्शीक सुचना सही रहैक । ओ लिखने छल-

"हम नदीक काते-काते भोरे टहलैत छलहुँ कि अचानक एकटा महिला नदीमे छलांग लगओलक । ओकरा बचेबाक हेतु लगेमे टहलि रहल एकटा बूढ़ नदीमे कुदि गेलाह । देखिते-देखिते दुनू गोटे नदीमे बिला गेलाह । गोताखोरसभ बहुत प्रयास केलक । मुदा ककरो किछु पता नहि लागि सकल ।

28

ओहि दिन ओसारामे बैसल चाह पीबैत काल मयंकक ध्यान अचानक कामिनीक डायरीपर चलि गेलनि । ओना ओ ओहि डायरीकेँ बिसरि जाए चाहैत छल। एकदिन तँ ओकरा नष्ट कए देबाक प्रयास सेहो केलनि। ओकर एक-दू पन्ना फारिओ देलथि । मुदा तकर बाद कहि नहि किएक हुनका अफसोच होबए लगलनि।

" हमरा लगमे इएह तँ कामिनीक निसान बाँचल अछि । कहि नहि एहिमे ओ की-की लेखने छथि ? हुनकर जीवनक कोन जानकारीसभ ओहिमे गुप्त राखल अछि? कम सँ कम हमरा एकबेर ओकरा पढ़बाक चाही ।”

तकरबाद फटलाहा पन्नाकेँ कहुना कए फेरसँ साटि देलिऐक । आइ डायरी उनटबितहि ओएह पन्ना उघरि गेल-

“रागिनी आ हम कैकसालसँ संगे पढ़ि रहल छी । दुनूगोटे बहुत दिनधरि संगे एकहि कोठरीमे रहलहुँ। एमहर आबि कए हमरासभकेँ फराक-फराक कोठरी भेटल अछि । मुदा दुनू कोठरी छैक लगे-पासमे । तेँ जखन मोन होइत अछि हम ओकरा कोठरीमे चलि जाइत छी वा रागिनी हमरा कोठरीमे आबि जाइत अछि । लगिते नहि अछि जे हमसभ फराक-फराक कोठरीमे रहैत छी । एकराति गप्प करैत-करैत रागिनी हमरे कोठरीमे सुति रहल। भोर होबए बला रहैक । हम ओकरा सुतले छोड़ि कए लगीचे पार्कमे

टहलए चलि गेल रही । वापस अएलहुँ तँ मयंककेँ ओहि कोठरीमेसँ निकलैत देखलहुँ । संभवतः ओ हमरा तकैत आएल होएत । मुदा हम तँ ओतए रही नहि । रागिनी हमरा किछु कहबो नहि केलक । मुदा ओकर अस्तव्यस्तता बहुत किछु कहि रहल छल । रागिनीक चुप रहि जेबाक प्रयासपर हमरा मोने-मोन हँसी लागि रहल छल । मुदा हमहु चुप्पे रहि जाएब उचित बुझलहुँ । आखिर एहिठाम ई कोनो नवबात तँ छलैक नहि । के ककर-ककर हिसाब करैत रहैत?”

मयंक ओहि पन्नाकेँ आगु नहि पढ़ि सकलाह । तुरंत ओकरा ओतहि बंद कए विचारमग्न भए गेलाह । मयंक स्वयं ओकरसभक डीएनए रिपोर्ट पढ़ि चुकल रहथि । तखनेसँ हुनकर मोनमे खुटका भए रहल छलनि? हुनकर अपने मोन बेर-बेर पुछैत छल-" ई तेसर आदमी के? कहीं हमही तँ ने?" आब तँ हुनका डीएनए जाँचसँ भयानक डर होबए लगलनि । की पता? कहीं हमहु एकर चपेटमे आबि गेलहुँ तखन ? हुनका होनि जे विज्ञान एहि सभक अविष्कार कए समाजक बहुत क्षति केलक अछि । नहि तँ कतेको रहस्य रहस्ये रहि जाइत छलैक । आब तँ के कखन नाङट भए जाएत तकर कोनो ठेकान नहि ? की करत पुलिस आ की करत थाना?

मयंक सोचैत-सोचैत सुन्न भए गेलथि । हाथसँ डायरी नीचा खसि पड़लनि । डायरी खसबाक आबाजसँ हुनकर भक्क टुटलनि । कहीं डायरी ककरो हाथ ने लागि जाइ? ओ धरफराएल सीढ़ीसँ नीचा उतरलाह । हुनकर डेराक सामनेसँ साँढ़ जा रहल

छल। ओ डायरी साँढ़क आगुएमे खसल रहैक । साँढ़ डायरीकेँ खेबाक प्रयास केलक। किछु पन्ना खाइओ गेल । शेष यत्र-तत्र छिड़आ देलक। मयंक नीचा उतरितहि डायरीक दुर्दशा देखि क्षुब्ध रहि गेलाह। साँढ़सँ डायरीकेँ बचेबाक प्रयासमे ओ ओकरा बहुत लगीचमे पहुँचि गेल रहथि । साँढ़ हुनका बड़ी जोरसँ झटका देलक। मयंक अपने मकानक लगीचमे बीच सड़कपर चारूनाल चित्त खसि पड़लाह। हुनकर ई हालत देखि लोकसभ दौड़ल । किछु पुलिससभ सेहो दौड़ल । ओ दर्दसँ बफारि तोड़ि रहल छलाह । हुनकर जांघक हड्डी टुटि गेल रहनि । भयानक दर्द भए रहल छलनि । रोगी-बाहन बजाओल गेल । हुनका तुरंत अस्पतालक आपत्तिकालीन विभागमे भर्ती कराओल गेल ।

29

मयंक मासदिन अस्पतालमे पड़ल रहि गेलाह । हुनकर रीढ़क हड्डी बहुत क्षतिग्रस्त भए गेल रहनि । डाक्टरसभ कैकटा शल्यकृया केलनि । मुदा परिणाम अनुकूल नहि भए सकल । असलमे ओ पहिनेसँ कैकटा विमारीसँ ग्रस्त छलाह । सुगर,बल्डप्रेसर आ कहि ने कथी-कथीक इलाज चलि रहल छलनि। ऊपरसँ भोजनप्रेमी सेहो छलाह । किछु छुटबाक नहि चाही । मौका भेटनि तँ पचास-साठिटा रसगुल्ला दबा देथिन । कहथि-" जे हेबाक छैक से होउ । तेँ की रसगुल्ला खेनाइ छोड़ि

देब।" जहन कोनो संयम करबे नहि करथि तँ दबाइ कतेक काज करितनि । करवनो बेहोश भए जाथि तँ करवनो किछु आओर समस्यासभ भए जानि । एहन हालतमे शल्यकृयासभ करए पड़लैक। घाव भरबे नहि करैक । अस्पतालमे पड़ल-पड़ल मोन औंट होइत छलनि । मुदा उपाय की छल? कम सँ कम चलबा-फिरबा जोगर भए जैतथि तरवन ने?जाबे कुर्सीपर बैसथि ताबे दिन-राति लोकक करमान लागल रहैत छलनि । मुदा आब तँ दिनभरि बाट तकलोपर साइते केओ हाल-चाल पुछितनि । अपन परिवार रहनि नहि । गामपर रहनिहार लोकसभसँ कहिओ कोनो मतलब राखथि नहि । तरवन ओहोसभ किएक हाल-चाल लितनि ।

एकदिन साँझमे हमरा हुनकासँ भेंट करबाक हेतु पहुँचलहुँ। मरीजसँसँ भेंट करबाक समय बीति गेल रहैक। तथापि, हम आग्रह केलिऐक तँ द्वारिपर ठाढ़ पहरुआ मानि गेल,हमरा अंदर जाए देलक । स्वागतीकेँ कहलिऐक -

“मयंक साहेबसँ भेंट करबाक अछि ।”

"ओ तँ आइ दुपहरिएमे गुजरि गेलाह।”

“से की भेलैक?”

“बेसी बात तँ हमरो नहि बूझल अछि । अहाँ डाक्टर महेशचंदसँ गप्प कए लिअ । ओएह किछु कहताह।"

हम भागल-भागल डाक्टर महेशचंद लग पहुँचलहुँ । हुनका बहुत गोटे घेरने छलनि । कैकटा पुलिससभ सेहो ठाढ़ छल।

ओहोसभ मयंकेक जिज्ञासा कए रहल छलाह । सभक मोनमे एकहि बात? " आखिर भेलैक की ?"

डाक्टर महेशचंद कैकबेर कैकगोटेकेँ सभबात कहि चुकल रहथि । तथापि जे नव लोक आबए ओएह सबाल लए कए ठाढ़ भए जाए । अंततोगत्वा, डाक्टर साहेब ओहिठामसँ घसकि गेलाह। पुलिसक जबानसभ शवगृह दिस जा रहल छल । हम ओकरेसभक पाछा-पाछा बिदा भए गेलहुँ ।

दोसरदिन भोरे नदीक कातमे मयंकक अंतिम संस्कार भए रहल छल । सहरक नामी लोकसभ ओतए उपस्थित रहथि। विद्या निकेतन परिसर तँ जेना उलटि गेल छल । हमहु किछु संगीसभक संगे ओतए उपस्थित रही । मयंकक आकस्मिक निधनसँ सभ स्तब्ध रहथि,दुखी रहथि,अफसोच करैत रहथि । ओतहि एकटा सिस्टर लिफाफा लेने हमरा दिस बढ़लीह ।

“की छैक?”

“ई लिफाफा मयंकक सिरमामे भेटल छल ।”

हम ओकरा खोलैत छी । लगपासमे ठाढ़ गणमान्य व्यक्ति सभ सेहो सहटि कए हमरा लगमे आबि जाइत छथि। हम उत्सुकतासँ ओहि लिफाफामे राखल पत्रकेँ पढ़ए लगैत छी-

“विद्या निकेतन परिसर हमर अपन सभसँ प्रिय स्थान रहल अछि । ओतए हम अपन जीवनक कतेको महत्वपूर्ण साल बितओने छी । हम बेसक एसपी बनि गेलहुँ ,बड़का-बड़का लोकसभक संपर्कमे आएलहुँ मुदा जे आनंद हमरा ओहि परिसरमे

भेटल से कतहु नहि भेटि सकल । एमहर अपूर्वाक मामिलाक जाँचक हेतु हमरा कैकबेर परिसरमे जेबाक मौका भेटल । हम बहुत प्रसन्न भेल रही। कैकटा पुरान,बिसरल बातसभ फेरसँ मोन पड़ि गेल रहए । संयोग एहन भेलैक जे हमरा अपूर्वाक मामिलाक प्रसंगमे जाँच करबाक रहए । हम ई बात शुरुएसँ जनैत रही जे एहि मामिलाक समाधान हमरे लग अछि । मुदा तकरा उद्घाटित करबाक साहस नहि होअए। हम चुप्पे रहि जाइ । होअए जे हमरा किछु बाजि देलासँ कहीं अपूर्वाक जिनगी आओर ने ओझरा जाइ । मुदा हमर इएह चुप्पी ओकरा लेल बहुत भारी पड़लैक । आइ अपूर्वा कतहु के नहि अछि। ओ एकटा तेहन समस्यामे ओझरा गेल अछि जकर समाधान ओकरा आओर दुखी कए देतैक आ जँ समाधान नहि भेलैक तखन तँ दुखी अछिए। ई सभ जनितो हम चुप्पे रहि गेलहुँ । मुदा आब हमरा चुप रहि जाएब उचित नहि बुझा रहल अछि । हम तँ जाइए रहल छी,मुदा हम नहि चाहैत छी जे अपना संगे अपूर्वाक ओ हक छिनने चलि जाइ जाहिसँ ओ अखनधरि बंचित रहि गेलि । सत्य आ असत्यक चक्रव्युहसँ जीवन हमरा शीघ्रे मुक्त कए देत,से लागि रहल अछि । तेँ हम ई बात साफ कए दैत छी जे अपूर्वाक पिता केओ आओर नहि हमही छी । अहाँ पुछि सकैत छी-"तकर प्रमाण?"

अहाँक प्रश्नक जबाब एही लिफाफामे राखल डीएनए रिपोर्टमे भेटि जाएत ।

हम स्वयं बहुत दिनधरि दुविधामे रही । मोनमे कैकबेर तरह-तरहक बातसभ अबैत रहल । आखिर हम तकर निराकरण करबाक हेतु डीएनए जाँच हेतु अपनो नमूना देलिऐक । तकर बाद तँ जेना सभकिछु साफ भए गेल । हम तैओ एकरा प्रकट नहि कए सकलहुँ । जे भेलैक से अकस्मात भेल रहैक। तकर किफाइत देबाक आब की औचित्य रहि गेल? तेँ हमर निवेदन अछि जे अपूर्वाकेँ ओ सम्मान, हक भेटनि जकर ओ अधिकारी शुरुएसँ छथि। संगहि हम अपन समस्त संपत्ति हुनके नाम करैत छी। ओएहटा हमर असली आ एकमात्र उत्तराधिकारी छथि । हम...”

ओ किछु आओर लिखए चाहने हेताह। देखिते-देखिते हुनकर जीवनक घंटी बाजि गेल । कलम हाथसँ खसि पड़लनि । चिठ्ठी अपूर्ण रहि गेल ।

30

आइ बहुत दिनक बाद ऐकबेर फेर परिसरमे चहल-पहल छल । विद्या निकेतनक भूतपूर्व आ वर्तमान शिक्षक आ विद्यार्थीसभक भेटघांटक अवसर छल। कतेको हराएल-बिसराएल मित्र लोकनिक भेंट भए रहल छल । मुदा कैकटा चिर-परिचित लोकसभ ओतए नहि देखाइत छलाह । चिन्मय,रागिनी,मयंकक आकस्मिक निधन भए गेल छल । बहुत

रास पुरान विद्यार्थीसभ एहिबेर नहि आएल छलाह । संभवतः ओ सभ अपन दुनिआमे रमि गेल छलाह । कतेको विद्यार्थीसभ परिसरसँ निकलि अपन दुनिआ बसा लेने छलाह । अपन परिवारमे रमि गेल रहथि । मुदा यामिनी किएक नहि आएलि? ई प्रश्न हमरे नहि कैकगोटेक मोनमे खटकि रहल छलनि । मानि लिअ जे कोनो जरुरी काज भए गेलनि,किछु बात भए गेलनि तँ कम सँ कम हमरा तँ कहि सकैत छलि । कोनो कारणसँ जाइत काल नहि कहि सकलि तँ बादेमे सूचित कए दितथि । हम इएहसब सोचि रहल छलहुँ कि अंबुज हमरा बजओलथि-

"किछु पता लागल?"

"की भेलैक?"

"यामिनीक किछु अता-पता नहि छैक ।?"

"से के कहलक?"

"अरवने एकटा अज्ञात नंबरसँ फोन आएल छल ।"

"ओ गेलि कतए?"

"कहि नहि सकैत छी । मुदा ओ एतबा बाजल जे यामिनी लापता अछि । मुदा एहिसँ बेसी ओ किछु नहि बाजल। फोन कटि गेल ।"

"आखिर एहि घटनाक पाछु अछि के? कहीं किछु अनिष्ट ने भए जाए?"

"तैं तँ हम दौरल अहाँ लग आएल छी।"

“अखन एहि बातकेँ बेसी घोल नहि करू नहि तँ कार्यक्रम धएले रहि जाएत । अहाँ चुपचाप पुलिसकेँ खबरि कए दिऔक । काल्हि देखल जेतेक ।”

“ठीक छैक ।” -से कहि अंबुज चलि गेलाह ।

एमहर कार्यक्रम शुरु होइतहि हालमे दिवंगत भेल चिन्मय,रागिनी, आ मयंक सहित अनेको ज्ञात,अज्ञात लोकनिकेँ श्रद्धांजलि देबाक हेतु दू मिनटक मौन राखल गेल । तकरबाद सभसँ पहिने अपूर्वा मंचपर आबि कहैत छथि-

“बंधु लोकनि! ई बात बढ़िआँ थिक जे हमसभ हुनका लोकनिकेँ श्रद्धांजलि दी जे असमयेमे हमरासभकेँ छोड़ि गेलाह। मुदा से करैत हमरासभकेँ इहो सोचबाक चाही जे आखिर हुनकरसभक एहन हाल किएक भेलनि? कहक लेल ओ सभ आधुनिक विचारक छलाह,विद्या निकेतन सन प्रतिष्ठित संस्थानसँ पढ़ल छलाह। मुदा तकर की फएदा?स्वतंत्रताक नामपर ओ सभ जे करैत रहलाह तकर परिणाम की भेल? किएक चिन्मय आ रागिनी डुबि कए मरि गेलीह? किएक मयंक हमरा बारेमे सभ किछु जनितहुँ चुप रहि गेलाह जाहिसँ हमर जीवन नर्क भए गेल । किएक ने समय रहिते ओ सत्य बात बाजि सकलाह जाहिसँ चिन्मय ,आ रागिनीक जीवनक रक्षा भए सकैत। हमहु एतेक झंझटसँ बँचि जइतहुँ । ओना रागिनीक दोष ककरोसँ कम नहि रहैक । मुदा की कहल जाए? भए सकैत अछि जे ओ विवश रहल होअए । ओकरा चुप रहए पड़ल होइक । ओ चाहिओ कए सत्य नहि बाजि सकल होथि।

सभकेँ अपन-अपन मजबुरी रहल होएतैक । मुदा हमर की दुर्दशा भेल ? हम ककरा जा कए कहबैक-जे मयंक हमर पिता छलाह। एहन पिता जे कानूनक रक्षक होइतो स्वयं गुनहगार छलाह ।”

“छोड़ू ई बितलाहा बातसभ । अरवन टटका समाचार सुनि लिअ। परिसरसँ यामिनी लापता भए गेल अछि । ओ कतए अछि, कुन हालतमे अछि से ककरो चिंता नहि छैक । सभ एहिठाम उत्सव मन रहल अछि । सभकेँ ई समाचार बूझल छनि तथापि सभ नाच-गानमे लीन अछि।”

अपूर्वा बजिते जा रहल छलि । ताबतेमे किछु युवकसभ मंचपर चढ़ि गेल । ओहीमेसँ केओ बजैत अछि-

“अनकापर आरोप लगाएब आसान होइत अछि । मुदा जखन अपनापर पड़ैत छैक तखन सभ बात पाछु रहि जाइत अछि। जँ अहाँकेँ यामिनीक लापता हेबाक जानकारी छल तँ मंचपर भाषण करए किएक अएलहुँ? कोनो उपाय करितहुँ,थाना-पुलिस जइतहुँ।”

एहि तरहे तरह-तरहक आरोप-प्रत्यारोप होबए लागल । चारूकात अशांति पसरि गेल । गाना-बजानाक तँ सबाले नहि छल। एतबहिमे ओहिठामक बिजली गुल भए गेल । किछुगोटे एमहरसँ ओमहर भए गेलाह । जकरा जे मोन भेलैक से करए लागल। एहि अवसरक फएदा उठबैत सुरक्षामे तैनात लोकसभ स्वयं बोतलपर- बोतल घोटि रहल छलाह । केओ अपूर्वाकेँ सेहो घिचबाक प्रयास केलक। हम ओतहि रही । मोसकिलसँ अपूर्वाकेँ बचा सकलहुँ । आखिर ई कार्यक्रम आगु नहि चलि सकल ,हुर्र भए

गेल। थोड़ेक कालक बाद बिजली आबि गेल छल । ताबे लोकसभ यत्र-तत्र चलि गेल रहए। हमहु जेना-तेना अपूर्वाकेँ बचबैत अपन कोठरी धरि पहुँचलहुँ ।

31

हमसभ बहुत थाकि गेल रही । ओछाओनपर जाइते सुता गेल । भोरे उठलहुँ तँ अपूर्वा ओतए नहि रहथि । मोनमे चिंता भेल। पता नहि करवन ,केमहर चलि गेलि । ताबतेमे हुनका देखलहुँ चाह लेने हमरे दिस आबि रहल छथि । दुनूगोटे संगे चाह पिलहुँ । चाह पिबैते काल अपूर्वा जेबीसँ एकटा चिठ्ठि निकालि हमरा दिस बढ़बैत छथि।

"ककर चिठ्ठी छैक?"

"यामिनीक?"

"ओ अहाँकेँ कतए भेटल?"

"हमरा कतए भेटैत? हमर कोठरीमे केओ चिठ्ठी फेकि देने छलैक। भोरे उठलहुँ तँ सभसँ पहिने ओहीपर नजरि पड़ल ।"

"अहाँ एहिठामसँ गेलिऐक करवन?"

"छोड़ू ओ सभ । पहिने चिट्ठी पढ़िऔक।"- अपूर्वा हँसि दैत छथि।

"अपूर्वा,

तोरासँ बिना भेंट केनहि चलि जा रहल छी, तकर अफसोच अछि । असलमे हमर जेबाक मोन बहुत दिनसँ छल । मुदा एहन घटनाक्रम बनि गेल जे हड़बड़ीमे बिदा होबए पड़ल । अपन भावी संतानक संगे हम अमेरिका(सैन होजे) हुनका लग जा रहल छी। ओ जनमितहि अमेरिकाक नागरिक भए जाएत । एहिसँ नीक की भए सकैत अछि?

बेसी बात ओतए पहुँचलापर सूचित करबह ।

यामिनी”

“देखलिऐक ने । लोकसभ ओहि राति अनेरे बातकेँ बतंगर केने छल।”

“मुदा यामिनीकेँ एना नहि करबाक चाहैत छलैक ।”

“से किएक? इएह ने जे ओ अपन जीवन मनमाफिक जीबाक चेष्टा केलक। ताहिमे ककरो किछु बजबाक की औचित्य?”

हम गुम पड़ि गेलहुँ ।

समय बहुत वलबान होइत अछि । एक सँ एक समस्याक समाधान ओ कए दैत अछि । समयक प्रभावसँ दोस्त दुश्मन आ दुश्मन दोस्त भए जाइत अछि । राजा रंक भए जाइत अछि आ भिखमंगासभ कोठा पीटि लैत अछि । परिवर्तनक ई चक्र चलिते रहैत अछि । हम जाबे विद्यानिकेतनमे रही लागए जे एकर अतिरिक्त एहि दुनिआमे किछु अछिए नहि । दिन-राति ओतबे सोची,ओहीठामक घोल-फचक्कामे लागल रही । के ककर दोस्त बनि गेल,के ककरा छोड़ि देलक, के ककरा संगे विदेश चलि गेल , इएहसभ मोनमे घुमैत रहैत छल । माथमे आओर किछु अएबे नहि करैत छल । लगैक जेना विद्या निकेतनक दुनिआ एकदम फराक छल,ओतए ने दिन होइक ने राति । मुदा समय ककरो लेल ठाढ़ थोड़े रहैत अछि? कतबो केओ प्रयास केलक ओ समयक गतिसँ पाछा होइते नहि गेल,कतए कहाँ छुटि गेल,बिला गेल,निपत्ता भए गेल । आब तँ ओकर शेषांसो नहि भेटि सकैत अछि । परिसरमे लोक सभ अपन जबानीकेँ बूढ़ होइत देखलक,नव-नव लोकसभकेँ से सभ करैत देखलक जकर सेहन्ता ओकरा अपने मोनमे रहल हेतैक । ओएहसभ कुलपति भए गेल,आचार्य भए गेल ,की-की ने भेल । मुदा मोन तँ ओएह रहि गेलेक । तेँ परिसरक माहौल तहिना

रहि गेल । अतृप्त, असंतुष्ट आ कतहु बहकि जेबाक हेतु आतुर लोकक संग्रहालय बनि कए रहि गेल विद्या निकेतन ।”

हम ई सभ देखैत-सुनैत आजिज भए गेलहुँ । सभसँ दुख एहि बातसँ होइत छल जे आब अपूर्वा सेहो हमरासँ विमुख भए रहल अछि ,की भइए गेल अछि। अपूर्वाक संगे रहैत-रहैत हमरा भावुक लगाव भए गेल रहए । ओकरासंगे एकटा अपनत्वक वोध होइत छल । मुदा अपूर्वाक स्वभावमे,सोचमे,व्यवहारमे कोनो परिवर्तन लक्षित नहि भए रहल छल । गाहे-बगाहे हम ओकरा अपन मोनक बात कहबो करिऐक । मुदा ओ हँसि कए टारि दैत छलि । एहिसभसँ हमर मोन टुटि गेल । हम आब विद्या निकेतनसँ मुक्तिक हेतु छटपटा रहल छलहुँ । ओतए रहब आब हमरा लेल असंभव भए रहल छल ।

तँ एकदिन बिना ककरो कहने-सुनने हरिअरका बस पकड़लहुँ । ओ बस भोरे हमर गाम पहुँचा देलक । हम बससँ उतरैत छी । हमरा लगमे मात्र एकटा झोरा अछि जाहिमे किछु अप्रकाशित कवितासभक एकटा काँपीमे पड़ल अछि । एकटा सर्ट ,एकटा पैंट आ किछु डिग्रीसभक मूलप्रति । बस इएह थिक हमर कुल जमा पूँजी ।

गाममे अपन घर दिस जाइत मोनमे सोचाइत छल जे एतेक दिन हम की करैत रहलहुँ? झोरामे राखल किछु कागजक हेतु एतेकटा जीवन बिता लेलहुँ? थोड़बे कालमे हम अपन पैतृक घर पहुँचि गेलहुँ । बहुतदिनसँ ओतए केओ नहि रहल छल । हमर

माता-पिताक देहावसान बहुत पहिने भए गेल रहनि । हम हुनकर एकमात्र संतान छलिअनि । अपना भरि उत्तम शिक्षा देबाक जोगार केने रहथि । हम किछु बनितहुँ,किछु कए सकितहुँ ,ताहिसँ पहिने ओ सभ एहि दुनिआसँ चलि गेलाह ।

हम असगरे अपन मकानक ओसारापर ठाढ़ छलहुँ। की करी,की नहि करी से किछु नहि बुझा रहल छल । एकाध दिन ओहिना बिति गेल । बीच-बीचमे परिसरक प्रसंगसभ मोनमे अबैत-जाइत रहल । क्रमशः गामक लोकसभसँ भेंट-घांट सेहो होइत रहल।

एकदिन हम अपन गाममे ब्रह्मस्थानमे गौंवासँ गप्प करैत रही कि अंबुज आ दिव्याकेँ अबैत देखैत छी । हमर आश्चर्यक कोनो ठेकान नहि छल । हम चिचिआ उठलहुँ-

“तूँसभ अचानक एहिठाम...”

“हम तँ एमहर बाटे जाइते रहैत छी । हमर सासुर लगीचेमे कांतिपुरमे अछि । ओतहि हमर सरबेटाक उपनायन छैक । ओहीमे जा रहल छी ।”

“सएह कहू । अहाँसभ बिआह केलहुँ से समाचार आइ भेटि रहल अछि ।”

“आब तँ ई बात बहुत पुरान भए गेल । एकर कोन चर्चा....... ।”

"तथापि.."

"असलमे हमसभ ओहिठामक जीवनसँ तंग भए गेल रही। तकरबाद जे भेलैक से देखिए रहल छी ।" से कहि अंबुज आ दिव्या जोरसँ हँसि दैत अछि ।

थोड़बे कालक बाद दुनूगोटे बिदा भए गेल ।

"एतेक दिनक बाद भेंट भेल अछि । कनीको काल बैसू। चाह-पान कए लिअ । तखन चलि जाएब ।"

"अखन रहए दिअ । लौटतीमे अवश्य अहाँक चाह पिलाक बादे आगु बढ़ब ।" -से कहि दुनूगोटे आगु बढ़ि गेलाह।

३३

हम कैकदिन धरि ओकरसभक बाट तकैत रहलहुँ । मुदा ओसभ नहि आएल । ओकरसभक बाट तकैत-तकैत मोन दुखी भए गेल । आखिर मोनकेँ ओझरेबाक एकटा व्योंत बुझाएल । हमर मकानक हालति बहुत खराप भए गेल छल । कतेको सालसँ एकर मरम्मति नहि भेल रहए? के करबैत? ओ तँ हमरा जिम्मेबारी छल आ हम दोसरे दुनिआमे रमल रही । सोचलहुँ जे सभसँ पहिने एहिकाजकेँ कएल जाए । मकानक मरम्मतिमे लागि गेलहुँ ।

कैकदिनक प्रयासक बाद मकान एकबेर फेर चमकि गेल । ओकर रंगाइ-पोताइ करओलहुँ । आगुमे किछु फूल,किछु फलसभ रोपलहुँ। धात्रीक गाछ ,नेबो, नारियर,आ आम एक पाँतिसँ रोपि देलिऐक । भोर-साँझ ओकरा पानि दैत रहलहुँ । देखिते-देखिते घर आ ओकर आसपासक स्थान जीवंत भए गेल । लगैत छल जेना यथार्थसँ जुड़ल एकटा नूतन दुनिआ मे आबि गेल छी जे विद्यानिकेतनक आभासी दुनिआसँ एकदम फराक अछि ।

रातिमे सुतए काल मोनमे एकटा संतुष्टिक भाव रहए जे एकटा काज भए गेल ,ओहो बिना निआरने। असलमे नियारल काज कैकबेर लटकले रहि जाइत अछि । लोक बेसी सोचए लगैत अछि । ई करब तँ एना होएत,ओना करब तँ आओर नीक होएत । तेँ हम शुरु कए देलिऐक तँ काज भइओ गेलैक । रातिमे चैनसँ सुतल रही।

दूपहर रातिमे सपना शुरु भेल.... ।

सालों पुरान विद्या निकेतन परिसरक प्रसंगसभमे सपना सोहनगर दृश्यसभ उपस्थित केने जाइत छल । हमरो मोन खनहन लागि रहल छल । सपनहिमे चिन्मय,रागिनी,दीपांक,मयंक आ कहि ने के-के अबैत-जाइत रहल । सुंदर भविष्यक फिराकमे यामिनी अमेरिका चलि गेलि ।

अखनहुँ सपनाइते जा रहल छी .... ।

मुदा ई की. देखि रहल छी?

आधुनिकता आ नारी स्वतंत्रता नामपर हमरा लोकनिक सांस्कृतिक धरोहरक प्रतिनिधि परिसरक पुरान देबालसभ ढहि रहल अछि । अपूर्वा ओहि ढहैत देबालपरसँ उत्तेजनामे फानि रहल अछि । देबालक आगुमे असीम, अथाह समुद्र अछि , दूर-दुर धरि कतहु किछु नहि देखा रहल अछि...। तथापि, मुक्तिवोधसँ आवेशित अपूर्वा कहि रहल छलि-

"हम स्वतंत्र छी । हम अपन रस्ता ताकि लेने छी । अहूँ अपन रस्ता ताकि लिअ ।"

से सुनितहि हम चेहा कए उठि गेलहुँ । कतहु किछु नहि देखा रहल छल । सभकिछु बिला गेल छल । सपना समाप्त भए गेल छल । हम पुनश्च स्वयंकेँ वास्तविकताक धरातलपर ठाढ़ देखैत छी आ देखि रहल छी अपन रंगल-ढंगल घर जे भम्म पड़ि रहल अछि, जे ककरो बाट ताकि रहल अछि ।

34

परिसरक आपसी संबंध कोनो व्याख्याक मोहताज नहि छल । केओ कोनो सीमानसँ बान्हल नहि छल । के कतेक दिन ककरा संगे आ कतए रहत तकर कोनो अवरोध नहि छल । एक हिसाबे ओहिठामसभ अबारा भए गेल छल । इहो कहल जा सकैत छल जे ओ सभ एकटा नवीन जीवनपद्धतिक शिल्पकार छल । निश्चय ओ सभ एकटा अपरिचित मार्गपर चलि रहल छल । एहन मार्ग जकर गंतव्यक कोनो ठेकान नहि छल । बस ओ सभ जेना-तेना सभ तरहक बंधनसँ मुक्त भए जेबाक हेतु आतुर छल । एहि प्रयासमे परिसरक कैकटा पीढ़ी लागल रहल । आखिर पुरना देबालसभ ढहल,ढनमनाएल ,खसि गेल । मुदा तकर बाद.....?असंयत,उच्छृंखल,अकल्पनीय झंझावातसँ जुझैत सांस्कृतिक अवशेष मात्र रहि गेल छल........ ।

एक हिसाबे परिसरक कैक पुस्त एकहि लक्ष्यक प्राप्तिमे लागल छल । दीपांक,रागिनी,चिन्मय,मयंक आ कामिनी,हम(श्याम).यामिनी,अपूर्वा ,रमण,अंबुज,दिव्या सभ समय-समयपर परिसरमे अबैत-जाइत यात्री छलहुँ । चारूकात विद्यमान अवरोधकेँ हटा कए हमसभ मुक्तिक हेतु छटपटा रहल छलहुँ । मुदा ककरा हाथ की आएल?सभ अपन अतीतसँ सटल रहि गेल,स्वयं दोसरक स्वतंत्रताक मार्गमे आबि कए ठाढ़े नहि

भेल,ओकरा फेरसँ बान्हि देबाक हेतु ताल ठोकैत रहल । तखन की भए सकैत छल? कतएसँ होइत सुंदर,समृद्ध समाजक संरचना?पुरना देबालसभ ढाहि देल गेल मुदा उच्छृंखलताक माहौलमे सुंदर,सभ्य समाजक निर्माण कतहु होइक,से नहिए भेल ।

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि :

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.
स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847
शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385
न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.
www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।